बरिस - 1 अंक - 4

सिरिजन

www.sirijan.com

तिमाही भोजपुरी ई-पत्रिका

अप्रैल - जून 2019

/bhojpuriaphulwari @sirijanbhojpuri 9801230034

सिरिजन

(तिमाही भोजपुरी ई-पत्रिका)

प्रबंध निदेशक : सतीश कुमार त्रिपाठी

संरक्षक : 1. सुरेश कुमार, (मुम्बई)

2. कन्हैया प्रसाद तिवारी, (बैंगलोर)

प्रधान सम्पादक : सुभाष पाण्डेय

सम्पादक : डॉ अनिल चौबे

बिशिष्ट सम्पादक : बृजभूषण तिवारी

उप सम्पादक : तारकेश्वर राय

कार्यकारी सम्पादक : संजय कुमार मिश्र

सलाहकार सम्पादक : राजीव उपाध्याय

सह-सम्पादक : 1. भावेश

2. दिलीप पाण्डेय

3. माया चौबे

4. डॉ अमरेन्द्र सिंह

5. गणेश नाथ तिवारी

प्रबंध सम्पादक : लव कान्त सिंह

आमंत्रित सम्पादक : चंद्र भूषण यादव

बिदेश प्रतिनिधि : रवि शंकर तिवारी

ब्यूरो चीफ : संजय कुमार ओझा

ब्यूरो चीफ (बिहार) : अमरेन्द्र सिंह

ब्यूरो चीफ (प. बंगाल) : दीपक कुमार सिंह

ब्यूरो चीफ (उत्तर प्रदेश) : 1. राजन द्विवेदी 2. अनुपम तिवारी

ब्यूरो चीफ (झारखण्ड) : राठौर नितान्त

पश्चिम भारत प्रतिनिधि : बिजय शुक्ला

दिल्ली, NCR प्रतिनिधि : 1. बिनोद गिरी

2. राम प्रकाश तिवारी

क़ानूनी सलाहकार : नंदेश्वर मिश्र (अधिवक्ता)

(कुल्हि पद अवैतनिक बाड़न स)

स्वामित्व, प्रकाशक सतीश कुमार त्रिपाठी के ओरी से : 657, छठवीं मंजिल, अग्रवाल मेट्रो हाइट, प्लाट नंबर इ-5 नेताजी सुभाष पैलेस, सेंट्रल वजीरपुर,पीतमपुरा, दिल्ली – 110001, सिरिजन में प्रकाशित रचना लेखक के आपन ह आ ई जरूरी नइखे की सम्पादक के बिचार लेखक के बिचार से मिले। रचना प बिवाद के जिम्मेदारी रचनाकार के रही। कुल्हि बिवादन के निपटारा नई दिल्ली के सक्षम अदालत अउर फ़ोरम में करल जाई।

सिरिजन क झपोली

अनुक्रम

1. संपादकीय
   - मतदान करीं, मत दान करीं - डॉ अनिल चौबे / 4
   - आपन बात / तारकेश्वर राय / 5
2. कनखी
   - अरे ! जब हम अजहर मसुदवा के ना कटनी त तोहके काटब...? - डॉ अनिल चौबे / 10
3. कथा-कहनी /दँतकिस्सा
   - रफथरो - विवेक सिंह / 26
   - आयकर क छापा - ममता सिंह / 33
   - आंगन पीया के - अमन पाण्डेय / 40
   - लालच - दीपक तिवारी / 44
   - टेलीग्राम - रामा शंकर तिवारी / 64
   - बहारन - संजीव कुमार रंजन / 65
   - निष्ठुर नियति - बब्लू सिंह / 68
   - सभ हमही हम - राम प्रकाश तिवारी / 71
   - शिवरतन - प्रीतम पाण्डेय / 73
   - अपनापन - शशिरंजन शुक्ल सेतु / 83
4. कविता
   - फलगर पेड़ - पं.कुबेर नाथ मिश्र'विचित्र' / 8
   - राजा फतेह सिंह के भोजपुरिया माटी - सर्वेश तिवारी श्रीमुख /11
   - मुक्तक - कन्हैया प्रसाद तिवारी "रसिक" /23
   - जवन हाँथ उठि गइल विनय में - संगीत सुभाष /23
   - बहुत सोझ बन के देखनी - संग्राम ओझा "भावेश" /24
   - रउरो मंदिर में शंख बजाई - असलम सागर /24
   - उल्टा पुल्टा - देवेन्द्र कुमार राय /30
   - हद क दिहनि जी - डॉ हरेश्वर राय / 30
   - मातृभाषा - राम प्रसाद साह /31
   - लइका जब बिगरे लागेला - संजीव कुमार त्यागी /31
   - छुट्टी ले के आवल करीं - सुजीत कुमार सिंह / 32
   - हम फक्कड़ पक्का अघोरी हो - रमेश कुमार सुदामा / 32
   - हम हूँ बन जाइ का - संजय सिंह राजपूत / 34
   - हम छोड़ दी - अभियंता सौरभ कुमार / 34
   - लंका में अंगद - आशीष त्रिपाठी / 35
   - जवानी के पलानी भहर रहल बा - दिलीप पैनली / 39
   - गाँव बोलावता - दिलीप पैनली / 39
   - ठाठा के हँसी बेमारी भाग जाई - कवि हृदयानंद बिशाल / 43
   - केकरा पर करीं विश्वास हो, जरिकट्टु - विबेक पाण्डेय / 43
   - जागS जागS हिंदुस्तान - दीपक तिवारी / 52
   - महिला दिवस - अमरेन्द्र कुमार सिंह / 52
   - सुख के जोह में - राजू साहनी / 55
   - अब खाली बात बा - शुभम सिंह / 55
   - नाफ़ा खातिर - गणेश तिवारी "विनायक" / 61
   - माई के बोली - कनक किशोर / 61
   - हमहुँ के येगो जीजा चाहि - जगदीश खेतान / 67
5. गीत / गजल
   - कुछ गजल - डॉ जौहर शफियाबादी / 15
   - हम आदत से मजबूर बानी - दीपक सिंह / 25
   - धरती लिहले त रहला - भालचंद्र त्रिपाठी / 25
   - फाग गीत, फागुन के नवगीत - डॉ रामरक्षा मिश्र "विमल" / 36
   - असो जाए फगुनवा ना बाँव सजना - डॉ रामरक्षा मिश्र "विमल" / 36
   - कंवल कदलीया जस मुखड़ा के ललिया - विमल कुमार राय / 42
   - बुद्ध महोत्स्व गीत - रमाशंकर द्विवेदी "पंकज बिहारी" / 42
   - दुगो भोजपुरी ग़ज़ल - विद्याशंकर विद्यार्थी / 49
   - तनकी गील बाटे बदरा भरकी जाये दS - आनंद संधिदूत / 49
   - तोर गजबे बनल दसतूर जिनगी , अँचरा की कोरे से - माया शर्मा / 70
   - रजऊ लड़िकाई - मंजू श्री / 70
6. पुरुखन के कोठार से
   - राधा मोहन चौबे "अंजन" जी कविता / 16
7. नाटक / एकांकी
   - परवरिश - विद्या शंकर विद्यार्थी / 56
8. आलेख/निबंध
   - हास्यावतार पं.कुबेर नाथ मिश्र'विचित्र' - संजय मिश्र "संजय" / 14
   - लोक जीवन आ नारी - सर्वेश तिवारी / 37
   - आतंकवाद से दु दु हाँथ - तारकेश्वर राय / 50
   - आपन भोजपुरी - संजीव कुमार त्यागी / 53
   - होरहा - समीर कुमार राय / 62
   - दबाब में भोजपुरी - राजीव उपाध्याय / 66
   - तनि भीड़ से आगे सोंच के देखी - त्रिपुरारी पांडेय /75
   - योग आउर योगी-3 - योग गुरु शशि / 78
9. पुस्तक समीक्षा
   - सतवादी हरीशचंद - आनंद संधिदूत / 46
10. सबद कौतुक
    - जूता के सुख - दिनेश पाण्डेय /17
11. पाठक का कोना - राउर बात / 84
12. कलमकार से गोहार / 85
13. सतमेझरा - 86
14. श्रद्धांजलि
    - कुबेर नाथ मिश्र "बिचित्र" - संगीत सुभाष /7
    - अनिरुद्ध जी - तारकेश्वर राय / 9

मतदान करीं, मत दान करीं

सनातन परम्परा में चइत के अँजोरिया से नया साल के सुरुआत होला। प्रकृति नया नया पल्लो पहिन के नवकी दुलहिन की तरे मुस्काये लागेले। खेतन में गदराइल फसल, धीरे- धीरे पाकि के खरिहान की ओरी मुँह क के लटके लागेला। बिहाने- बिहाने चिरई चुरुंग अनयासो चहचहाइल सुरु क देलन। पुरुआ जब महुआ के मादक गन्ध ले झिहिर झिहिर बहेले त नीक नीक योगी जती अलसाये लागेलन। तब्बो भोजपुरिया गिरहस्थ आ उनकर मलकिन नमी के पूजहाई अउर कराही चढ़ावे के जोगाड़ के चिंतन में लागल रहेले। एकरा बाद सुरु होला नया साल हमनी के, त रउआ सभे के भी आवे वाला नवकी साल के पुरहर शुभकामना।

"सिरिजन" के जवना जोश खरोश से भोजपुरिया समाज अपनावल आ आपन स्नेह दिहल ई सब देख- सुनि के मन धधायिल बा। हिन्दी बोलला पर कान्वेंट में विद्यार्थी लोग के सजा दियात बा। ए जुग में भोजपुरी बोले आ लिखेवाला लोग के दिन पर दिन बढ़न्ती से मन त अगरइबे नू करी जी। कवनो भाषा जब कमजोरी अनुभव करे लागेले त लोक भाषा से खाद पानी लेके अपना के फेरु से जीवित करे के जोगाड़ क लेले। इहे लोकभाषा के आपन बल ह। एगो नया चिन्ता ई बा कि भोजपुरी में सुर लय के प्रवाह से ह्रस्व, दीर्घ अउर प्लुत स्वर व्यंजन के मौखिक रूप से निर्वाह त हो जाला लेकिन लिखला अउर बाँचला में असली स्वाद ना मिल पावे। एकरा खातिर भी भाषाविद सभे विचार करीं। अबे भोजपुरी में मानवीकरण आ गद्य के तमाम विधा पर भी बहुत कुछ लिखल जरूरी बा। निहोरा बा, भोजपुरी लिखीं, खूब पढ़ीं तब खांटी रस मिली।

पुलवामा आतंकी हमला से पूरा देश दुःखी बा। सिरिजन परिवार की तरफ से अमर शहीदन के डबडबाइल आँखिन से श्रधांजलि। लोक भाषा के लोकप्रिय कवि श्री कुबेरनाथ मिश्र जी जे जनमानस के अपनी सरस कविताई से हँसावत रहनीं, उहाँ के भी नश्वर शरीर त्यागि के बैकुंठलोकवासी हो गइनीं। ए दुःख में सिरिजन ऊहाँ के पूरा परिवार के साथे बा।

अन्त में, रउआ सभे से निवेदन बा लोकतंत्र के महान पर्व चुनाव कपार पर आ गइल बा। विकसित समाज खातिर, समृद्ध देश खातिर, जरूर मतदान करीं।

मत दान करीं। वोट देवे जरूर जाईं। राउर एगो वोट बहुत कीमती बा।

1875 में फ्रांस में मात्र एगो वोट से राजतंत्र खतम भइल रहे आ गणतंत्र के स्थापना भइल।

1776 में अमेरिका में एगो वोट जियादा मिलला से जर्मन भाषा के जगह पर अंग्रेज़ी राजभाषा बनल।

1998 में वाजपेयी सरकार एके गो वोट से गिर गइल रहे।

2008 में राजस्थान की नाथद्वारा सीट से सी.पी.जोशी एगो वोट से चुनाव हार गइल रहलें आ मजदार बात ई बा कि उनकी मेहरारू के वोट डाले के टाइम ना मिलल रहे । त बा नू रउरी एगो वोट के कीमत.....?

रउरे

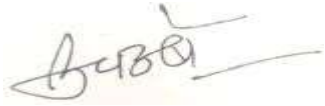

(डॉ अनिल चौबे)
सम्पादक "सिरिजन"

आपन बात

आतंकवाद क भयद चेहरा एकबेर फेरु लउकल बिगत 14 फरवरी, 2019 के जम्मू-कश्मीर के पुलवामा में, जब सड़क मार्ग से गुजरत अर्धसैनिक बल के काफिला पर फिदायिन हमला भइल । हमला एतना जोरदार रहे कि जवानन क गाड़ी आ देह दुनो टुकी टुकी हो के छिटा गइल । पलकन में 40 से अधिका जवान काल के गाल में समा गइलें आ बहुते गम्हिराह घवाहिलो भइलें। मृत्यु क सिलसिला आजो ले जारी बा । घरे के दीया से केतने घर तबाह हो गइल । एह घटना के अंजाम देवे के बेहयाई भरल जिम्मेदारी लिहलस हमनीके पड़ोसी देश के सरजमीं प पनपत पोसात एगो आतंकी संगठन जैशे मोहम्मद । एह हमला से समूचे देश मे खुनुस के लुकारी लागि गइल आ बदला लेवे के भावना से सारा देश खउले लागल । सरकार प एह कायराना हमला के बदला लेवे के दबाव बढ़ि गइल । भारते ना, सारी दुनियाँ के देश निहोरा कइलें कि हेह घिनावन आतंकी संगठन पर कठोर कारवाई होखे बाकिर हमनीके पड़ोसी मुलुक जुबानी जमा ख़र्च के सिवा कुछो ना कइलस, करबो करे त कइसे? आखिर ई बिखबेलि ओकरे त रोपल ह। तंग आके भारतीय लड़ाकू जहाज नियंत्रण रेखा के पार जाके आतंकी ठिकाना के तहस-नहस कइके चन्द मिनट में सकुशल वापस लौट अइले। सच्चाई इहे बा कि सीमा पार के सहेजल आतंक के स्रोत के खतम कइले बेगर आतंकवाद पर अँकुसा लगावल मोसकिल बा । एह हमला से तिलमिलाइल हमनीके पड़ोसी देश भारतीय सैनिक ठिकानन प हवाई हमला कइलस, जेकर मुँहतोर जबाब मिलल आ सेना दुश्मन के जहाज के मार गिरवलस, जबाबी कारवाई में भारत के एगो बिमान से हाथ धोवे के परल आ आपन जान बचावे खातिर पायलट के पैराशूट ले के कूदे के परल। दुर्भाग्य से भारतीय पायलट 'अभिनंदन' पाकिस्तान के कब्जा वाला इलाका में गिरले । भारत समेत दुनियाँ के लगभग सभ प्रमुख देशन के कूटनीतिक दबाब का चलते पाकिस्तान के जेनेवा समझौता के तहत 'अभिनंदन' के सकुशल वापस लौटावे परल। बिपरीत हालात के बावजूद अभिनन्दन के बुलंद हौसला में कवनो तरे के कमी ना लउकल। आपन बीर-बाँकुरा के रिहाई पर समूचे देश में खुशी के लहर दउरि गइल । शत्रु-सीमा के भीतर घुसि के कइल गइल कार्रवाई से दुनियाँ के ई सनेस देवे में भारत के कामयाबी मिलल कि अगर हमनीके देश पर कौनो तरे के बहरिया खुटचालि भइल त सीमा पार के खडयंत्र के अड्डा तबाह करे में कवनों तरे के सकोच ना होई। पहिले नियन निरर्थक वार्ता के औपचारिकता, सबूतपेशी, कार्रवाई के निहोरा कइल कुछ असर ना होइला पर मन मसोस के रहि गइल, भारत बदे अब अतीत के बात ह। ई नवका भारत ह आ एकर सनेस साफ बा कि आतंकवाद के खत्म करे खातिर उ कवनो हद तक जाए में परहेज आ कोताही ना करी ।

'सिरिजन' के ई तिमाही (अप्रैल-जून) अंक कई चीज के लेके खास बा। अप्रैल से वित्तीय बरिस क शुरुवात होला आ शिक्षो के क्षेत्र में नवका सत्र आरंभ होला। एहबेर आम चुनाव 2019 के बिगुल बाजि गइल बा, उहो होखी एहि तिमाही में। हमनीके देश एगो लोकतांत्रिक देश ह जहवाँ जनता क शासन चलेला । ओइसे त लोकतान्त्रिक बेवस्था के तहत ढेर अधिकार मिलल बा, जेमा से एगो अधिकार बा मत (वोट) देवे क अधिकार, जवन कुल्हिये अधिकारन से बड़ मानल जाला । कोटिक अदिमी के जिनिगी में सकारात्मक बदलाव लियावे बदे निष्पक्ष मतदान सबसे प्रभावी उपकरण ह..... ।

समय क वेग कहाँ रुके वाला बा ऊ त नदी के धार नियन पल-पल बहत आगे ओरि बढ़ते रहेला । वर्तमान चइत माह हमनी के हिंदी पंचांग के हिसाब से बरिस के पहिलका महीना मानल जाला । इहे ऊ चइत ह जेमा लोक कहाउति के अनुसार 'आम-आदमी-केरा' तीनो बउरा जालन । पतझर के बाद के बसंती बयार जब देह के छुवत पलिहर खेतन से होके आगे ओरि बढ़ेले त अइसन लागेला कि आदमी के रूप में जनम लेहल सुफल हो गइल । मौसम में झनक बढ़े लागेला आ खेतन में रबी के फसल पाक के झाँझर नियन बाजे लागेला। रहिला, मसूरी, सरसो आ नावा नावा गदरल गहूँ पाक के सोनहुला हो गइल रहेला । चइत के बदलाव के ऋतू के रूप में जानल जाला। महुवा से आपन सौंदर्य के भार ना सहाला, ऊ पसीज के चू पड़ेला, आम के टिकोरा अपना भीतर सिरिजन के ताप महसूस करे

लागेला । लोकमानस फागुन क चुहलबाजी छोड़ के गंभीरता क ओर डगरि जाला, समाजिक अनुशासन अपना जगह प लवटि आवेला । अब तक सुहुतात आम में टिकोरा फूटि जाले, कोइलि अबहीं आम के शाख प बइठल छोड़ली ना तबले सुग्गा क झुण्ड टिकोरा पर आपन ठोर मारे खातिर उतावला दिखे लागे लागल। गाँव क बूढ़ से लेके नवहा ले, खर-खरिहान जहवाँ ले, बस अतने धियान बा कि हँसुवा गतार के हाली-हाली पँजावल जाव ताकि पाँजा क पाँजा बाल हाली हाली कटा सके । खेतिहर लोग, खेतन के साथे खरिहानन में ढेर लउके लागेला । सुन भइल खरिहान लीपा पोता के चिक्कन आ मनसाइन हो जाला । चइत त अइसन महीना ह जब खेतिहर आ मजूरन के आपन सपना अन्न के रूप में साकार होत नजर आवेला । एही महीना में प्रकृति के मनभावन रूप आ पाकल अनाज के राशि के देखिके लोकमन जवन गीत गावेला ओके चइता के नाँव से जानल जाला । अपना जवार में चइता गावे के पुरनकी परम्परा नइखे ढेर लउकत लेकिन आजो कुछ लोग ए के जिया के राखे में बाझल लउकेलें । चइत अपना साथे ख़ाली बिख बरसावे वाली तपिश ही लेके ना आवे,खेतिहर के करेजा खातिर शीतल छाँह भी लेके आवेला । जब सपना सोझा सकार होत नजर आवेला तब खेतिहर के सुरुज देव के ताप भी चनरमा के अँजोरिया नियन शीतल बुझाला । प्रकृति के ई मनभावन रूप प देवी देवता भी लोभा जालन । एह धरती प पाप के समूल नाश करे खातिर रामजी के अवतार एही महीना में भइल रहे । जेकरा के लोक समाज राम नवमी के रूप में मनावेला । कहीं राम के जनमला के सोहर सुनाला त कहीं देवी माई आपन देवी देवता वाला सुभाव के छोड़ि के मालिन के घरे पानी पिए के मोह में ओकरा बालक के अपना कोरा में लेके आशीर्वाद देवे के लोभ ना छोड़ पावेली । रामजी क जनम के उछाह बा एह महीना में त महाबीर जी के अवतारो के कहानी बा ।

भोजपुरिया समाज बदलत मौसम के मिजाज से तालमेल बइठावे ख़ातिर पहिनावा के साथे साथ आपन खान पान के भी बदल लेला । धरती माई के सीना फार के उपजल रहिला, जौ, मकई जइसन अनाजन के भुज के, पिस के सतुआ बनावे में बाझल लउकेला मातृशक्ति लोग । सतुवान क परब एही महीना में मनावेला भोजपुरिया समाज । आम के टिकोरा के चटनी के साथ सतुवा खाये के रिवाज ह एह परब में । सतुवा सुरूज देव के बिख नियन घाम से जरत देह के शीतल राखे में अहम किरदार निभावेला । बैशाख आ जेठ के महीना में सुरुज देव क घाम, बिख नीयन बुझाला, चिड़िया चुरुंग से ले के पोश परानी तक गरमी के कारण परेशान हो जालन, ठंढक भेटाला त बारिये बगइचा में, बर के फेड़ क नीचे दुपहरिया में बैठकी लागल शुरू हो जाला । इहे ऊ समय ह जब खेतिहर के लगे खेती बारी के काम से तनी फुरसत मिल जाला । बियाह शादी जइसन मंगलकाम के शुरुवात हो जाला । श्रीफल (बेल) जइसन फल एही मौसम में भेटाला जेकर सेवन से गरमी से राहत मिलेला । एक ओर गरमी परेशान करेले त आम, जामुन, खीरा, तरबूज, ककड़ी, खरबूजा जइसन बिसेस फल क आनन्द के भी इहे मौसम ह। नीमन जिनिगी के चाहत में ढेर संसाधन जुटावे के मोह में धउरत हमनीके भोजपुरिया समाज देश के सीमा के बहरा बिदेश ले चहुँप गइल बा बाकिर आजु के चिन्ता बा अपना जर से कटला के, परम्परा के मिटला के, नाम के दौर में काम के खुमारी में डूबल भुलात आपन रिश्ता नाता के ।

जब आपन परम्परा, रीति रिवाज, लोकसंस्कृति आ आपन लोकजीवन अइसहीं ढहत ढिमलात रही त मन के कुल्हिये मिठास माहुर नियन लगबे करी । अपना मान मरजादा के साथे साथ अपना लोक रीति, लोक परम्परा के जोगावत रहे के निहोरा करत देश भक्ति के भावना में लपेटाइल 'सिरिजन' के ई अंक रवुवा सभे के जरूर पसन पड़ी । एहि भरोसा के साथ.....|

राऊर आपन,

तारकेश्वर राय

(तारकेश्वर राय)

भोजपुरी काव्य के हास्यावतार पं.कुबेर नाथ मिश्र 'विचित्र' के #जयभोजपुरीजय_भोजपुरिया परिवार आ #सिरिजन(भोजपुरी तिमाही ई पत्रिका) की ओर से सादर श्रद्धांजलि....

पं. कुबेरनाथ मिश्र 'विचित्र' जी के जनम देवरिया जिला के भाटपार रानी कस्बा से लागल गाँव भिंडा मिश्र में सन् १९३५ में एगो धार्मिक गिरहस्थ शाकद्वीपीय ब्राह्मण परिवार में भइल। जिनिगी भर पढ़त- लिखत एम.ए.,बी.एड., साहित्य रत्न के उपाधि पवनीं। बाबा राघव दास कृषक कालेज, भाटपार रानी में सेवानिवृत्ति ले मास्टरी कइनीं। कविता के रोग लरिकाइएँ से रहे, जवन जिनिगी भर पीछा ना छोड़लस आ ऊहे उहाँके जिनिगी के कमाई रहल। भोजपुरी क्षेत्र में साइते कवनो सम्मेलन होई जवन विचित्र जी बिना पूरा भइल होई। अपना विचित्र भेष-भूषा आ सहज सपाट बोली से एगो अलगे पहिचान रहे उहाँके।पं.श्यामनारायण पांडेय,पं.धरीक्षण मिसिर, पांडेय आशुतोष,हरे राम द्विवेदी,रामजी सिंह मुखिया,अंजन जी, गिरिधर अरूण, पांडेय कपिल, सूंड़ फैजाबादी से लेके आजु के नामी गिरामी कवि ले केहू उहाँ के संघत से बाँचल न्इखे। लगभग २६ गो किताब प्रकाशित बा उहाँके। संस्कृत के कतने किताबन के भोजपुरी अनुवादो कइले बानीं। ठेठ भोजपुरी हास्यकवि के रूप में भोजपुरिया समाज में जवन साठ बरिस ले ख्याति आ सम्मान बाबा का मिलल ऊ कवनो कवि के सपना हो सकेला। सोझ तुकबंदी का साथे साथे छंद विधान के भी पुरहर ज्ञान रहे, जवन उहाँ के रचनन में झलकेला। तनी देखल जाउ...

कानन कुण्डल सोन सुशोभित,पद्मपराग उड़ावति शारदे।
श्वेत सुअम्बर कुंदन हार उभय कर बीन बजावति शारदे।।
वेद पढावति बालन के बल बुद्धि 'विचित्र' बढावति शारदे।
देर 'कुबेर' की बेर लगावति काहें न धावति आवति शारदे।।

विचित्र जी के गइला का साथे भोजपुरी काव्य के एगो परम्परा के अवसान भइल बा। भोजपुरी के निस्वार्थ भाव से सेवा करेवाला एह 'विचित्र' कवि के इयाद आ चर्चा तबले रही जबले भोजपुरी पढ़ल आ बोलल जाई।
जय भोजपुरी जय भोजपुरिया परिवार आ #सिरिजन पत्रिका अपना एह लाल के लोर भरल नयन से सादर श्रद्धांजलि अर्पित कइलसि। उहाँ की श्रद्धांजलि सभा में जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया परिवार का तरफ से वरिष्ठकवि, मंचसंचालक आ #सिरिजन के #कार्यकारी_सम्पादक Sanjay Mishra Sanjay जी श्रद्धासुमन अर्पित कइनीं।

✍ ***संगीत सुभाष***

मुसहरी, गोपालगंज ।जय भोजपुरी- जय भोजपुरिया

फलगर पेड़

(कुबेर कविताई से साभार)

फलगर पेड़ लगइबऽ बबुआ तबे मधुर फल खइबऽ।
बबुर कँटहवा लगा लगा के गोड़न में धँसवइबऽ ?
एक पेड़ दस पूत समाना कहलें बेद-बेयासा,
तवनों पर ना आम लगवल खा बबुरे के लासा।।

फलगर पेड़ रोपि फल खइब बहुत सवाद बुझाई,
लोक बनी परलोक बनाई सात पुश्त तरि जाई।
जइसे संत सहे दुःख अपने सबके सुख पहुँचावे,
तइसे पेड़ घाम अपने सहि सबके छाँह करावे ।।

बेद पुरान शास्त्र, श्रुति गावें एकर निर्मल गाथा,
दुष्ट लोक टांगी से काटे हरा पेड़ के माथा ।
एकरी एतना सहनशक्ति अदिमी में कब आ पाई,
सपा बसप्पा जद इंकाई चाहे हो भाजपाई ।।

लाठी डंटा ढेला से ई कतनो आम पिटाला,
तब्बो ना रिसियाला फलवे भहर भहर भहराला ।
कथा बियाह जनेव पर्व पर एकर पात तुराला,
सुखल लकड़ी लवना देला गतर गतर सधि जाला ।।

माल मवेशी पेड़न के पतई खा के मकनाले,
ना पावेलें तब दुबरालें खा के खूब मोटालें ।
शुद्ध दवा आ हवा देइके बरसावेलें पानी,
माटी के कटान रोकेलें केतना कहीं कहानी ।।

कवि कुबेर कइ बेर जनमिहें गुन नाहीं गा पइहें।
जियते लकड़ी मुअते लकड़ी कहिके माथ नवइहें।।
फलगर पेड़ लगइब भइया तबे मधुर फल खइबऽ,
बबुर कँटहवा लगा लगा के गोड़न में धँसवइबऽ।

अपने सहेलें घाम दूसरे के छाँह देलें,
फरि के लदरि जालें दूसरे के खातिर।
सज्जने के सगरी लछन हवे पेड़वा के,
पेड़वा जनम लेलें दूसरे के खातिर ।।

केहूके रोपल पेड़ तोहरा जो मिली जा त,
मन चित लाइ ओके पटवे के चाहीं ।
पेड़ की पटवला से ढेर फल मिले भाई,
कहेले 'कुबेर' एमे मीन मेख नाहीं ।।

दस गो इनार खोंनववला के फल मिले,
एक ही गो पोखरा खोंनववला के एतना।
दस दस पोखरा खोंनववला के फल मिले,
एक ही गो झील बनववला के एतना।।

दस दस झील बनववला के फल मिले,
एक ही सपूत जनमवला के एतना।
दस गो सपूत जनमवला के फल मिले,
एक ही गो पेड़वा लगवला के एतना।।

फलगर पेड़ लगइब भइया तबे मधुर फल खइबऽ,
बबुर कँटहवा लगा लगा के गोड़न में धँसवइब ?
फलगर पेड़ रोपि फल खइब बहुत सवाद बुझाई,
लोक बनी, परलोक बनाई, सात पुश्त तरि जाई।।

✍**पं. कुबेरनाथ मिश्र 'विचित्र'**

(गवईं-गांव के माटी में सनाइल लुकाइल केतने माई सुरसती के सेवक बाड़ें जे पर समाज के नजरे ना पड़ल, ऊ लुकाइल भुलाइल रह गइलें आपन सगरी जिनिगी । कविवर पंडित कुबेरनाथ मिश्र 'विचित्र' अइसने एगो गुदरी के लाल भोजपुरी माई के अनन्य सेवक रहले। इ सचहूँ के कविता के कुबेर रहलन। इनकर कुल्हिये रचना भोजपुरिया साहित्यप्रेमी के सोझा आवो एकरा खातिर टीम 'सिरिजन' प्रयासरत बा ।)

अनिरुद्ध जी के विनम श्रद्धांजलि..... ✍तारकेश्वर राय

समय क आगे के ओर बढ़त चक्र अपना साथे संसार के कुल्हिये जीव के आयु के कम करत चल जाता जइसे गर्मी में सूरज के बिख नियन घाम क ताप पाइ के पानी भाप बनि के उड़ जाला । फल पाक जाई त ओकर टूट के गिरल निश्चित बा । जइसे बरियार खम्भा वाला मकान के भी समय कमजोर बना देला ऊ ढह ढिमला जाला ओहि तरह जन्म लेवे वाला क मृत्यु त निश्चिते बा । ई समय भोजपुरी के बिद्वानन के यह दुनिया से कूच करे वाला समय बा। कुछ समय के अन्तर पर बिचित्र जी आ अब अनिरुद्ध जी । 91 बरिस के पुरहर उमिर के जियला के बाद अनिरुद्ध जी ७ मार्च २०१९ के परलोक वासी भइनी । उनकरा ना रहला से भोजपुरी के प्रकाश फइलावे वाला एगो दिया बुता गइल जेकरा से भोजपुरी साहित्य अँजोर होत रहल ह |

भोजपुरी आपन एगो बढ़ साधक अउरी सेवक के हेरवा देहलस । ऊहाँ के रचल गीतन के तीन गो किताब प्रकाशित बा----

(1)पनिहारिन, प्रथम प्रकाशन-1989,सरोज प्रकाशन,5,टैगोर हिल्स रोड, राँची

(2)कृष्ण बाल-लीला आ दोहावली, वनांचल प्रकाशन, तेनुघाट साहित्य परिषद्, तेनुघाट-1

(3)गीतन के गाँव में, वनांचल प्रकाशन, तेनुघाट साहित्य परिषद्, तेनुघाट-1

अनिरुद्ध जी के जनम सारण जिला के डीही नांव के ग़ाँव में भइल रहे । ऊहाँ के बाबू स्व जगदेव सहाय जी उर्दू-फारसी के विद्वान रहीं।ऊहाँ के पढ़ाई लिखाई राजपूत हाई स्कूल आ राजेन्द्र कॉलेज छपरा में भइल रहे । ऊहाँ के शुरू में बेसिक स्कूल में अध्यापन कार्य कइले रहीं अउरी पदोन्नति पाई के प्रधानाध्यापक के पद से अवकाश ग्रहण कइलीं। ऊहाँ के खाली बिहार ना बिहार के बहरा उत्तर प्रदेश, बंगाल, मध्य प्रदेश आदि राज्यन में कवि गोष्ठियन के जान रहनी, ऊहाँ के उपस्थिति कवि गोस्टी के मनभावन आ रोचक बना देव ।

ऊहाँ के रचना के बानगी देखीं :

बाग-बाग वन-वन बगियन, बसंत आ गइल।
तरु-तरु रँग-रँग नव रेशम पट पहिरा गइल।
किरन के सितार पर भैरवी बजा गइल।
गंधी तन-तन परान बन-बन महकावत बा।
बिहग-बृन्द बन्दीगण चहकत गुन गावत बा।
लग जाई हिया बिरिछ बँहिया फइला गइल।
बसंत आ गइल।।

अनिरूद्ध जी के रचना में प्रकृति के मनभावन रूप के वर्णन ढेर देखे के मिलेला ।अद्भुत गीतकार रहीं । ऊहाँ के मृत्यु से भोजपुरिया साहित्य के अपूरणीय क्षति भइल बा । अनिरुद्ध जी जइसन प्रतिभा के गीतकार कबो कबो पैदा होला । सिरिजन अउरी जय भोजपुरी जय भोजपुरिया परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि बा।

अरे ! जब हम अजहर मसुदवा के ना कटनी त तोहके काटब...?

हम मच्छर हईं। ह जी बस रउआ जवन समझत बानी उहे मच्छर। जब केहू लेखक कवि हमरा पर कुछ लिखे के हिम्मत ना जुटावल त झकमार के भनभनाइल छोडि के हम खुदे गुडनाइट जरा के अपना विषय में लिखे बइठ गइल बानी। हम मच्छर हईं बाकि चहितीं त अपनी एह रचना के कवनो लोकल टाइप के विदवान से समीक्षा करवा के भी छपवा सकत रहनी ह। लेकिन एसे हमार मौलिक विरचित रचना के छीछालेदर हो जाइत, त हम रिस्क ना लेवे में ही रचना के भलाई समझनी ह। त मूल रचना बिना काट छाँट के रउरी सोझा बा। हम कब से ए धराधाम पर सशरीर अवतरित होके भनभन कर रहल बानी ईस्वी सन ठीक ठाक हमरा भा हमरा पूर्वज लोग का इयाद नइखे। हमनी के धरती पर आगमन खोजबीन के विषय बा। बुद्धजीवी लोग की तरे हमहूँ परजीवी टाइप के जीव हईं। लेकिन हमरा मच्छर बिरादरी में कवनो धरम, सम्प्रदाय, ऊँच, नीच के भेद भाव नइखे। सभे के सभे मच्छर ह अउर भभीस में रही। हमनी के क से कीचड़ ख से खादर ग से गोबर भले ईमानदार आदमी के स्वदेशी खून चूसिले। ह कबो कबो बेटी के बिआह में बेटहा के दहेज में दो चार लीटर खून देवे के होला त सेठ साहूकार के भी मजबूरी में चूसे के पड़ेला। हमनी के चरित्तर आ आत्मबल त उदाहरण देवे लायक बा। आ सुनी मच्छरन में एगो पैदायशी गुण होला । मच्छर ना त बलात्कार करेले ना आत्महत्या।

अब रउरा लोग से कह रहल बानी हमार कसम केहू से कहब मति । एक दिन देश परेम जागल त मन त कइलस कि पूरा परिवार की साथे चलि के आतंकवादी अजहर मसुदवा के देह के सारा खून चूस लिहल जाव। लेकिन तले फिलिम के हऊ डाइलाक इयाद आ गइल - कि एगो मच्छर साला आदमी के हिजडा बना देला। अब हम वो पपिया के काट लेतीं आ खुदा न खास्ता कुछवो अइसन वइसन हो जाइत, त अपना देश के नेता, बुद्धिजीवी लोग के कवन मुँह देखइतीं। जे याकूब खातिर दू बजे राति के कोर्ट खोलवा सकता, एतने जानिले जा, बाकी करिया अच्छर भइसिये बराबर तब्बो कवनो धरम गुरु के फुसिलवला में ना आइलेजां। हमार एके गो काम खून चूसल। ई कला हमनी के खानदानी रूप से विरासत में मिलल बा जवन कि अब धीरे धीरे देश के सभे अपना लिहल। एहीसे अब नेता आ बुद्धजीवी के काटे में घिन्न बरता। जानत बानी काहे कई गो बुद्धिजीवी के खून चूसला के बाद हमरो कुछ परजीवी मच्छर भाई भतीजा इंफेक्सनिया गइल बाड़े। अपना के बुद्धजीवी समझे लागल बाड़े सन। लेकिन इहो बात बा एतना इंफेक्सनियइला के बादो हमनी के आदमी से बहुत नीक बानी जा। काहे कि आज ले कवनो मच्छर, दुसरा मच्छर के खून ना पियेला । मच्छर पक्का समाजवादी होलें। खानदान की परम्परा के अनुसार अमीर गरीब सरकारी व्यापारी सभकर खून समान भाव से चूसेलें। राष्ट्रभक्त एतना कि जवना देश की हवा में साँस लेनी जा वोही देश की जनता की ताली की बीच आके प्राण भले गवा दी जा लेकिन देश छोड के विदेश जाये के कबो ना सोचनी जा| ईमानदारी से पुरस्कार लौटा सकता ऊ लोग हमार कवन गत करित । ये लोग के बेतुका सवाल के उत्तर खातिर हमरा देश भर के बुद्धजीवी मच्छरन के जुटान करे के परित। टीवी चैनल पर ई रोवल सुरु क देते सन जइसे कि सगा जीजा जी दाँत चिदोर के नरक गामी हो गइल होखस। सुनी रउरा सभे के कान में भनभना के हमनी के आज से कसम खात बानी जा कि आज के बाद कवनो नेता आतंकवादी भा बुद्धजीवी के खून चूसला के कल्पना भी सपनो में ना करब जा। अरे जब हम अजहर मसुदवा के ना कटनी त तोहके काटब? चल हट बुद्धजीवी कहींके.....!

✍डॉ अनिल चौबे, सम्पादक "सिरिजन"

राजा फतेह सिह के भोजपुरिया माटी

मोथा राड़ा खर बाँस आ नरकट पतहर मूँज.....
खन खन खन खन खनन खनन खन तलवारन के गूँज।

सूर्य के तेज, आगि के लहक, धूप के दहक,
चान के जोत, इंद्र के बज्र, राम के धनुष,
शिव के शूल, कमल के फूल, जेठ के धाह,
नदी के थाह, पेंड के छाँह मरद के छाती ह।
छाती के बल से रचे जवन इतिहास कि राजा
फतेह सिंह के ऊ भोजपुरिया माटी ह।

माटी जब जोतल जाले त सोना उपजावे,
माटी जब पीठी लागे त कायर कहलावे।
माटी जब छाती से लिपटे तब भविष्य पढेले,
माटी जब चढ़े लिलारे तब इतिहास गढेले।।

सत्रह सौ चौसठ साल रहे दुर्दिन के बेरा,
भारत के चारु ओर कसल अंग्रेजी घेरा।
बक्सर के रण जीत फिरंगी ताव में आइल
सरजू के जरी ले सोगहक राज भेंटाइल।।

चसकल अंग्रेज क्लाइब आपन डेग बढवलस,
टेक्स वसूले हुसेपुर में खेमा गड़ववलस।
लेकिन भोजपुरिया माटी केकर भाव सहेले,
गण्डक-सरजू के पानी अपने ताव बहेले।।

गरजल एगो सरदार आ धरती करवट मारल,
हारल होइहें कासिम-दौला हम नइखीं हारल।
अउर हवा में चमक के गरजल भोजपुरिया तलवार,
केकर लाल वसुलिहें कर जब धरती हवे हमार?

ई धरती हवे हमार, अब एहिके हमहीं तारब,
जिन लिहें उनहूँ के मारब, जिन दिहें उनहूँ के मारब।

जबले बा रग में रक्त गर्व धरती माई के मुई ना,
कर त बड़का चीज फिरंगी पतई एगो छुई ना।
ई तेवर हवे बपौती कवनो पईंच-उधारी माँगल ना,
चिटुकी भर गइल अनाज त फते एक बाप के जामल ना...

ई गर्व रहे दीया के अपना बाती पर,
ई गर्व रहे माटी के अपना माटी पर,
माटी के राजा फतेह बहादुर शाही के
ई गर्व रहे अपना भोजपुरिया छाती पर।

बस ढाई सौ के सेना बीर जवानन के,
धरती माई के मरदाना संतानन के,
जेकरा खातिर बस मातृभूमिए प्रिय रहे
ओ आजादी के सबसे बूढ़ दीवानन के।

ऊ सरजू मइया के जल के हलकोर रहे,
गण्डक के लहर लहर के ऊ ललकार रहे।
भारत के धरती पर अंग्रेजन के विरुद्ध
ऊ आजादी के पहिल पहिल हुंकार रहे।

हुंकार भी अइसन कि जइसे अम्बर गरजे,
गरजस फते तस बागजोगनी जंगल मे,
जइसे मारेला शेर झपट्टा मौका पर,
छापा मारस ऊ स्वाभिमान के दंगल में।

बस तीन महीना में सगरी खेमा टूटल,
आ टूटल सगरी शान फिरंगी टोली के,
जब मीरगंज में मीर-जमाल के माथ कटल
तब ताव बुझाइल फतेह सिंह के बोली के।

बकिया अगिला पन्ना पर .....

अब अंग्रेजन के सारा चौकी बन्द भइल,
अब टेक्स वसूले एक करिन्दा ना आवे।
धरती अपना सम्मान के ठेका लिख दिहलस
महाराजा फतेह बहादुर शाही के नावे।।

लेकिन अंग्रेजी सत्ता हार कहाँ माने,
ऊ खोजलस उल्टा दाव ए घोर लड़ाई के,
देहलस हेस्टिंगस टेक्स वसूले के जिम्मा,
फतेह बहादुर के पीतिआउत भाई के।।

राजा के सोझा धरम के संकट आ चहुँपल,
ई सबसे दुविधा के क्षण रहे लड़ाई के।
अब एक ओर धरती माई के शान रहे,
आ एक ओर मस्तक अपने ही भाई के।

लेकिन जे संकट से काँपे ऊ वीर कवन,
जोद्धा त बीच भँवर में खेल देखावेला।
जे धरती माई के महतारी माने ऊ,
कबो कबो ईश्वर के ज्ञान सिखावेला।।

तब छापा पड़ल बसन्त देव के कोठी पर,
जइसे उनके छाती पर गेंहुअन साँप गइल।
जंगल मे भाई से भाई के आँख मिलल
त कुछ छन खातिर धरती अम्बर कांप गइल।।

कहले बसन्त का भइया हमरो माथ कटी?
का इहे हवे मर्यादा बड़का भाई के?
भाई के हत्या करबs बड़ कहाये ला,
एतना बा तहरा भूक ए मान- बड़ाई के?

तब फतेह सिंघ के काठ करेजा काँप गइल,
बहि चलल लोर दुनू आँखी के कोना से।
भाई कइसनको होखे त भाई होला,
ए नेह के मोल ना लागी चानी-सोना से।।

कहलें फत्ते सुन बाबू जुद्ध माटी के ह,
ई तोर-मोर पुश्तैनी झगड़ा ना ह रे...
धरती के स्वाभिमान दाव पर लागल बा
एकरा आगे कवनो भयवधि का ह रे?

ना ले के कुछऊ अइनी ना ले के जाएब,
बस सपना बा ई धरती माई अमर रहो।
बनल रहो ई धरम आ भारत बनल रहो,
दुनिया मे एकर मान बड़ाई अमर रहो।।

तोहरा के मारेब त कुलघाती लोग कही,
पुरखा पितर से मरलो पर मिल पाएब ना।
धरती माई के खातिर बाकिर बीस बेर,
भाई के गरदन काटे में घबड़ाएब ना।

चमकल फत्ते के हाथ, बसन्त के माथ गिरल
दू बून्द गिरल अंखियन से धरती माई पर।
कुछ देर समइयो थपड़ी पीटत रुक गइल,
तब फतेह बहादुर शाही के मरदाही पर।।

तबसे गण्डक सरजू के बीच के धरती पर,
अंग्रेजन के एक्को गो कोठी लागल ना।
जबले फत्ते जियलें तबले हुस्सेपुर में,
कवनो अंग्रेजी जोद्धा कहियो जागल ना।।

चौबीस बरीस माटी खातिर लड़ते लड़ते,
एक दिन फत्ते ओही माटी में मिल गइलें।
केहू ना जानल कहिया चिरई कहाँ उड़ल,
ऊ बनिके फूल कहीं पुलुई पर खिल गइलें।।

फत्ते अब नइखन बाकिर उनकर गाथा बा,
आ रही, भले हमरा- रउरा ना याद रहो...
कान लगा के सुनेब कबो ओ माटी में
ऊ गरजेले कि भारत जिंदाबाद रहो....

✍सर्वेश तिवारी श्रीमुख
गोपालगंज, बिहार।

हास्यावतार पं.कुबेर नाथ मिश्र'विचित्र'

अपना विचित्र भेष-भूषा से एगो अलगे पहिचान रहल पं.कुबेर नाथ मिश्र'विचित्र' के। भोजपुरी हास्य कवि के रूप में जवन लोकप्रियता आ परसिद्धि कवि विचित्र का मिलल,ऊ कवनो कवि खातिर सपना हो सकेला। उत्तर प्रदेश के देवरिया जिला के भाटपार रानी से सटल गांव भिंडा मिश्र में एगो धार्मिक गिरहस्थ शाकद्वीपी ब्राह्मण परिवार में सन् १९३५ में विचित्र के जनम भइल।जिनिगी भर पढ़त लिखत एम.ए. बी.एड, साहित्य रत्न के उपाधि बटोरले आ बाबा राघव दास कृषक इंटर कालेज, भाटपार रानी में शिक्षक बनले आ उहें से रिटायर भइले।

लरिकाई में तुकबंदी के जवन रोग लांगल ऊ जिनिगी भर साथ ना छोडलस। संस्कृत हिन्दी के विद्यार्थी रहलन बाकिर कवितई खातिर भोजपुरी चुनलन।'भाव अनूठो चाहिए भाषा काहू होय' के आधार पर भोजपुरी के सेवा में लागि गइलन। ' नहिं सत्यात्परो धर्म: यतो धर्मस्ततौजय:' माने भाव के जस के तस प्रकट करें में भोजपुरी के साथे साथे खड़ी बोली से भी परहेज ना कइलन।कहलहूं बाड़े.....

ओइसे तो इहंवां बहुत लोग बटले बा,
केहू बा बंगाली मदरासी केहू उड़िया।
सबका के मेल में मिलाइके बोलाइ लेलें,
गरजत चलेले मरद भोजपुरिया।।

विचित्र जी के काव्य के मूल प्रवृत्ति हास्य ह।ठेठ देशज शब्दन के तुक देके बात बात में हास्य पैदा कइल उनुके कमाल रहे। भोजपुरी के आचार्य कवि पं.धरीक्षण मिश्र के साथ मिलल जे अंग्रेजी आ फारसी के भी जानकार रहले।नियरे बरहज में कवि मोती बी.ए रहलन जे अंग्रेजी के शिक्षक रहले बाकिर भोजपुरी गीतन के राजकुमार कहासु।एह लोग से भोजपुरी खातिर कुछ करेंगे सीख मिलल। विचित्र जी संस्कृत ग्रंथन के पढले रहले जेसे काव्यानुशासन,छंद विधान आ प्रवाह के भान भइल।देखल जाउ.....

जय सुत शंकर बैरिन तंकर,भूत भयंकर भागि चलो हैं,
लै दल बंदर,लंक के अंदर,रावण सैन्य समूल दलों हैं।
पैठि पताल कियो हैं बेहाल,भुजा अहिरावण काटि लियो हैं,
होत अबेर है आओ सबेर 'कुबेर'की बेर क्यों देर कियो हैं।।

बाकिर जइसन ऊ सकरले बाडन कि ठेठ भोजपुरिया के जवना ढंग के कविता से आनंद मिले ओही ढंग से रचल उनुका उचित बुझाइल।अइसन कवितन के संख्या ढेर बा।जइसे.....

ऊपर महिला नीचे महिला,बिच्चे मरद चंपाइल बा,
हे भगवान बुझाते नइखे,कवन जमाना आइल बा।
सवा अरब लोगन के पति अब भईल एगो मेहरारू बा
हम अपनी मेहरारू के पति,हमरी पति मेहरारू बा।

'विचित्र' के खड़ी बोली के कवितन के भी अलगे रंग बा।समय समय पर राजनीति आ सामाजिक बिसंगति पर कलम उठल बा.....

कौन किसको पूछता है इस ज़माने में।
माफिया घूमे सड़क पर,संत थाने में।
अब इबादत क्यों करे रहमान की कोई,
रहनुमा हैं ब्यस्त अपना घर बनाने में।

'विचित्र'जी के व्यक्तित्व के सबसे चटख रंग बा उनके कवि सम्मेलन के जीवन। भोजपुरी के साइते कवनो जवार होई जहाँ इनकर प्उरा ना पडल होई। गंभीर से गंभीर कवि सम्मेलन उनका हाजिरी भर से आनंददायक बनि जाउ।करीब साठ बरिस ले तीन तीन पीढ़ी के कवियन के संघत रहल।पं.धरीक्षण मिश्र,मोती बी ए,डा.विद्यानिवास मिश्र,राम जियावन दास बावला, पांडेय आशुतोष, रामजी सिंह मुखिया, राधामोहन चौबे अंजन,हरे राम द्विवेदी,सांड बनारसी से लगायत तारकेश्वर मिश्र राही, सोमनाथ ओझा'सोमेश',गिरिधर करुण,अनंत देव अनंत,जुगानी भाई,कमलेश राय, बादशाह प्रेमी आ हमरा जस छोट कवि के भी साथ- नेह -छोह मिलल। असल में 'विचित्र' ऊ कवि ना रहले जे भोजपुरी के खाली अपना कविता के भाषा बनवले बलुक खान- पान,बोली- बेवहार,भेष- भूषा,रहन-सहन सभमें खाँटी भोजपुरिया रहले..... सोरहनिया भोजपुरिया। लगभग दू दर्जन किताबन के रचयिता भोजपुरी के ई दुलरुआ कवि एगो पुरहर जिनिगी जी के ८४ बरिस के उमिर में धरा धाम से सरगे गइले।एहिजाके उनके कवि सम्मेलन पूरा भइल।अब ऊ देवलोक में देवता सभ के कविता सुनाके हंसइहें।

सरधांजलि हास्यावतार कवि पं.कुबेर नाथ मिश्र'विचित्र' के...

माथे टोपी,कुर्ता-धोती,तिलक लिलारे,कान्हें झोली,
मुसुकी नाचत रहे ओठ पर,नेह-छोह से भरल झपोली।
बात-बात में तुकबंदी से बात के दें कविता मे जोरी,
ना बिसरी कब्बो भोजपुरियन के 'विचित्र' के रसगर बोली।।

पोथी बांचत जिनिगी बीतल,पढल-पढावल काम रहल,
घूमि-घूमि के कवि सम्मेलन कइले चारों धाम रहल।
पांडे श्याम नारायण,मोती बी.ए., मिसिर धरीक्षण संग,
साठ साल ले काव्य जगत में बडहन जेकर नाम रहल।।

जेकरा सेवा से आपन बोली भोजपुरी गर्वित बा,
जहाँ जहाँ ले भोजपुरी बा,उहवाँ ले जे चर्चित बा।
अब ऊ हँसी-ठहाका सुनिहें स्वर्गधाम के रहवइया,
भरल नयन से कवि 'विचित्र' के सरधासुमन समर्पित बा।।

✍संजय मिश्र'संजय'
कार्यकारी सम्पादक'सिरिजन'

डॉ. जौहर शफियाबादी क कुछ गज़ल

=गजल=

डाली - डाली ,पत्ता - पत्ता देखल जाई।
तहरो एक दिन चप्पा-चप्पा देखल जाई।।

बनके अपने भाग्य विधाता देखल जाई,
दिल्ली आ बम्बे कलकता देखल जाई ।

घबड़ा के जन डेगs बढ़ाईं देखीं ना ,
आगे अउरी होई का-का देखल जाई ।

तू का कइलs हम का कइनी,सब बा लिखल,
तहरो खाता हमरो खाता देखल जाई ।

सरहद प समझौता कइसन मारीं बस ,
मुदई बा, तब कइसन नाता देखल जाई ।

जौहर के सारा जिनगी बा रचनन में जब,
दूसर का अब अत्ता - पता देखल जाई ।

=गजल=

लड़ाई हक के बा अपना, जतावल भी जरूरी बा ।
बतावल भी जरूरी बा, बुझावल भी जरूरी बा ।।

कबो ई साँप बहिरा, ना सुनी कवनो मधुर भाषा,
कड़क छिंउकी आ पैना से, जगावल भी जरूरी बा ।

खड़ा तूफान में होके बचावे के पड़ी टोपी,
घड़ी भर माथ के अपना झुकावल भी जरूरी बा ।

सही अक्षर के खातिर मश्क करहीं के पड़ी बाबू,
बनावल भी जरूरी बा, मिटावल भी जरूरी बा ।

बतावत बा इहे दर्शन से दर्शन जिंदगानी के,
उगावे खातिर अपना के, डूबावल भी जरूरी बा ।

कबो जौहर ना देखस कोरा सपना जब दिन में कवनो,
एही से आज उनका के घटावल भी जरूरी बा ।

=गजल=

नेहिया का पथ में हमरा बाधा बनल बहाना।
पीड़ा से मन के पंछी भटकल कहाँ-कहाँ ना।।

सुध-बुध हेरा गइल बा,सुख-चैनअब कहाँ बा, जिनगी में चारूओरिया पसरल बाअब विराना।

मेला में आदमी के बर्बाद जिन्दगी बा,
नेहिया के बा छिटाइल अचके में ताना-बाना।

कइसे दरदS सुनाईं का लोर हम देखाईं , लुट-पिट के बा कहानी उजड़ल बाआशियाना।

माटी में मिल गइल बा सपना हँसी-खुशी के,
टीसत बा मन में आ के वादा कइल पुराना ।

चंदन सुवास लेके पछुआ कबो जे उमकल,
पिघिलेला बर्फ मन के ढुँढ़े नया ठिकाना ।

विश्वासो घात जौहर हमरा से के ना कइलस,
घाती बा ई बतावल आपन बा के बेगाना ।

(जौहर शफियाबादी)

राधामोहन चौबे "अंजन" जी क कविता अउरि जीवन परिचय

अंजन जी कऽ छगो मुक्तक

1.
सब दिन नए ना रहे, पुरान हो जाला
नीमनो चीज कबो हेवान हो जाला।
समय से बढ़ि के कुछऊ ना होला
मुरगा ना बोलेला तबो बिहान हो जाला।

2.
झूठे टाही लगवले बाड़, मिली ना
ओह ऊसर में गुलाब खिली ना।
जानते बाड़, जवन भूत ध लीहले बा
केतना फूंक मारल जाई, ढिली ना।

3.
नाता के तनला से तनाव होला
नीयरे रहि के दुराव होला,
नाता, पइसा पर कीनी-बेंची मति
लोभ का आगी में ढेर ताव होला।

4.
हवा के झोंक पर पतइया डोलबे करी ।
लहर उठी त नइया डोलबे करी ।
माई के करेजा पूत खातिर मोम हवे ।
बछरूआ बोली त गइया डोलबे करी ।

5.
कुत्ता के कौरा दे दीं, बहकाई मति,
लोग पर ललकारि के सहकाई मति,
आजु साधू बाबा के कटलसि त,
बिहने रउओ पर झपटी, अगुताई मति ।

6.
दोसरा नीमन देखि के हहरे के ना,
केहू के हरियर देखि के चरे के ना,
जजाती के काम हवे, आगे-पीछे,
कहके लागल देखि के जरे के ना ।

राधामोहन चौबे "अंजन"

कवि, गीतकार राधा मोहन चौबे (अंजन जी) क जन्म दिनांक 4 दिसम्बर 1938 को ग्राम शाहपुर-डिघवा, थाना-भोरे, गोपालगंज जनपद, बिहार में भईल रहे । इहाँ के बाबूजी के नाँव श्रीकृष्ण चतुर्वेदी अउरी माई के नाँव महारानी देवी रहे । बाद में अंजन जी आपन ननिहाल ग्राम अमहीं बाँके, डाक-सोहनरिया , कटेया में स्थाई रूप से बस गइनी । अंजन जी बचपने से कविता लिखे लगनी । बाकि प्रसिद्ध भोजपुरी कवि धरीक्षण मिश्र के संपर्क में अइला के बाद अंजन जी के काव्य प्रतिभा में निखार आइल । अंजन जी एगो प्रतिभाशाली विद्यार्थी रहीं । हाई स्कूल क परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास कइनी । अंजन जी बाद में हिन्दी मे एम०ए० पास कइनी, पास कइला के बाद 19 अगस्त 1959 के शिक्षक के नौकरी मिलल । तब से शिक्षक, प्रधानाचार्य, प्राचार्य, प्रखण्ड शिक्षा अधिकारी, क्षेत्र शिक्षा अधिकारी आदि पद पर काम कइनी और फिर 1 फरवरी 1998 के सेवानिवृत्त भ गइनी । अंजन जी भोजपुरी गीतकार के रूप में मशहूर भइनी । इहाँ के आकाशवाणी पटना आ दूरदर्शन पर भी गीत प्रस्तुत कइनी । अंजन जी कविता अउरी गीतन के अलावा कहानी , उपन्यास और नाटक भी लिखनी । इहाँ के गीतन में गंवई समाज के संवेदना के उत्कर्ष और अपकर्ष क धुरी के चारों ओर नाचत मिलेला । आजो पूर्वी उत्तर प्रदेश के तमाम गायक अंजन जी के गीतन के गा गा के जनमानस के मन्त्रमुग्ध क देला लोग । अंजन जी कवि, गीतकार के साथ-साथ निक पहलवान भी रहनी । अंजन जी के कुल 25 जो किताब प्रकाशित भइली स । इहाँ के पहिलका किताब-कजरौटा, 1969 में प्रकाशित भइल रहे । कुछ अन्य मुख्य प्रकाशित किताबें के नाँव बा -फुहार, संझवत, पनका, सनेश, कनखी, नवचा नेह, अंजुरी, अंजन के लोकप्रिय गीत, हिलोर आदि । अंजन जी के पश्चिम बंग भोजपुरी परिषद, कोलकाता, मुम्बई दूरदर्शन आदि के द्वारा समय-समय पर सम्मानित भी कइल गइल । अंजन जी क देहावसान 15-01-2015 के भइल, आज उहाँ के हमनी के सोझा नइखी बाकी उहाँ के रचना जब जब पढ़ल जाई तब तब जनमानस उहाँ के जरूर याद करी । बारम्बार नमन बा जमीन से जुड़ल एह कवि, गीतकार के ।

जूता के सुख

जूता के ईजाद निसन्देह सुख के कामना से भइल, बलु ई कहल जादे ठीक रही कि जूता ऊ जुगत ह जवन जिनिगी के जद्दोजहद से जूझत जाँगर मनई देह के दुर्वह भार उठवले पाँयन के थोरिक सुकून देवे के जरूरत से पैदा भइल। जूता 'देशज' कोटि के शब्दमानल गइल बा। संस्कृत के मूल धातु 'यु' (यु मिश्रणे अमिश्रणे च) से एकर विकास संभावित बा जवना में मेलन, बिलगावन आ बान्हन के अरथ पैबस्त बा, यु से बनल युक्त (युज्+क्त) आ युक्तम् (युज्+क्त्+कन्) शब्द से प्राकृत के जुत्तअम फेरु जूता। जोड़ी-जूता के जरूरत आ चरचा हरमेंसे एके संड़्ह रहल ह ए से एकर मूल युग्म त्रै: (प्राकृत- जुअ ताअ>जूता) याने गोड़ के जुड़वा रच्छक, हो सकेला। पदिक (राही) वा पदाति (पैदल सैनिक) के पद (पद्+क्तिन्) के, परिधान (परि+धा+ल्युट, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घ:) होखे से जूता, 'पदपरिधान' ह, रच्छक होखे के ओजह से 'पादू', 'पादुका', 'पादरक्ष', पादरक्षक,' 'पादरक्षणह', त्राण (त्रै+क्त् तस्य नत्वम्) याने अभिरक्षा भा राहत देवेवाला होखे से 'पादत्र', 'पादत्रा', 'पदत्राण', 'पादत्राण' भा 'पदत्राणक' ह, आगे बढ़े के प्रेरक आ वेग में बढ़ोतरी करेवाला होखे से 'पदत्वरा' ह, पद के माप तक लाम भा विस्तार होखे से 'पदायता' ह, पद के धूरिहीन राखे से 'पदविरजा' ह, जेकर रथी याने वाहक पैर होखे एहि ओजह से 'पादरथी' ह। संस्कृत के 'चरण' शब्द पैर के वाचक ह जवन 'चर' (चर गत्यर्था:) धातु में 'ल्युट' प्रत्यय के जुरे से बनल बा। चरण के रच्छक होखे से जूता बदे 'चरणपादुका', आधार होखे से 'चरणपीठ', सेवक होखे से 'चरणदासी' शब्द के बेहवार होला। आधुनिक उत्तर भारतीय आर्य भाषा में पैर के वाचक एक शब्द 'पग' ह। पग के मूल संस्कृत के 'प्रगत' (प्र+गम्+क्त्) ह जेकर अर्थ आगे गइल, जे गमन शुरू क चुकल होखे, थोरिके आगे भा अलगा निकसल, होला। प्रगत से बनल 'प्रगतजानु' (जेकर ठेहुना के अंतराल जादे होखे, धनुष्पदी), 'प्रगतजानुक' जइसन शब्द धेयान देवे जोग बाड़न। प्रगत से बनल 'पगय' शब्द के बेहवार प्राकृत में रहे। प्राकृत में जूता के अर्थ में एगो अलग देशज शब्द 'पगय' बा। जूता बदे पग से बनल 'पगदासी' (पैर के सेविका), 'पगतरी' (पैर के तरावट देवेवाला), 'पगनियाँ' (पैर के परिधान, जूती) ह। जूता पेन्ह के फुरफुरी से के बाँचल, पैर से उठल तरावट के अनुभूति सगरी देह प महसूस कइल जाला, एही से ई 'फर्फरीका' (स्फुर+ईकन्+आ) ह। पद से व्युत्पन्न 'पय'(पै) से 'पैजार', अरबी के 'जार' प्रत्यय के जोग से बनल बा जवना के मुख्य अर्थ पैर के रच्छक ह, 'पैतरी' पैर के तरी देवे के ओजह से जूता के नाँव ह। पाद से व्युत्पन्न 'पाय' (पाँय, पाँव, पाव, पा, पौ) से जूता के अर्थ में 'पायपोश', 'पापोश', 'जेरपाई' (फारसी, पैर के आवरण भा पहिनावा),

'पाँवड़ी', 'पाँवरी', 'पावरी', 'पौड़ी', 'पौरि', 'पौरी', (ड़ी/री प्रत्यय के जोग से, जे में पैर राखे वाला के अर्थ में) पेशि, 'पौला' वगैरह शब्द बाड़न। जूता पहिन के आदिमी अतिना निचिंत हो जाले कि 'चल घोड़ी धाने-धाने', फिन रने-बने, काँटे-कुशे का फिकिर? सधुक्कड़ी में जूता के 'अंधाघोड़ा' कहे के पाछे अउ का कारन हो सकेला? जूता पैर के अनुसरण करे से 'अनुपदीना' (अनुपद+ख+टाप्) ह, गुल्फ (टखना) तक के बरसाती जूता 'आगुल्फम्' ह, जुगल-जोड़ी होखे से 'जोड़ी-जोड़ा' ह, पैर के बान्हे वाला होखे से 'वध्रय', 'पन्नद्धा' ह, 'पन्नध्री', ह हितकर होखे से 'प्राणीहिता' ह, सरक केचले भा एक खास माप के कारन 'सृपाटी' ह। संस्कृत में एकर परिचित संज्ञा 'उपानद्ध' (उप+आ+नह्+क्त), 'उपानत' आ 'उपानह' (उप+नह्+क्विप् उपसर्ग दीर्घः) ह। उप उपसर्ग में नगीची, जोगता, जतन जइसन भाव प्रमुख बा, ण(न)ह् धातु- 'णह् बन्धने'- सूत्र के मोताबिक बान्हे, पहिने, सुसज्जित करे, ढाँके के अरथ देला एह तरे देखल जाव त 'उपानह' में गोड़ के हिफाजत के जतन से सज्जित करे, बान्हे, पहिने के अर्थ धुनि बा। उपानह प्राकृत में 'उपाणहिय' के रूप में रहे, भोजपुरी 'पनहिया'/'पनही' के सोत इहे ह। जूता के एक रूप अंग्रेजी के सैंडल (Sandal) ह। सैंडल या कि सैंडलवुड के बेहवार चन्दनों के अरथ में होखेला जवन फारसी के संदल से बनल बा। चन्दन में शीतलता के गुन बा त सैंडल भा जूता कमतर सुखद थोरे ह? संस्कृत के 'पादुकः'(पद्+उकञ्) याने पैदल चलेवाला के 'खड़ाऊँ' के मूल काष्ठपादुका (कठपाउआँ >खड़ाउआँ >खड़ाऊँ) ह। भोजपुरी लोकगीतन में खड़ाऊँ के महत्त्व के व्यक्त करेवाला प्रचुर सामग्री मौजूद बा। एक सोहर गीत में बन जाए प उद्धत राम के चिंता पिता से प्रश्न का सकल में जुबान प आइए जाता, ई चिंता बनवास के अवधि में सीता के रहनी के ले के बा, बेहद मार्मिक-

सोने के खड़उआँ राजा रामचन्द्र चटर-चटर चले हो,
राजा, हम त चलनीं मधुबनवाँ
कइसे सीता रहिहनि हो।

'देशी नाम माला' में जूता बदे पहेण (उपानत्, जूता), पाउल्ल, पाउल्लग ('पाउल्लगाई ति कठ्ठपाउगाओ', काष्ठपादुका, मूँज से बनल पादुका), के उल्लेख भइल बा, भोजपुरी में एगो शब्द ह 'पहुला', देखींजा त कहईं एकर संबंध एही पाउल्लग से त नइखे। घरेलू भा अनौपचारिक इस्तेमाल बदे पादुका के सुविधाजनक प्रकार 'चप्पल' के नाँव चले से उत्पन्न धुनि, एड़ी प लगातार चपत (चप् सांत्वने) भा थपकी लगावे अउरी चापुट (चृप् संदीपने) होखे के गुन से बा। चप्पल में थोरके मोलायमीयत के भाव बा जवन उपादान कारन (घास, जूट, नरम लकड़ी, चमड़ा, कैनवस, रबर वगैरह) के गुन, तेकर चोट आ ए से उत्पन्न धुनि के संकेत करत बा। एकरा बनिस्बत थोरे कठोर रूप आ आवाज के व्यक्त करेवाला भोजपुरी के शब्द 'चटी', 'चट्टी', 'चटपटी', 'चटाखी' भा 'चटुली' हवें। चटी, गोड़ के आकार के, काठ से बनल चप्पल ह जेकरा आगे के ऊपरी बीच भाग में जूट भा रबर के पट्टी होला जवन चौव्वा का ऊपर से बंधन/संतुलन के काम करेला। चटी शब्द मुख्य रूप से चले के दरम्यान एकरा से निकलेवाला चटचट धुनि के अनुकरन के ओजह से बा। असहूँ संस्कृत के 'चटुल' (चट्+लच्) कंपन, अथिरता, घुमक्कड़ी आ दोलन के बोधक ह। महाकवि माघ के 'शिशुपालवध' में आइल एगो असलोक देखल जाव-

"आयस्तमैक्षत जनष्चटुलाग्रपादं
गच्छन्तमुचलित चामरचारुमश्वम्।
नागं पुनर्मृदु सलिलनिमिलाक्ष
सर्वप्रियः खलु भवत्यनुरूप चेटः।।'

(लोग, अगिला गोड़ के फूर्ति से आगे बढ़ावत तेज गति से चलेवाला घोरन के देखे लगलें जेकर चंचल पोंछ चँवर अस सुनर लागे, फिन हाथियन का ओरि जे अधमूनल आँखे, मंथर गति चलत रहलें। सभ प्रानी

आपन जाति, गुन, सुभाव के अनुरूप होके सभके प्रीतिभाजन बनेलें।) ए में निहिचे 'चटुलाग्रपाद' घोरन के गोड़ के गति, चंचलता, टाप के कठोरता आ चापुटपन के भाव समेंटले बा।

जूता के उपयोग, प्रकार, अवस्था, बनावट, पहिने से पड़ेवाला असर आदि के आधार प एकर नाँव में बिबिधता आवेला। लात के आसरे होखे से भा फाटल-पुरान होखे से 'लतड़ी' 'लतरी', 'लातर', 'फटही', जनाना जूता के 'जूती', 'तरी', 'पगनियाँ', 'पैंतरी' कहल जाला। घर के भीतर पहिनेवाला जूता 'फरशी' भा 'फर्शी', ऊँची एँड़ी के 'चढ़ौवाँ', 'हाईहील', 'हाहिल' (भोजपुरी), अनउठल एँड़ी के 'चपुटाह', 'चपाट', 'सिलपट', 'लो हील' आ नोकदार एँड़ी के 'पेंसिल हील' जूता ह। 'चमरुआ', 'चमरौंधा', 'चमाऊ', 'चमौवा' कच्चा चमड़ा के बनल जूता, किरमिची के 'कैनवस शू' (अंग्रेजी), 'गुरगाबी' नोकहीन, 'मुंडा', 'सलीमशाही', 'लीलक' हरा चमड़ा के जूता ह। बिआहि का ओसरि प करिया रंग बरा के बर के पहिनेवाला मांगलिक रंग के जूता 'बिअहुती' ह। जूता गोड़ में कसत होखे त 'सकेताह', काटत होखे त 'कटहा' आ ढीला होखे त 'फलकउआँ' भा 'खपखपाह' होला।

जूता के संबंध से कतिने ना मुहावरा प्रचलन में बाड़न जिनकर नफासत आ चुटीलापन के अंदाज के का कहल जाव? जूता पैर के सहगामी जड़ पदारथ ह, तेकर सहायता के बेगर उछले के के कहो, ऊ त टकसियो ना सके बकि 'जूता उछले' के चरचा अक्सर देखे-सुने में आवेला, बूझि लीं कि कतहूँ सचहूँ जूता से मारपीट भा बहुते घटिया किसिम के कहासुनी भइल ह। 'जूता उछालल' केहू के बेईजति कइल भा अपमानजनक बात कहल ह बकि का करो अदिमी, कतिने ना थेथर जूता उछाले के बावजूद थेथरई से बाज ना आवस, मार खइहें त खइहें, बइठिहें समैने में। आत्मसम्मान के ताखा प ध के ढेर लोग कवनो सामरथी के 'जूता उठावले', 'जूता चमकावेले', 'जूता पालिस करेले', 'जूता सहलावेले भा 'जूता के गंध लेवेलें' याने छोट-से-छोट काम करे में आनन्द के अनुभूति करेलें। केहू प 'जूता उठावल' ओकरा के जूता से मारे प उद्धत होखे के भाव व्यक्त करेला। जूतो खाएवाला चीज हो सकेला ई के सोच सकेला? बकि ना, 'जूता खाले' लोग आ तबहूँ अपना के मुँह देखावे जोग समझेलें त उनकर मरजी। 'जूता खाइल' बेहद अपमानो के बोधक ह, तबहूँ कुछ लो जनमजाते 'जूतखोर' (निरलज) होलें, कुछ के 'जूतखोरी' के लत धरा जाला -

"यः स्वभावो हि यस्यास्ति स नित्यं दुरतिक्रमः।
श्वा यदि क्रियते राजा स किं नाश्नात्युपानहम्।।
-हितोपदेश

(जेकर जइसन सुभाव ह ऊ हरमेसे खती छूटल मोस्किल बा, जदि कूकुर के राजा बना दिहल जाय तबहूँ ओकर जूता चबावे के लत ना छूटी।)

'जूता घुमावल', 'जूता फेंकल', 'जूता चलावल', 'पादुका प्रक्षेपन', 'जूताजूती', 'जूतियावल', 'जूतियौवल', 'जूतमपैजार' ई सभ कम घातक ना हवें, ए में आपस में जूताबाजी, मारपीट, थुक्का फजिहत के भाव अर्थ होला। 'जूती चटखावल' अफरात खुशामद के व्यक्त करेला त 'जूता देखावे' में धिरावे भा अपमानित करे के भाव बा। एह दुनियाँ में द्रव्य के बड़ महिमा बा, कहले जाला कि 'दरबे से सरबे, चहबे से करबे' याने दरब से सभ नेयामत भेंटेला, जेकरा पासे दरब बा ऊ जवन चाही उहे क ली। कहईं मनोनुकूल होखे में अड़चन बा, धउगत-धउगत 'जूता घिस' भा 'खिया' गइल होखे त 'चानीं के जूता' मारे के रहस से केहू अनजान नइखे। एगो अउ तरकीब बा, 'हाथ में जूता लेवे' के। 'जूता से बात कइल', 'जूतीकारी' लफंगन से निबटे के बेहतरीन कला ह। ज'ले रेहों-रेहों करत रहीं, बात बने में सन्देह बनले रही बकि 'जूता हाथ में धराते' नीमन-नीमन अगड़धत लो' के गुरूर, नोनिआइल अकसथम्भ नियर, जमीन्दोज हो जाला। अइसनों हो सकेला कि ऊ राउर 'जूता में नाक रगड़े' प तइयार हो जास। माथ अहं के प्रतीक ह, एही से ढेर लो' के बेबजहो माथ अलगवले रहे के मनोबियाधि हो जाला, बेबसी में उहे जन 'जूता प माथ' रखके अतीन्द्रिय सुख में सराबोरो हो जाले। गुस्सा में 'जूता निकाल के माथो प ध देले' अदिमी, जानबूझ के टंटा बढ़ावल 'जूती में दाल बाँटल' ह, जादे खुसामद 'जूता चाटल' ह। नीतिकुशल अदिमीं मीठ बात

से लज्जित, फजिहत क देसि त ई 'भींजा के जूता मारे', 'मखमली जूता मारे' भा 'रेशमी रुमाल में लपेट के जूता मारे' वाली बात भ गइल। 'जूता हाँकल' भा 'चलावल' एगो टोटका ह जवन छोटमोट चोरी के पता लगावे के उद्देश्य से कइलजाला। 'जूता पड़बो करेला', एकदम अदबद के बरखा बूनी का तरे। आपन एह भूमिका में जूता के सभसे पसनदीदा जगह कपार ह, अचरज होखेला कि का केहू अतिनों बड़ जुतखोर हो सकेला कि जूता खात-खात उनुकर चानी के बार उड़ जाय? हँ जी, होला, ना त 'पनहियाभद्र' (ऊ 'भद्रजन' कि 'भद्दजन' पता ना, जूता खाए से जेकर चानी के बार खतम होखे) शब्द काहे उपजल? कवनों मशीन के कलकाँटा ग'बड़ा जाय त मरम्मति उपाय ह। मानव समाज में कुछ लोग अइसनों पैदा हो जाले जिनकर पेंच थोरके ढील हो जाला, ऊ थोरे कज हो जाले भा कहीं कि टेंढ़िया जाले। अब एकर कारन आ प्रभाव के बात गयरजरूरी बा एसे निदाने के बात होखे। ए तरे' के विकृति के दूर करे बदे जूता एगो बेहतरीन उपकरण साबित होत आइल बा। एहि समस्त क्रिया के 'जूता से मरम्मति' कहल जाला। विकृति निवारे के ई कला के अरबी में 'पापोशकारी' कहल गइल, एह तकनीक में बिकारग्रस्त अदिमी के मार जूतन के सोझ क दिहल जाला। ई जुगजुग के परीच्छित उपाय रहल ह। आचार्य चाणक्य जइसन नीतिशास्त्री एही निदान के सुझाव दिहले बाड़ें-

"खलानां कण्टकानांश्चैव द्विविधैव प्रतिक्रिया।
उपानन्मुखभङ्गोवा दूरतो वा विसर्जनम्।।"

(काँट के, ऊ चाहे सँचहूँ के काँट होखे भा समाज के याने खल, दुइए बिधि से निवारल जा सकेला, एक कि ओकरा के ' मार जूतन के भुरकुस' दीं आ एहि में ना सकान होखे त दोसरे, दूरि ले जाके तज दीं।)

दादागीरी के हद होला। डेरावे धमकावे में, चुनौती देवे में अइसन अतिशयोक्तिपूर्ण बात सुने में आवेला कि मगज धूमि जाय अदिमी के, अब केहू 'सइ जूता मारे आ एक जूता गिने' के धिरावे त का समुझल जाव, कि अनपढ़ बाड़े गिनती ना आवे, कि जूता मारे के गति अतिना तेज होखी कि गिनेवाला पिछुआ जाई, कि उनुका में मारे के ललसा अतिना तेज बा जे सइ जूता मारे के लक्ष्य दस हजार जूता मारि के पूरा कइल चाहत बाड़े। खैर, एह उक्ति में आश्रय के मन में आलंबन के प्रति बेपनाह घिन आ आक्रामकता के बात त सरबसिद्ध बा। अदिमी बड़ जोगाड़ू भा तिकड़मी जीव ह, हर्रे लगे न फिटकिरी आ रंग चढ़े चोखा। केहू के हानि चहुँपावे के बा त खुद के हानि सहे बदे तइयार रहे पड़ी आ ई काज 'जेकर जूती ओकरे सिर' के जुगत से हो जाय त? कुछ जादे चाल्हाँक लोग आपन नाँस अपनहीं क लेले त ई भइल 'मियाँ के जूती, मियाँ के सिर'। भोजपुरी कहावत ह-'जेकर बनरी उहे नचावे', एकर तात्पर्य ई कि कवनों काम में दक्ष, हर छोट-बड़ बारीकी के समझवाला अदिमीं ओह काम के बेहतर ढंग से सम्हार सकेला, एही के नगीची भाव के लिहले एक कहाउत ह-'जूता के खामी पहिनेवाला जाने'। पत्नी के उपदेश से प्रेमरस चिखे के बात बहुते पुरान ह, एकरे के साहित्यशास्त्र में 'कांतासम्मित उपदेश' कहल गइल बा। एह उक्ति में ई बात साफ नइखे कि का हर पत्नी अर्हत होखेली कि उनुकर ज्ञान पा के लोग सीधे ईश्वर का पनाह ध लेले? फेरु इहो साफ नइखे कि ए तरे के उपदेश में अतिना धार भा असर आइल कइसे? लोकमन में त एह बात के लेके बिचित्र धरणा बा, तनी हई कहाउति देखल जाव-'बीबी के जूती-पैजार से खुदा के पनाह'। अब बूझाइल होखी जे घर से भाग के जंगल का राहि जाए के का कारन हो सकेला? अदिमी के हालत आ रहनी से ओकर विश्वसनीयता तय होला, ओकर का 'जेकर जूती तंग आ हित-नात नंग, सभ जगे सेंध'। जिनिगी में मध्य-मारग सरेख मानल जाला, बन्हन आ ढीलापन दुनो के अति तकलीफदेह ह, तेकरा भाव के व्यक्त करत एगो कहाउति ह- 'कस के बान्हल पगरी आ जूती दुनो दुखदायी'। लागल लुफुत हाली ना छूटे-'चोर चोरी से जाई, जूता बदले से थोरिए'- एही भाव के कहाउति ह। जूता सामाजिक रुतबा आ आर्थिक हालात के बोधक रहल बा। जूता के स्वामी 'उपपादुक', 'पदत्राणयुक्त', 'सपादत्राणक' हवें त जूताबिहून 'अपादत्राण', 'पादत्राणहीन', 'पाबरहन' (फारसी), 'पादुकाहीन', 'नंगे पाँव'। 'पाँव में जूती न सिर प पाग'

अदिमीं के हीन हालत के बोधक ह। नरोत्तमदास के 'सुदामा चरित' के द्वारपाल कृष्ण से सुदामा के हुलिया बयान करत उनकर हीन दशा के बखान खति जूता के उल्लेख नइखे भूलत-

"सीस पगा न झगा तन में प्रभु जाने को आहि बसै केहि ग्रामा,
धोती फटी-सी लटी दुपटी अरु पाँय उपानह की नहिं सामा।"

महाभारत में जूता के उत्पत्ति के विचित्र कथा बा। भीष्म पितामह युद्धिष्ठिर से बतकही के दरम्यान बतइलें कि ई सूरुज भगवान के खुदे के कइल खोज ह। एक बेरि कवनों बात प जमदग्नि रिखि उनका प आग-बबूला रहन। गुसियाइल रिखि के कोप से बाँचे बदे उहाँ का दुइ चीज का ईजाद कइनीं आ पितपिताइल महारिखि के उपहार में दीहनीं, ऊ रहे छत्र (छाता) आ उपानह (जूता)। इहाँ सूरुजदेव के भभिसबानीं रहल ह कि ए में से एक हमार तेज घाम से माथ के निवारन करी दोसरका गोड़ के जरे से बँचाई। एकर दान के सुचिताई आ महातम के कवनों अंत नइखे, अछय फल देवेवाला चीज ह। सइ शलाका (कमानीं) के छाता आ सुनर जूता दान कइले बूझीं कि दाता प देवता, दिज आ अप्सरा के किरिपा बरसी आ इनरलोक में निवास करे के पारकालिक लाभ मिली उपरकच में। कहल जाला कि जरूरत खोज के जननी ह। एह कथा से अतिना त साफ बा कि जानलेवा तपिश के त्रास से जरत पाँय के तकलीफ से बाँचे बदे सुरुजदेव खुदहीं जूता के खोज के रहता साफ कइलें आ दोसर कि जरूरतमंद के जूता के दान प्रकृति में मौजूद विविध संचालक शक्ति, प्रबुद्ध संस्कारित बेकति आ सभ इन्द्रिय के अधीन सिरसिरात नम अहसास के सोत (अप्सरा, अय: सरन्ति उद्गच्छन्ति-अप्+सृ+असुन्) के तोस देवेवाला पुन्नकाज ह।

एगो लोककथा में जूता के ईजाद के लेके दोसरे बात बा। कवनों देश के कवनों राजा रहे। राजा अक्सर मूढ़, मनबढ़ू आ बदमिजाज होइबे करेले, ए से उहो ओसनके रहे। एक दिन का भइल, कि शिकार खेलत खन रजवा के गोड़ में रेंगनी के काँट गड़ि गइल। तिलमिलइले रजवा सभ धरती प चमड़ा के आवरण चढ़ावे आदेश दे दिहलस। अब अतिना चमड़ा आवे त कहाँ से? अदिमी समेते सभ जनावर के चाम खींच लिहल जाव तबो बात ना बनी, आ एह में दरबारिनों के चाम उतरे के चानस कम ना रहे। राजा के मंत्री एगो चतुर जीव हवें जिनकर बुधी अइसना मोका प काम क जाला। मंत्री कइयक दिन के सोच-बिचार का बाद तरकीब निकललसि आ राजा के गोड़ प चमड़ा चढ़वा दिहलसि। जूता के खोज हो चुकल रहे।

जूता के इतिहास बहुते पुरान ह। भौतिक मानव विज्ञानी एरिक ट्रिंकोस के अनुसार जूता के उपयोग 40,000 से 26,000 बरिस पहिले भइल। अबहीं तक के सभसे पुरान जूता 1938 ई0 में ओरेगन, संयुक्तराज्य अमेंरिका में पावल गइल बा जवन 8,000 से 7,000 ई0पू0 के पुरान सैंडिल ह। प्राचीन युनानी टेराकोटा के जूता के जोड़ी 900 ई0पू0 के अगोरा संग्रहालय एथेंस में बा जवन एगो महिला के शव का साथे दफन रहे। अर्मेनिया के एक गुफा में भेंटल चमड़ा के जूता 35,00 ई0पू0 के बा। भारतीय हड़प्पा सभ्यता में उष्णीष, अत्क, वासस आ नीवी का संड़हे उपानह के प्रयोग रहल ह। वैदिक काल में पैर में बान्हे जाएवाला पदत्राण के रूप में उपानह के उल्लेख मिलेला।

जूता विविध सांस्कृतिक बेहवारो से गहिरे जूरल बा। मध्य अफ्रिका के कुछ भाग, कोरिया आ थाईलैंड में केहू के जूता के तल्ला देखावल असभ्यता ह। भारत सहित कई देशन में जूता फेंकल अपमानसूचक ह। रामायण के पादुका प्रकरन से 'पादुकाराज्य' जइसन अरथबिसेखी पद के विकास भइल जवना में वास्तविक सत्ता के केन्द्र परतच्छ से भिन्न होला। परतच्छ सत्ता के हैसियत महज प्रतीकात्मक रह जाला। फिलिमन में खलिहा जूता के जोड़ी के प्रयोग मिरतू के सूचक के तौर प कइल जाला। 'शकुन शास्त्र' के अनुसार कूकुर जूता लेके भाग जाय, चाहे केहू के जूता लेके सामने आ जाय त ओह अदिमी के धन चोर चोरा ले जइहें, जूता के उलट गइल वादविवाद होखे के बोधक ह, फटही जूता पेन्हल लछिमी के पलायन के सूचक ह। सपना में जूता देखल छिपल आ स्पष्ट संभावना आ

ऊँच एँड़ी के जूता देखल साहस आ इच्छाशक्ति के प्रतीक ह। विश्व साहित्यो में जूता के भूमिका कम नइखे रहल, 'सिंड्रेला', 'द वंडरफुल विजार्ड आफ ओज' अउ 'रेड शू' जइसन रचनन में जूता के मुख भूमिका बा। 'रुद्रयामलतंत्र' में पादुका के स्तुतिपरक असलोक आइल बा आ तेकर महातम बतावत कहल गइल बा कि जूता के मन से सुमिरन मंगलदायक ह- 'मानसं स्मरति मंगलास्प्रदम'। अब बूझाइल होखी कि मंदिर-वंदिर में पूजा करत बेकती के धेयान बहरी रखल जूता प काहे टँगाइल रहेला।

बहुत दिन आ बहुत तान के किस्सा ना ह। दु जने में लँगउटिया ईयारी रहे। दुनू जन चटकल में काम करस, एके संड़हे, एके 'खोली' में रहस, सड़हे बनावस, सड़हे खास-पीयस याने उनुकर सारा काम एकदूजे के बेगर ना होखे। ओमें से एक जने के मन में जूता के प्रति ओसहिएँ अदम्य लालसा रहे जइसन 'गोदान' के होरी का मन में गाय के लेके रहे। छुट्टी-छपाटी में जब कबो गाँव आवस त उनुकर अवनई प धेयान गइले बेगर ना रह सकत रहे। एक हाथ से माथ के पेटी सम्हारत, दोसरका हाथ के धिरवनी आ बिचलाही अँगुरी में जूता के जोड़ी टँगले, लँगड़ा के आवत उनुका के ना देखले होई? जूता के काटल के पीरा उहे बूझी जेकरा नयगर, सकेताह जूता से पाला परल होखी। पाछे से दोसर जने अरराइल हुरपेटले चलस- "का भाई, तूहू नू? का थलबलाइल मेहरारू अस रेंगत चलत बाड़? बूझाता जइसे दउरा में डेग राखत होखस।" ओ घरी उनुका लागे कि जूता कीन के बड्ड गलती भ गइल। ई जूता, आखिर बनवले कवन रहे? झूठहूँ कहेलें लोग कि जूता आरामदेह चीझ ह, ओहू में बाटा के 'नागरा सोल' के जूता। ई कहानी तकरीबन हर साल दोहरावल जाय बकि ऊ हार ना मानस। तनिक भ पीर पातर होते जूता के टिसुना फेरु उपरा आवे।

सेवान्त का बाद ऊ लोग गाँवे आ गइलें। उनुकर ढेरदिनियाँ के सँइतल जूता प्रेम भाँप के छोट भाई फुरमाइस क के, सही माप के एक जोड़ी उम्दा चमरुआ जूता बनवा दिहलें। इमिली के बीया जड़ल जूता, चलस त मचमच करे। लागे जइसे पैर में पाँख लाग गइल होखे। अब तक उनुका आपन जिगरी सड़हतिया के खडजंत्र भा कहीं जरंताही के कुछ-कुछ खुलासा भ चुकल रहे, जे जानबूझि के कसेत जूता कीनवा देस, एह तर्क का साथे कि जूता खपखपाह ठीक ना, पेन्हले तनी फइले के संभावना त रहले नू बा। इहे कारन रहे कि ऊ ताजिनिगी जूता के सुख से बाकिफ ना हो पइले। चउथापन में भेंटल जूता के ई सुख कवनो परमारथ से इचिको कमतर ना रहे। लसगर रेंड़ी के तेल चभोरल जूता के नरम अहसास उनुका रग-रग में भर जाय त छोट भाई के कोटिन आसीस-बचन का सड़हे सड़हतिया के दगाबाजी प अजस्र मंगल वाग्धारा फूट पड़े- "बचवा, हेह ससुरा का चलते हम जिनिगी भ ना जननीं कि जूता अतिना मजिगर चीझ ह। थोरे कुकुरन के धेयान राखल जाव आ तनकी बास के बरदास क लिहल जाव त जूता के आनन्द से बढ़ के सरगो के आनन्द ना होत होई। अब त ई गंधवो रूचिगर लागेला, ओ दिन अचके का भइल कि मन एकदमें फरफराए लागल त कवनों जूता सूँधा गइल, लागल जइसे केतकी के गंध से बनाँस भर गइल होखे। भगवान छोटका के जस आ कीरति बनवले राखसु।"

✍**दिनेश पाण्डेय पटना**

कन्हैया प्रसाद तिवारी 'रसिक' जी के पांच गो मुक्तक

1.
एक बिसातिन औसरि पा बृखभानु सुता गृह जा सकराहें।
साजि समान सुहागिन के बिछिया बिनुली कजरा करियाहें।
बूझत हाल सनेह सने सुर नैन नचा इचि रूप सराहें।
जानि क कान्ह क भेद अहीरनि हाथ करेज निकासत आहें।

2.
साँवर रूप अनूप छटा लखि बान प्रसून चुभे हियरे में।
धा ललिता घर भीतर जा कहली चुरिहारिन हौ नियरे में।
नाकि क कील कटाह लगे गर मोतिनहार गड़े हियरे में।
मंथर चाल चले कटि खीन जनी गदरी निखरी उपरे में।

3.
चोखा खा के ऊब भइल बा
अब लोगन के चोखा चाहीं
काया रोग रहित बा सभके
अब लोगन के पोखा चाहीं
आगे बढ़िके काम न होई
बाछा बैल हरिस अवगाहीं
बपसी बलु खोभाड़ अगोरस
बबुआ रामझरोखा चाहीं

4.
आनाकानी ना मनमानी , लइकन संगे लइका हो जा ।
छोड़s बुढ़ऊ बात पुरानी , कर मोबाइल लेके खो जा ।
जोड़-घटाव आ गुना भागा , जाड़ा में कठुआए दीहs ।
करs आपन सोच रूहानी, जनमतुआ जस पावन होजा ।

5.
पढ़ि के मन में अनुराग उगे,
अस पाठ पढ़ावल नीमन बा ।
जवना जुगुती सभ लोग जगे,
अस बात बतावल नीमन बा ।
सच पूछि त पीर भरे मन से ,
उधियान सरीसहिं खौलत बा ।
चिपका उनुका क हिया भितरे ,
कुछ बात बढ़ावल नीमन बा ।

✍**कन्हैया प्रसाद तिवारी 'रसिक'**

जवन हाथ उठि गइल विनय में

जवन हाथ उठि गइल विनय में
जवन हाथ उठि गइल विनय में,
ऊ तलवार उठाई कइसे?
हाथे में तरुआरि उठल जदि,
दुश्मन मारि न आई कइसे?

आँखि गुड़ेरी, आँखि घुमाई,
आँखि तरेरी, आँखि नचाई,
खोट भरल जवनी अँखिया बा,
हमसे आँखि मिलाई कइसे?

असमाने में मीन टंगाइल,
घूमे जइसे चक्र बन्हाइल,
अर्जुन जइसन डीठि गड़ी तs,
पुतरी नजर न आई कइसे?

बान्हि कफन के पाग माथ पर,
तन,मन, धन सब लेइ हाथ पर,
डेग बढ़ाई वीर बाँकुड़ा,
दुश्मन ना थर्राई कइसे?

सोनानगरी ऊँच सिंहासन,
छलबल, दलबल, मिथ्याभासन,
रामचंद्र के नजर परी तs,
रावन बचिके जाई कइसे?

मन में बा इरिखा, डाह भरल,
सब नेह-छोह के सोत मरल,
अँखिया बड़का कंजास परल,
कविता लिखि-पढ़ि पाई कइसे?

✍**संगीत सुभाष,**
मुसहरी, गोपालगंज।

बहुत सोझ बनके देखनी

बहुत सोझ बनके देखनी,अब तनिका टेढ़ जबान करब।
अब हमहूँ आपन नाम करब।

शास्त्र वेद बतलावे सदा जीत सच्चाई के होखेला,
हमहूँ सच्चा बनके देखनी, पूरा दुनियाँ रास्ता रोकेला,
अब झूठ के लेइब सहारा हम,चाहें बान्हे आपन इमान धरब।

माई बाप के कहला से हम बड़का के आदर कइनीं,
सब बड़का आगे बढ़ गइलें, हम सीढ़ी बनके रह गइनीं,
अब चुनेब चुनिंदा बड़कन के,उनके हम बदनाम करब।

प्रशासन जनता के रक्षक,हमार कानून इहे बतलावेला,
बनल घूस के भक्षक ई,बस जनता के डेरवावेला,
अब संग्राम के तइयारी बा,जवना के हम सरेआम करब।

✍**संग्राम ओझा'भावेश',**
पटखौली, गोपालगंज।
पिन- 841426

रउरो मंदिर में शंख बजाईं

रउरो मंदिर में शंख बजाईं
रउरो मंदिर में शंख बजाईं,
हमहूँ दिहीं मस्जिद में अजान।
ए देश ला समय पर रउरो देम जान
अउर हमहूँ देब जान।

लड़ के आजादी लिहलें हमनीं के पुरुखा पुरनियाँ
आजु काहें होत बाटे जाति-मजहब के कहनियाँ
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई एह देश के शान।

भारत देश के पूरा दुनियाँ में नाम बा
कुछलोग के कारन आज होत बदनाम बा
काहें लोग घटावत बाड़न एह देश के शान।

रउरा मंदिर पूजा करीं, हमहूँ मस्जिद पढ़ीं नमाज
एह देश के अउरो मजबूत बनावल जाव आज
हमरो अल्लाह खुश होइहें, रउरो खुश होइहें भगवान।

✍**असलम सागर,**
ग्राम-महाराजगंज,
पोस्ट-गोल्डिनगंज,
जिला- छपरा

हम आदत से मजबूर बानी

हम आदत से मजबूर बानी
दुनियादारी से दूर बानी

कथनी-करनी में अंतर नइखे
आ भरमावे के मंतर नइखे
एके जइसन बाहर-भीतर
कुछ्वु हमरा अंदर नइखे
सभे देखे फरका होके
अपना के कुछ हल्का होके
हम आँखिन में घाव देखी
सबका नज़र से अलगा होके
बस एही से मशहूर बानी
हम आदत से मजबूर बानी

देखि नज़ारा सभे भागल
अपना-अपना काम मे लागल
बेसहारा के दरद देख के
दरद हमरो मन मे जागल
हम अपना के बदले के
सीखत अभियो लूर बानी
हम आदत से मजबूर बानी

सुनि रोज़ बात हज़ार
बहे जइसे अलग बयार
गरज़ पड़ला पर याद करेलन
हित बंधु दोस्त यार
सबका से मुँह मोड़के
कइसे कहि भरपूर बानी
हम आदत से मजबूर बानी

आँखिन के जवाब देखनी
सब बात के हिसाब देखनी
मन के गहिरा में रख के
न जाने केतना ख़्वाब देखनी
गुनगुनावत हरपल ही अब
दरद के ही सुर बानी
हम आदत से मजबूर बानी
दुनियादारी से दूर बानी ।।

✍**दीपक सिंह, कोलकाता**

धरती लिहले त रहला

धरती लिहले त रहला आसमान लेबा का
तू अकेलहीं ई सगरो जहान लेबा का

खाली पोति पिसान हाथ में भण्डारी बनि गइला
काँकर पाथर सबके दिहला हीरा मोती धइला

ए भुजइनी क तीसर अब परान लेबा का
घाम लगे जब नीक त पहिले ही तोहरा के चाही

तनिको छाँह रही तूँ लेबा सबके रही मनाही
अब ई बादर लेबा सूरुज लेबा चान लेबा का

केहु के हिस्सा होखे बाकिर अपना नावें कइला
सपना तक ले लिहला बाकिर तवना पे न अघइला
आवा ल न इहवाँ का बा ई मसान लेबा का

✍**भालचंद त्रिपाठी**
ग्राम व पोस्ट गौरी
जनपद आज़मगढ़

*****

मुक्तक

बिना नेह के दुनियाँ कइसन?
बे चीनी के बुनियाँ कइसन?
लूर ना होखे गवला के तऽ,
तबला आ हरमुनिया कइसन?
-संगीत सुभाष

रफथरो

आलोक कबो आपन हाथ पर बन्धल घड़ी में टाइम देखस। त कबो इंटरव्यू ऑफिस के वेटिंग रूम में टाँगल देवालघड़ी पर।उनका आस-पास उनके उमिर के बिसगो लइका हाथ मे आपन डोकोमेंट लेके बइठल बारे इंटरव्यू ख़ातिर। आलोक के अब इयादों नइखे रह गइल कि ऊ केतना बार इंटरव्यू देले अउर कवना-कवना काम

ख़ातिर। अइसे त ऊ इंजीनियरिंग कइले बारे मेकेनिकल डिपार्टमेंट से बाकिर अब ओकर कवनो मायने नइखे रह गइल। कवनो कम्पनी में एको पोस्ट खाली रहला पर इंटरव्यू देवे वाला के लाइन साबित कर देता कि ई बेरोजगारी का कहाला? इंटरव्यू ख़ातिर अइला तकरीबन दु घन्टा हो गइल बाकिर अबहीं तक उनकर नाम ना पुकारल गइल। टेबुल पर रखल बोतल के पानी पी के आलोक सोफा पर आपन माथा के थोरके अलम देलें।

उनका कान में एगो आवाज गूँजे लागल अउर आँख मुँदा गइल।

"हम जानत बानी हमर लइका बहुत बड़ अदिमी बनी, देख लेम आप।"

ई बात आलोक के माई आलोक के बाबू जी के चाय के कप देत कहले रहली।

"ई अपना खनदान के नाम रोशन करी। आज गोतिया-दियाद, समाज के लोग हँसत बा नू कि पांडेय आपन अवकात नइखन देखत आ चलल बाड़े लइका के इंजीनियरिंग पढ़ावे। सुन ली रउआ, भलहीं हमर रोआँ रोआँ बेचा जाई बाकिर हम अपना बबुआ के पढ़ाइम। उनका के इंजीनियर बनाएम।

देवस्वरूप पांडेय जी पेपर के पन्ना पलट के कहले।

"अरे, हम कहाँ मना कइले बानी। तू अपना लइका के इंजीनियर बनावऽ भा डाकडर।

जवन रहे तवन इनके पढ़ाई में लाग गइल, अब जवन बाप दादा के जोगावल जमीन बा ऊ हम मरतो दम तक ना बेचम। हमरा देखे से ई काम लायक पढ़ लेले

बाड़े, अब इनका कमाये के चाहीं, कहईं कवनो फैक्ट्री वगैरा में जाके।"

जानकी तनी रीझिया के बोलली- "अरे रउवा भरोसे के बइठल बा? अबहीं ई ना भुलाईं कि हम जिन्दा बानीं। चार दिन बाद बबुआ के कॉलेज में दाखिला करावे के बा। उनकर काउंसलिग भइल बा। कॉलेज बिलासपुर में बा। कमसे कम तत्काल में दु लाख रुपिया चाहीं।"

पांडेय जी अब पेपर मोड़ के रख दिहनीं आ चाय के कप टेबुल से उठावत कहनीं- "तहरा लोग के फेर में अब हमार इज्जत कहईं के ना रही। अरे, जेतना बड़ चादर रहे ओतने गोड़ फइलावे के चाहीं ना त आदमी उघार हो जाई भा चादर फाट जाइ।"

पांडेय जी के रोस देख के जानकी तनी नरम मिजाज बना के बोलली- "एजी, रउवा जानत बानीं कि हमनी के इहे एगो जीवन- जोति बाड़े त काहे ना हमनी इनकर जिनगी सँवार दिआव? एगो होला कि लइका पढ़े में कमजोर रहे त आदमी आग पाछ सोचेला बाकिर आपन आलोक त साँचो में दीपक बा आ ई सब कुछो त ओकरे ह। ऊ कमाई त फिर से जमीन खरीद सकत बा। घर बना सकत बा लेकिन सही राह मिली तब। हमनी सब त अनपढ़ बानींजा।आप जिनगी भर किसानी कइनीं। खाली खइनी अउर खिअइनीं।तनी सोचीं, आलोक के बिआह भइल आ दुनु बेकत के मन के मेल ना खइलस त का होइ? नवका जमाना के लइकी ऊ नइखी सन्, जवन अभाव में अपना के सहेज ल सन् अउर मर्द के कड़वा बोल ना बोल सन्।"

देवस्वरूप पांडेय जी चाय खत्म करके बोलले- "बस बस, हम समझ गइनीं। तू हमके जादे ज्ञान जनि द, हम बात क के आवत बानीं केहू से। अब तू लोग के आगे हमर का चली।"

एतना कह के पांडेय जी बाहर निकल गइनी पइसा के जोगाड़ में। जब दुपहरिया भइल त जानकी बाजार चल गइली।

आलोक के माई बाप पढ़ल- लिखल ना रहे लोग बाकिर पढ़ाई के महत्त्व जानत रहलन। अपने- आप के तकलीफ में राख के ऊ आलोक के अच्छा शिक्षा देहल चाहत रहलन। आलोको पढ़े में तेज रहले। उनका अपना टाइलेंट पर ही बिलासपुर के कॉलेज में जगह मिलत रहे। अब खाली कॉलेज के फी अउर हॉस्टल के चार्ज भरल बाकी रहे।

आलोको आपन मन के समझा चुकल रहले कि अब हम नइखी पढ़ सकत काहे कि दाखिला ख़ातिर मात्र चार दिन बचल रहे अउर अबहीं तक कवनो रस्ता ना लउकत रहे। इहे तनाव में ऊ दिन भर घर से बहरी रहस, अपना दोस्तन के साथ बाग बागइचा में घुमस।

जब मुँहअन्हार भइल त आलोक घरे अइले आ हाथ-गोड़ धो के अपना कमरा में चल गइले। दु - तीन घन्टा बाद सब केहू एक साथे खाए बइठल तब उनकर बाबू जी पुछले- "आलोक, का सोचले बाड़? अब का करे के बिचार बा? "

आलोक उदास आवाज में कहलें- "अब का, अब हमू कवनो गाँव के लइकन के साथे शहर चल जाएम आ कवनो फैक्ट्री में काम करम।"

जानकी खाना परोसत कहली- "काहे फैक्ट्री में काम करबऽ? तहार इंजीनियरिंग के का होइ बबुआ?"

आलोक रोटी के एगो निवाला अपना मुह में डालत कहले- "जब पइसे नइखे त कइसे पढ़ाई होइ माई? हम इंजीनियरिंग ना पढम त मर नानू जाइब? "

अपना मुह में कवर डालत पांडेय जी कहनी- "काहे निराश होत बारऽ बबुआ? अभी तोहर बाबू-माई जिन्दा बा, खा के आपन समान सझिया लऽ अउर काल्हु निकल जा बिलासपुर, पइसा कउडी के फिकिर तोहरा नइखे करे के। ई चिंता फिकिर हमरा करे के बा।"

ई बात सुन के आलोक के चेहरा पर खुशी के झलक उभरे लागल अउर हाली-हाली खा के अपना कमरा में चल गइले।

जानकी, हाथ-बैना से हवा हाँकत, पांडेय जी से पूछली- "केतना के बेवस्था भइल ह? "

पांडेय जी थारी में हाथ अँचवत कहले- "हरिहर चौबे देले ह अउर केहू तैयार ना भइल ह।उहो दु दिन के अंदर रजिस्टरी करे के पड़ी, केतनो कहनीं बाकिर डेढ़ लाख ही मिलल ह, ओसे ऊपर उहो ना चढ़ले ह। उनका खेत के डरारे आपन खेत रहल त उहो मिल गइल ना त दोसर केहू बहुत कम देत रहे।"

जानकी थोड़ा गमगीन आवाज में- "हम जानत रहीं ई बात, लोगन के खाली मोका चाहीं कि केहू कसिक भा मुसीबत में पड़ो आ हम आपन रोटी सेकी।अच्छा सब दिन एक समान ना होला। आपन बबुआ खाली पढ़

लेस अच्छा से। हमू पच्चास हजार ले इंतेजाम कर देले बानी।"

ई बात सुन के देवस्वरूप चिहाअ के पुछलन- "तू कहा गइल रहलु ह, के देहलस ह तोहरा के पइसा? "

पांडेय जी के रुपिया देत जानकी कहली-" रउवा गइला के बाद हम बजार गइल रहनीं। भोला सोनार किहाँ आपन दुनु कंगन अउर अँगूठी गिरवी रख देनी। भोला से बोल देले बानी कि हमर बबुआ बहुत जल्दी ई छोड़ा के ले जाई।"

ई बात आलोक सुन लेलन। उनकर आँख अपने आप माई बाप के ई तेयाग अउर स्नेह के बहाव में बहे लागल।

बेटा के प्यार में पागल हर माई- बाप होला। सब माई चाहेली कि उनकर लइका काबिल बने, नाम कमाव, रुतवा मिले।

आलोक रोअत अपना माई के करेज से लाग गइले अउर कहले-

"माई, तू ई का कइलू? हमरा ला आपन सिंगार बेच देहलू? अरे हम ना पढम त कवनो आसमान ना टूट जाइ। ई तू का कइलू माई? हम ना जाइब माई, बिलासपुर। तू काल सुबेरे आपन गहना लिआव जाके।"

ऊ बाबू जी के गोड़ पकड़ि के कहले- "बाबूजी, ई पइसा तू चौबे चाचा के काल्हु लौटा द, हमरा इंजीनियरिंग नइखे करे के। उहो अपना बाबा दादा के थाती अउर आपन माटी बेच के। हमरा ला हेतना तयाग करत बानी आप सब इहे बहुत बा। हम भगवान से इहे माँगम कि हर जन्म में अइसने हमार माई बाबू बनावस। जब कबो जन्म मिले हम तहरे सब के गोदी पाई।"

आलोक के साथे साथे उनकर माई बाबू दुनु जना रोये लागल लो।

आलोक के बाबू आलोक के उठा के लोर पोछत कहले- "अरे बेटा, ई सब त फिरु मिल जाई, जब तू पढ़ लिख के कामयाब होखब। हमनी के जिन्दगी सुख से कटी जब तू कमाये लगबऽ। त सब सही हो जाई।"

फिरो जानकी अपना आँचर से आलोक के चेहरा पोछत बोललीं-

" ना बाबा, तू जन रोअऽ। तहार पुरा भभीस पड़ल बा, हमनी आपन गुजारा कर लेम जा। तू आपन सपना पूरा करऽ। तहरा सपना में हमनी के सपना बा। हमार सवख तू बारअ, तहर हर सवख हमर बा, हमार सिंगार तोहर बाबू जी बानीं। उहाँ के बनल रही हमर सिंगार बनल रही।

तहरा आगे ऊ सोना के मोल दु पइसा के बा। हमरा खातिर तूही सोना बाड़ऽ, तूही हीरा बारऽ।"

तीनो जन के बात के साथे साथे आँख से बहत धार पुरा घर के स्नेह अउर परेम के भाव में डूबा देले रहे।

एगो तागा में जे तरे छोट-छोट गुरिया के दाना गूथल जाला। ओहि तरे बाप, माई, बेटा एक दूसरा के परेम के बाह में गुथा गइल लोग।

आलोक अब अपना माई बाबूजी के सपना ला जीए लगलन। कॉलेज में अनेक मनलुभावन रस रहे लेकिन अपना के एगो सीमा में राखस।

जब कॉलेज से छुट्टी मिले त गाँवे ना जाके पार्ट टाइम काम कर लेस। माई के जादे जिद कइला के बाद जब गाँवे जास त टोला, मोहल्ला के बड़ लोग उनका के सुना के टोन कसे कि खाये के दाना ना, ओढ़े के बिछवना आ चलल बारे बबुआ इंजीनियरिंग पढ़े।

सब के ताना बाना सुन के आलोक मूड़ी नीचे कर चुप-चाप अपना घरे चल जास, काहे कि उनकर माई के कहल बात उनका दिमाग मे रहे। उनकर माई उनका से कहले रही- "बबुआ गरीबी कवनो पय ना ह। गरीबी में मर गइल आपन कमजोरी ह। ई समय के दौड़ ह जवन आवत-जात रहे ला। हर केहू के बात के जबाब समय पर देवे के चाही।"

जब दुख के बदरी घेरे ला त चारो तरफ से आदमी के तोप के अपना भवंडर में उठावे के चाहे ला ताकि ऊ आदमी के अस्तित्व ही खतम कर देव बाकिर इंसान अपना अडिग परिश्रम अउर कर्म से आपन मार्ग बनावत उ भवंडर से पार होला आ आपन कर्म से मिलल परकास में अपना के परकासपुंज बना के दुनिया के देखावेला।

जस जस आलोक के सिमेस्टर खतम होखे, ओहि तरे उनकर घर के स्थिति कमजोर भइल जाव अउर उनकर माई बाबू जी के सेहत चिंता फिकीर से घटल जाव।

आलोक हर परीक्षा में अव्वल आवस आ कॉलेज में उनकर नाम प्रतिभाशाली विद्यार्थी में होखे।

उनका अपना पर बहुत भरोसा रहे कि पढ़ाई के बाद उनका अच्छा नोकरी मिली, घर के साथे साथे अपनो स्थिति सुदृढ़ हो जाई

लेकिन हर सोचल बात होइत त ई दुनिया मे केहू दुखी भा बेरोजगार ना रहित।

आलोक के आज इंजीनियरिंग कइला तीन साल हो गइल अउर उहो उहे कतार में आज बाड़े जहाँ करोड़ो के सख्या में भारत के नवयुवक बेरोजगार बाड़े। कवनो काम करे के तइयार बाड़े।केतनो केहू डिग्री लेले बा लेकिन नोकरी के आभाव में सब डिग्री धुर फाकत बा।

केतना जगह इंटरव्यू में आलोक के उका पैरवी, रिफ्रेंस के बिना नोकरी ना मिलल त केतना जगह घुस के बिना।

ई सब के बावजुद कहईं नोकरी मिलबो करे त सॅलरी के कमी आ काम के लोड ज्यादा रहे।

पिज्जा डिलेभर भा कॉलसेंटर में काम करे वाला के सॅलरी जेतना उनकर सॅलरी मिले कहीं - कहीं ।

आलोक ई सब कबो-कबो बर्दास्त ना कर पावस आ लाखो के भीड़ में ऊ चीख के रो पड़स लेकिन शहर के भीड़ ऊ चीख के उठे ना देव। अपना भागाभागी के जीवनचर्या में दबा लेव।

आलोक के कॉलेज कम्पलीट कइला। अउर लगातार नोकरी खाती इंटरव्यू देत एक साल से ऊपरर हो गइल लेकिन अभी तक ऊ बेरोजगारी के दलदल में ही धसल बाड़े।

अचानक आलोक के केहू झकझोर के उठवलस आ आलोक के आँख खुलल- "आप जा सकते है अब इंटरव्यू नही होगा। H R सर किसी इमरजेंसी मीटिंग के लिये चले गये है।"

ई बात उ ऑफिस के एगो लेडी बोलल।

आलोक अपना अगल-बगल देखले।केहू ना रहे उनका के छोड़ के।फिरो कलाई पर बन्धल घरी देखले, दस बजे के आइल अब तीन बज गइल रहे तब आलोक ऊ लेडी के देखले अउर कहले-

"थैंक्यू मेम आपने हमे बता दिया।वैसे भी हमारी जिंदगी तो 'रफथरो' हो गई है। आज भी खाली गया। कोई बात नही।"

एतने कह के आलोक आपन डोकोमेंट हाथ मे लेके गेट से बाहर निकल गइले। आ ऑफिस के ऊ लेडी उनका के देखते रह गइली।

✍ **विवेक सिंह,सिवान।**

उल्टा पुल्टा

अमवाँ के मोजर में फरता रेंड़,
खूँटा में बान्हल भँइस लउकेले भेंड़।
मुरुदा के घाट प सेन्ट गमगमाता,
दूधवाला बल्टी में पाउच भेंटाता।

तुलसी के डार्हि में लटकल कवाछ,
काँट के ढिलुहा में पनपता आस।
चंदा के चांदनी में गरमी फुलाता,
सुरुज के गरमी में छाँह अगराता।

दवाई के पुलुई प पनपता ता खाज,
पैदल के मूँड़ी प चढ़ल जहाज।
भोर के आँचर में भरल अन्हार,
रात के गोदी में फउके सिंगार।

अन्हरा के लउकेला बावन कोस,
अँखिया के सोझा ना सुबहित होश।
मुरुदा के दुअरा प बाजता बधाई,
आ सउरी के छत प सुनाला रोवाई।

दाँतवा के घरे ना सरौता भेंटाता,
बउला के घर में सुपारी कटाता।
आज भइल काल्हु काल्हु भइल आज,
कहसु का राय अब इहे बा रिवाज।

✍ **देवेन्द्र कुमार राय**
(ग्राम+पो0-जमुआँव,पीरो,भोजपुर,बिहार)

हद क दिहनी जी

तझड़ पइसल आके हमनी के बगानी में
चानी काट तानी रउरा राजधानी में ।

फूलन के वर्षा में रउरा ओने भिंगत बानी
बज्जर एने गिरत खेत - खरिहानी में ।

साठा में भी पाठा बनके जानी उड़त बानी
घुनवा लागत बड़ुए हमनी के जवानी में ।

छानत-घोंटत बानी रउरा मेवा और मलाइ
खलिहा तसला एने ढनकता चुहानी में ।

हमनी के बोली भाषा के कइनी भूँसी-भूँसी
रउरा बोलत बानी खाली अब जापानी में ।

आईं अबकी राजाजानी आँख बिछौले बानी जा
होई चुकता कुल्ह हिसाब अगुआनी में ।

✍**डॉ. हरेश्वर राय, सतना, मध्य प्रदेश**

मातृभाषा

केनहूँ से छेडबऽ झंकृत हो जाई
थिरकत रही हाथ पाँव नस-नस में समाई
छाए क्षितिज पर दिलवा के पट खोले
अइसन सोहाला जइसे माई के बोली बोले

बाप महतारी चाहे पुर्खा पुरनिया
से आ रहल बा कथा कहनियाँ
समृध्द लोकसाहित्य जनमन के संगम में
व्याप्त जइसे संगीत के सरगम में

भाषा के भूगोल पर लोकसंस्कृति के शान बा
झिलमिल सरोवर जइसन गम्भीर स्वाभिमान बा
उमंग बा, तरंग बा, हमनी के संग बा
आपन पहचान आपन ढंग बा

बोली जे बोली रस घोली
दिलवा के बात मुँहवा से खोली
शब्दन में स्वरलहरी संगीतात्मक लय विधान बा
मृदु मुस्कान साथे भोजपुरिया जुबान बा

✍ **रामप्रसाद साह**
कलैया उपमहानगर पालिका---14, भौरा टोला
जि० बारा , नेपाल ।

लइका जब बिगरे लागेला

कश्मीरी देशद्रोही लोग खातिर कुछ ठेंठ भोजपुरी में.....

लइका जब बिगरे लागेला,
तब ढेर चढ़ावल ना जाला।
जब काम बने जुतियावे से,
तब बेद पढ़ावल ना जाला।

कुक्कुर जब पोंछ हिलावेला,
तब मइलो काछल भावेला।
काटे लागे तऽ मार दियाला,
ढेर जियावल ना जाला।

नागिन के पूजा नाग पँचइयाँ,
आ सिरात के होखेला।
बाकी दिन त थूरल जाला,
दूध पियावल ना जाला।

काहें के गले लगावे लऽ,
जब पता बा निश्चित घाव करी।
बिसवास से घात करेला जे,
ऊ मीत बनावल ना जाला।

तू जीव जन्तु से प्यार करऽ
पर एगो सीख जरूरी बा।
बिच्छी के डंक बिना तुरले, 'त्यागी' सुघुरावल ना जाला।।

✍**संजीव कुमार त्यागी**

छुट्टी लेके आवल करीं

गाँव-घर से लइकन के परिचय करावल करीं,
साल भर में एके बार छुट्टी लेके आवल करीं।

खेत खरिहान आ किसान के देखाएब जब,
सबका से सबके लगाव होई आएब जब।
गोतिया, देयाद, हित-नात के चिन्हावल करीं,
साल भर में एके बार छुटी लेके आवल करीं।

धान, गेहूँ मकई आ मरुआ के दाना देखीं,
पुरवज के थाती बाटे गुजरल जमाना देखीं।
गाँवे वाला नदी, नाला पोखरी घुमावल करीं,
साल भर में एके बार छुट्टी लेके आवल करीं।

परब त्योहार जानीं, अवरी बेवहार जानीं,
रिस्ता के मोल कइसन होला संस्कार जानीं।
दादा परदादा लोग के कीरति सुनावल करीं,
साल भर में एके बार छुट्टी लेके आवल करीं।

गुल्ली-डंटा, चिका, दोल्हा-पाती देखीं खेल जी,
अवरी देखीं एक दोसरा से कइसन मेल जी।
होली, छठ, चइत वाला गीत सुनीं गावल करीं,
साल भर में एके बार छुट्टी लेके आवल करीं।

शुद्ध वातावरण मिली कली मुरझाइल खिली,
खाँटी दूध-दही खाईं देह चीमर होई सिल्ली।
धीरे-धीरे लइका सन के गाँव घर भावल करी,
साल भर में एके बार छुट्टी लेके आवल करीं।

✍सुजीत कुमार सिंह(शिक्षक)
कन्या मध्य विधालय अपहर, ग्राम:-सलखुआँ,
पोस्ट:-अपहर, थाना:-अमनौर, जिला:-सारण(बिहार)

हम फक्कड़ पक्का अघोरी हो

हम फक्कड़ पक्का अघोरी हो
कोई कहेला साधु बाबा,
कोई कहे कि ह नशेड़ी हो
हम फक्कड़ पक्का अघोरी हो ।

मस्त मौला हम मस्त रहेनी,
अपने में ही व्यस्त रहेनी,
बुद्धि से ब्राम्हण
कार्य से घुमंतू गडेरी हो।
हम फक्कड़ पक्का अघोरी हो ।

धन से बा मोह नाहीं
तन से बिच्छोह नाहीं
जीवन में अवरोह नाहीं
हई बालू के ढेरी हो।
हम फक्कड़ पक्का अघोरी हो ।

सम्मान के बा चाह नाहीं
अपमान के परवाह नाहीं
भगवान भोलेनाथ के
हम भक्त चेला चेरी हो।
हम फक्कड़ पक्का अघोरी हो ।

आनंद के चाह में
सभे भटकता राह में
पऊवा भी मिले नाहीं
हम पाईं भर पसेरी हो।
हम फक्कड़ पक्का अघोरी हो ।

✍रमेश कुमार सुदामा
निरनपुर
बिहिया भोजपुर (आरा)

आयकर क छापा

सुबह के समय रहे। दफ्तर में आज छुट्टी रहे, एह से देर तक गहरी नींद में हम एक सुखद सपना देखत रहनीं। सपना अजीब रहे। सपना में हमरा घरे लक्ष्मी जी आइल रहली। उनका हाथ से सिक्का के बरसात होत रहे आ ओह सिक्का के आवाज हमरा कान में एकदम साफ-साफ सुनाई देत रहे टन्-टन्-टन् फिर टर्-टर्-टर् फिर किर्-किर्-किर्।अरे, ई सिक्का के मधुर आवाज में कर्कश जानल पहिचानल आवाज़ कहवाँ से आवे लागल? अबहीं हम पूरा होश -हवाश में आवते रहीं तब तक श्रीमती जी के ज़ोरदार आवाज़ कान में परल।आरे, उठीं बाहर केहू कॉल बेल बजावता । एतना सुबहे के आ गइल? जब दरवाजा खोलनी त सामने तीन आदमी खाड़ रहन।आजकाल्ह चोर घण्टी बजा के घुस जालन सन, अइसन कहानी हम खूब सुन चुकल रहनी, एहसे सोचनी जे जल्दी से दरवाजा बंद कर लीं बाकिर सामने खाड़ एक आदमी धड़ से आपन पैर दरवाजा के बीच घुसा के पूछलस आप पीके शर्मा हैं। हम सोचनी, जरूर ससुराल के केहू होई, तब तक एक आदमी कहलस कि ऊ लोग इनकम टैक्स से बाड़ें। हम डरि के मारे काँपे लगनी, जइसे कि जमराज देख लेले होखीं। अरे बाप रे...! अभी त लक्ष्मीजी के सपने में देखनी ह, ई इनकम टैक्स वालन के कइसे पता चल गइल? अब त लक्ष्मीजी के सपनों देखल गुनाह बा। हम कहनी कि सरकार हम सीधा-साधा आदमी हईं, बस एक साधरण नौकरी करेनी। हमरा घर मे कुछु

नइखे। एगो कडक़ आवाज में जबाब देलस- "छापा पड़ते सब यही कहते है। ज्यादा चालाकी नहीं, चुपचाप बैठिये।" डायरी के पहिला पन्ना पर लिखल फोन नम्बर 2260850 देख के पूछे लागल- " बताइये यह 22 लाख 60 हजार 850 रुपया आपकी वार्षिक आमदनी है या छमाहीं? पत्नी झुंझला के बोललीं- "आरे, ई हमार भाई के फोन नम्बर बा। चोर जइसन सब समान छीट देलनसन, पूरा खोजला पर घर में सब सिक्का रुपया मिलाके 4925 रुपया मिलल। तीनों पसीने-पसीने हो गइलन सन। ओमे से एगो पूरा नाम पूछलस त हम आपन नाम प्रेम कुमार शर्मा बता देनी।ओकनी के चेहरा उतर गइल। ऊ प्रवीण कुमार शर्मा के इहाँ छापा मारे आइल रहलें। अब तीनो हाथ झारत चल देलन सन आ आवाज सुनाइल- "एकदम कंगाल है।" छापा परे के बात मोहल्ला में तेजी से फैल गइल रहे। अब मोहल्ला में लोग हमार नाम इज्जत से लेवे लागल । साथ-साथ एक फायदा आउर भइल, जतना रेजगी खुदरा भुलाइल रहे, सब मिल गइल आ घर के सफाइओ हो गइल ।

✍**ममता सिंह ,नोयडा**

हम हूं बन जाई का

काल्हे कहत रहुवे एक ठो रोगी,
हमहूँ बनूँगा जनेऊधारी जोगी।
अब राहुल होखै या होखै योगी,
जे जइसन करी ओइसनै भोगी।

मस्जिद वाला होली ना मनावे,
मन ही मन अब बैर उपजावें।
जाति - धर्म में सब अझुराला,
पंडित -मौलवी सब पगलाला।

चर्च वाला अब बढ़ावे ला आबादी,
एक छोड़ करै चार - पाँच शादी।
भारत में उहे सभ्यता आवे लागल,
शादीशुदा लोग बा दूसरों से बाझल।

शादी तलाक फेरू हो गइल शादी,
जइसे विदेश में करें लो दादा दादी।
हिंदू लो अब गर्व से बनता संता क्लाज,
करनी पर अपना ना लागे तनिका लाज।

हे! प्रभु आई करीं अब रऊरा शासन,
न्यायाधीश हो गइल बा लो दुशासन।
राऊरे ही देशवा में रऊवा रहतानी टेंट में,
कवनो फर्के ना बुझाला लेडिज आ जेंट्स में।

जे जे भी हमार इहाँ बानीं लो शुभचिंतक,
जल्दी से बताईं लो गिनबै हम तीन तक।

✍संजय सिंह राजपूत
बागी बलिया उत्तर प्रदेश

हम छोड़ दी

सोचनीं कि लिखीं तहार तारीफ
लिख देहलस कलम वफा के बदले बेवफाई
लिखल छोड़ दीं कि कलम तोड़ दीं
सोचनीं लिखीं गीत तहरा पाजेब के धुन पर

आवे लागल अवाज बेवफा बेवफा
आवाज सुनल छोड़ दीं कि पाजेब तोड़ दीं
गइनी बहारे चमन में देखनीं गुलाब
खिलल फूल रहे जवानी पर शबाब

चूम लेहलस कदम के काँटा
जख्म भर दीं कि फूल तोड़ दीं
सोचनीं कि बैठीं नील गगन के नीचे
जहाँ भइल रहे वादा जीवन कियारी के सींचे

वक्त भी गुजर गइल, जइसे हाथ से रेत
वक्त के तहार यादो गवारा नइखे
वक्त के मोड़ दीं कि याद के छोड़ दीं
सोचनीं कि चाँद से चेहरा के हो जाईं चाँद में दीदार

काली घटा के भी रहे चाँद से प्यार
ले लेहलस चाँद के अपना आगोश में
काली घटा के तोड़ दीं कि इंतज़ार छोड़ दीं
साँसो के बा तहरे नाम के सहारा

कइसे होई आब बाकी ज़िनिगी के गुजारा
ज़ालिम जमाना मारत बाटे ताना
याद बहुत आवत बा हमार वफा के तराना
साँस ली कि लेहल साँस छोड़ दीं।

✍अभियंता सौरभ कुमार
जिला सिवान बिहार

लंका में अंगद

माई रे घर में भागि आउ उहे बनरा फिर आइल बा ।
दुअरा पे दुइ के पटकले बा और दाँत काढ़ि रिसियाइल बा ।।

लइका के सुनि के बात तबै जे जहाँ रहल थरथरा गइल ।
गगरी घूंचा औ मटका में पानी ले ले तैयार भइल ।।

ई बात सभा में बइठल जब दसशीश के काने में पहुँचल ।
जब तक ऊ कुछ निर्णय लेवे बनरा ओहिजे आ धमकल ।।

बोलल लंकेश- "अरे मरकट, एह बेरि बेटा, ना बचबे ।
तोर सात पुस्त थरथर काँपी इहवाँ से जीयत ना जइबे।"

बानर बोलल कि- "हे रावण, मति आन्हर, अँखियो आन्हर बा ।
हम दुसर दूत रघुनायक के जेकरा से काल भी काँपत बा।"

रावण के भृकुटी टेढ़ भइल तनी- "परिचय दे त रे बनरा ! ।
खुद अपने बोलत ठाँव न बा आ हमके बोलत बा अन्हरा ?"

बिहसल बानर-" सुन रे चोरवा, तनी करिखा पोत ले मुँहवा में ।
बाली के बेटवा हम अंगद दबलस जौन तोके काँखवा में।"

" हमरे पुस्तन पर अभय दान बाटे नारायण के सीधे ।"

"तनी सोच ले, तोर कुकर्मन से कि के रोई तोरे पीछे ।"

" अब्बो कुछ नइखे बिगड़ल छोटका के अनुगामी बन जो ।
जाके रघुबर के चरणन में परिवार सहित तेहूँ गिरि जो।"

" नाहीं त अंत निकट बुझिहै, तिंहुँ लोक में ठौर न ते पइबे ।
सिया त पिया के संग जइहैं परिवार सहित तें नरक जइबे।"

रावण गुस्सा में लाल भइल-" चुप हो जो बहुत बोल भइले ।
तोर मूड़ी कटला से पहिले ओह तपसिन के सुमिरन कइले।

हम दिग्विजयी हम महाबली तिंहुँ लोक में डंका बाजेला ।
बानर भालू और मनई का देवेन्द्र भी थरथर काँपेला।

ऊ बचि के भागि गइल त एह में सारा दोष विभीषना के,
बाकी अब ते त ना बचबे हम काटब तोरे रसना के। "

अंगद तब आपन पैर पटक सुमिरन कइले रघुनंदन के ।
धरती डोलल सब काँप गइल ई रूप देख एक बंदर के।

" हम रामदूत हमके मारल कालो के बस में ना रावण,
हम हारब एहि क्षण सीता के यदि टार दे आके मोर चरण। "

एतना सुनते एक एक करके सब निसिचर जोर लगावेलें ।

जब नेकुरा बल सब ढहि गइलें तब गोलि बनाके आवेलें ।।

जब सगरी योद्धा थक गइलें लेकिन पांव न डोल सकल ।
तब सिंहासन के छोड़ दसानन पाँव उठावे स्वयं चलल ।।

अंगद बोलल कि-" हे रावण, हम अदना सेवक रघुबर के,
उनहीं के जाके चरण पकड़ तब जान बची तोरे कुल के।"

एतना कहि के जब अंगद कूदले अउरि शिविर लौट अइले
लंका में जे लोग रहले सबकर हड़वा तब काँप गइले।

✍आशीष त्रिपाठी
ग्राम - परशुरामपुर
पोस्ट - पिपराइच
जिला - गोरखपुर
उत्तर प्रदेश

फाग गीत

लागेला रस में बोथाइल परनवा
ढरकावे घइली पिरितिया के फाग रे।

धरती लुटावेली अँजुरी से सोनवा
बरिसावे अमिरित गगनवा से चनवा
इठलाले पाके जवानी अँजोरिया
गावेला पात-पात प्रीत के बिहाग रे।

पियरी पहिरि झूमे सरसो बधरिया
पछुआ उड़ा देले सुधि के चदरिया
पिऊ-पिऊ पिहकेला पागल पपिहरा
कुहुकेले कोइलिया पंचम के राग रे।

मधुआ चुआवेले मातल मोजरिया
भरमेला सब केहू छबि का बजरिया
भींजेले रंग आ अबीर से चुनरिया
गोरिया बुतावेलिन हियरा के आग रे।

✍डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल

फागुन के नवगीत

फागुन के आसे, होखे लहलह बिरवाई।
डर ना लागी, बाबा के नवकी बकुली से
अङना दमकी, बबुनी के नन्हकी टिकुली से
कनिया पेन्हि बिअहुती, कउआ के उचराई।
बुढ़वो जोबन राग अलापी, ली अङड़ाई
चशमो के ऊपर, भउजी काजर लगवाई
बुनिया जइसन रसगर, हो जाई मरिचाई।
छउकी आम बने खातिर, अकुलात टिकोरा
दुलहिन मारी आँखि,बोलाई बलम इकोरा
जिनिगी नेह भरल नदिया में,रोज नहाई।

✍डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल

असो जाए फगुनवा ना बाँव सजना

असो जाए फगुनवा ना बाँव सजना
कुछो हो जाए अइह तू गाँव सजना।

काल्हु बुधनी के डेगे ना हेठा परे
ओहके फुरसत ना हमरा से बातो करे
ओकर दुलहा जे पाती पेठवले रहल
संग रङ आ अबीरो भेजवले रहल
बा बढ़ल ओकर टोला में भाव सजना।

असो छवरी के अमवो बा मोजरा गइल
पिछुवरिया के कनइलवो कोंढ़िया गइल
रोज गाके कोइलिया डोलावेले मन
तोहसे मीले के सपना देखावे सजन
कान तरसेला सूने के नाँव सजना।

रोज रोटी आ दूधे कटोरा भरीं
तनी उचरऽ ए कागा निहोरा करीं
आँखि पथराइल देखे में रहिया पिया
केहू बूझे दरद ना विमल के हिया
लागे केकरो ना बोली सोहाँव सजना।

हो गइल दिन बहुत रंग खेलल पिया
मुसकराइल हँसल अउर चहकल पिया
अबकियो जो ना अइबऽ त कइसे जियबि
कइसे तोहरा बिना हम ससुरवा रहबि
तोहरा बिन लागे घरवा उबाँव सजना।

✍डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल

लोक जीवन आ नारी

लोक जीवन में नारी कबो उपेक्षित नइखीं रहल।

लोक में हमेशा से नारी जीवन के पूर्णता के आधार मानल गइल बाड़ी। एकर सबसे बड़का उदाहरण गाँवन में देखे के आजो मिलेला, जे पुरुष के बियाह ना होला ओके 'बाँड़' कहके लोग आनन्द लेवेला। एह शब्द के

भावार्थ अपूर्ण, अक्षम आ अधूरा होला। जइसे जवन बैल हर चले में असमर्थ होखे ओकरो के बाँड़ कहल जाला।

मतलब ई कि लोक में जेकरा नारी के साहचर्य नइखे मिलल ऊ अधूरा बा।

पत्नी के अर्धांगिनी कहल जाला-मतलब शरीर के आधा भाग।शरीर पूरा तब मानल जाला जब स्त्री आ पुरुष दुनों लोग बियाह के पवित्र बंधन से बन्हा के एक हो जाला।

एहि से स्त्री के बिना कवनों पूजा पाठ अपूर्ण मानल जाला।

व्यावहारिक रूप से भी देखल जाव त स्त्री घर परिवार के रीढ़ होवेली। स्त्री के बिना 'घर' के निर्माण सम्भव नइखे, भले मकान केतनो बड़ बना लिहल जाव त का हs!

एगो लोकोक्ति बड़ी प्रसिद्ध बा 'बिन घरनी घर भूत के डेरा।'

मतलब कि घर में जबतक स्त्री ना होखे घर-घर ना अस्त-व्यस्तता के दुसरका नाम हो जाला।

एगो अऊरी कहावत एहि से मिलत-जुलत कहल जाला- 'घरनिए घर आ हरवाहे हर', मतलब कि बिना घरनी के घर आ बिना हरवाह के हर के चलल असम्भव बा।

बेटी के महत्व के बारे में भी कहल गइल बा कि 'बेटा एगो कुल रखेला,बेटी दुनो कुल राखेले' मतलब कि बेटी एगो ना बल्कि दु दु गो कुल के आन-बान-सान होली। मतलब साफ बा लोक में बेटा से अधिका महत्व बेटी के दिहल जात रहल बा।

जब एगो स्त्री माई के रूप में होली त केतना आदर जोगे मानल जाली, एकर उदाहरण के रूप में एगो कहावत कहल जा सकेला-' मग्घा बरसे, माई परसे, भूखा ना तरसे' मतलब कि मग्घा निछत्तर के बरखा आ महतारी के छुअला मात्र से भूख ताप ख़तम हो जाला। महतारी के ममिता के वर्णन के रूप में कहल जाला- 'माई के मनवा गाई जइसन, पुतवा के मनवा कसाई जइसन' ।

गाँव देहात में अक्सर उदाहरण देखे आ सुने के मिल जाला कि जदि घरनी अच्छा मिल गइल त घर के तरक्की हो जाला, घर स्वर्ग हो जाला आ घरनी के अच्छा ना मिलला पर कई परिवारन के पतन भी हो जाला।

जइसे एगो लोकोक्ति बा-'जहाँ गइली डाढ़ों रानी, उहवाँ पड़ल पाथर पानी।'

अइसन मानल जाला आ देखहूँ के मिलेला कि कवनों घर के लड़िकन बच्चन के पहिलका शिक्षा आ संस्कार महतारी से ही मिलेला आ ओकर छाप ओकनी के व्यवहार में लउकेला। तबे त कहल गइ बा-'जइसन माई ओइसन धिया, जइसन काकर ओइसन बिया'।

हमेशा से ई मानल जात रहल बा कि एगो मरद के कइगो बियाह कइल नारी के दुर्दशा के बड़हन कारन रहल बा आ एकरा वजह से घर भी टूट जाला। एह से लोकोक्तिन में एकर कुपरभाव के वर्णन खूब मिलेला, जइसे- 'तीन बैल, दुइगो मेहरी,गइल घर आ खेती ओकरी' एगो अऊरी लोकोक्ति देखीं- 'गोंयड़ा के खेती, सिरहाने के साँप, मैभा कारन बैरी बाप' मतलब के घर के लगे के खेती आ बिछावना के करीब साँप आ मैभा महतारी के कारन से दुश्मन भइल बाप, ई कुल दुःखदायी होलें।

बहुविवाह सौतिन के जनम देला आ सौतिन के कारण उपजेला सौतियाडाह। जवना के कारन घर में बेवजह झगड़ा जनम ले लेला।तबे त कहावत परचलित बा- ' सौति के डाह कठौती पर' आ एगो अऊरी देखीं- 'मोर सौतिन खइलसि दही, मोरा से कइसे जाई रही।' एह बिसे पर एगो अऊरी लोकोक्ति कहल जाला- 'सौतिन के बेटा के जान फेंका फेंकी में'।

घर-परिवार के नारी जबतक एकमत होली तबतक घर मे बरकत होला जइसहीं एकमत ख़तम हो जाला बाँट-बखरा से घर बिखर जाला। धन समपिरती सब बँटा के कम हो जाला आ खतम हो जाला, तबे त एगो लोकोक्ति कह रहल बा कि- 'सास पतोह में झगरा भइल, सूप दउरा में बखरा भइल।'

ई सब उदाहरन देखला के बाद बिना कवनो संका-सुबहा के कहल जा सकेला कि लोक में नारी के दरजा हरदम ऊँच रहल बा आ नारी हरदम सम्मान के बिसे रहल बाड़ी। खास तौर से गाँवन के बेवस्था के त रीढ़ रहल बाड़ी।

लेकिन समस्या तब से शुरू भइल बा जब से लोक समाज पर बाजारवाद, उपभोक्तावाद, वस्तुवाद आ पूँजीवाद हावी होखे लागल बा। जबसे टीबी पर एगो अदना सामान जवना के बच्चा से लेके बूढ़ तक..औरत से लेके मर्द तक एक समान रूप से इस्तेमाल करेला ओके बेचे ख़ातिर अर्धनग्न स्त्री के ओह 'माल' के प्रचार में इस्तेमाल होखे लागल बा।

जबसे स्त्री के तरक्की आ स्वतन्त्रता के मतलब बेहयाई से लगावल शुरू भइल बा,पश्चिमी सभ्यता के देखा देखी।

जबसे फिलिम उदयोग के लोग फिलिम के बैपार करे ख़ातिर कम से कम कपड़ा पहिरल स्त्री के 'हीरोइन' के रूप में पेश करे लागल बा लोग आ ई देखावे के कोशिश होखे लागल बा कि नारी स्वतन्त्रता के मतलब कम कपड़ा पहिरल होला।

जबसे गाँव-से-गाँव आ लोक से लोक के लोप हो गइल बा तबे से स्त्री 'देवी' (सम्मान) ना होके माल (वस्तु) के पर्याय हो गइल बाड़ी।

✍**सर्वेश तिवारी**
ग्राम-कल्याणपुर, भोरे,गोपालगंज(बिहार)

जवानी के पलानी भहर रहल बा

हम नइखीं कहत देहिया कह रहल बा,
जवानी के पलानी भहर रहल बा।

हाथ बाटे काँपत आ गोरो थरथराता,
हीरो हिरोइन अब कहवाँ चिन्हाता।
अँखिया में मोतिया बिन पसर रहल बा,
जवानी के पलानी भहर रहल बा।

टुटले टुटत नइखे चना -चबेना हो,
तनका दूर चलते छूटता पसेना हो।
कान कमजोर डाँड़ अकर रहल बा,
जवानी के पलानी भहर रहल बा।

सुगर परेसर बढ़ल दूध मलाई छूटल,
गिरनी फटफटिया से ठेहुन फूटल।
महिया खतरा मनवा मचल रहल बा,
जवानी के पलानी भहर रहल बा।

कइल हुड़दंग सरवन के धउरावल,
मन परे एके सुरे ढेंकिया चलावल।
चिका कब्बडी खेलल गोर घहर रहल बा,
जवानी के पलानी भहर रहल बा।

पचत नइखे खाना दुइ बेर से बेसी,
पीयनी दवाई हम शीशी के शीशी।
फेसबुक पर आँख ना ठहर रहल बा,
जवानी के पलानी भहर रहल बा।

बाथरूम में एकदिन गोर बिछिलाइल,
चीर फाड़ कूल्हा में प्लेट ठोकाइल।
तरूआ संगवा कपरो लहर रहल बा,
जवानी के पलानी भहर रहल बा।

✍**दिलीप पैनाली**

गांव बोलावता

घर घरारी घोनसारी बरगद के, छाँव बोलावता,
आजा आजा ए परदेसी,आजा गाँव बोलावता।

अमराई में बोलत कोइल डोलत पात पीपर के,
देख मनोरम दृश्य धरा के,फफनल आग भीतर के।
पपीहा संगवे कागा के, काँव-काँव बोलावता,
आजा आजा ए परदेसी,आजा गाँव बोलावता।

महुँआरी महुआ कोंचाइल, फूल फुलल पलास के,
सनसनात फगुनाहटा दिनभर, बढ़ावता उल्लास के।
छमा छम बाजत घुंघरूवाला पाँव बोलावता,
आजा आजा ए परदेसी,आजा गाँव बोलावता।

गोर आलता हाथ महावर, ओढ़ले चुनरिया धानी,
लट धोइनी मलि-मलि के, माटी लगा मुल्तानी।
चंदन जस मह-मह महकत, हर ठाँव बोलावता,
आजा आजा ए परदेसी,आजा गाँव बोलावता।

पाकल तीसी पाकल गँहूआँ, रहरियो गदराइल,
सरिसो पियरका खरिहान में बोझा बान्ह धराइल।
नरिया में गिरावेला गेड़ी, उखाँव बोलावता,
आजा आजा ए परदेसी,आजा गाँव बोलावता।

✍**दिलीप पैनाली**
सैखोवाघाट
असम

आंगन पिया के

हर जिनगी के कहानी होला ऊ शुभ होखे भा अशुभ लेकिन कहल जाला कि अंत भला त सब भला। ठीक इहे कहानी रहे 'हरि' अउरी अउर 'गौरी' के प्रेम के। गौरी के ठीक से इयादो ना होई, कबसे ऊ हरि के पसंद बन गइल रहली.... समय बीतत गइल अउरी दुनो लोगन के बीच प्रेम परस्पर भाव मे आ गइल। हर रिश्ता के बीच मे संवाद एगो सबसे पोढ़ माध्यम होला आपन भावना अउरी विचार के व्यक्त करेके। उहे संवाद में ई जोड़ी लागल रहे। कई बरिस के तप के बाद ई जोड़ा बियाह में मुकम्मल हो गइल। हरि के मन मे हरेमसे ई कौतूहल रहे कि परिवार के संघे जवन आनंद बा ऊ दुनिया मे नइखे। ऊ समय- समय से घर मे गीत गा के ठहाका लगा के सबके मनोरंजन करस। गौरी जब रसोइ में रहस त गुलाब तुर के हरि उनकर बाल में खोंस देस, गौरी मुस्कान भर के हरि के मुँह देखे लागस। समय के साथ व्यवहारिक चीज के आगमन भइल ई दुनो बेक़त के जिनगी में।

गौरी- "राउर गाँव हमके बिल्कुल ना रुचेला, ना जाने कइसन सभे बोलेलें, केतना अलग-अलग ढंग से। राउर काका, बाबा आवेलन लोग, ना बोले के लूर ना कपड़ा पहिरे के लूर, हुँह! कबो-कबो बुझाला ई कहवाँ आके फँस गइनीं हम? जातानीं सुते हमरा सिर में दरद बा।"

हरि बेचैनी से कमरा में गौरी के पीछहीं पहुँचलन- "बस करऽ गौरी! तू त कहत रहलू कि रउआ साथ हम कहईं रह सकेनीं ,हर शय राउवे संघे बा। सबकुछ हमरा नीक लागी बस रउआ हमरा साथ मे रहीं। आ एमे बुराई का बा गौरी? इहे कपड़ा पहिने वाला अउरी इहे बोली संस्कार वाला लोग हमके अइसन परवरिश दिहल लोग कि आज हम कवनो लायक हो गइनी ..कवनो भाषा के लोग के बीच आपन बात राखेनि , तहरा खातिर गीत गावेनि ....ई सब तहरे खुसी खातिर कइले बानी, एगो साँच जिनगी देवे खातिर तहरा के....।"

गौरी-" हमके ना ठीक लागेला बस्स.....।"

कुछ दिन बीत गइल रहे अब गौरी पेट से रहली, उनकर मन अउर ना लागे जबकि हरि उनका के खुश रखे के लाख कोशिश करस।

गौरी के दीदी शहर में गौरी के बोला लिहली। गौरी के उहाँ नीको लागे...बाकी हरि के मन मे ई बात तूफान मचवले रहे कि हमसे नीक से बोल के गइलीं ह बाकी ई साँच बा उनका के इहाँ रहल पसंद नइखे। हरि मने-मन सोचस सब उनकरे खातिर त बा, ई घर, हमर हर पल उनके खातिर रहे, इहवाँ तक कि उनका खाना बनावत घरी उनका साथ रहीं ताकि अकेले में परेशान मत होखस....बाकी ना जाने का खोजतरी.? इहाँ शहर में कुछ दिन गौरी के नीक लागल बाकी गौरी जब उदास रहस त केहू ओ तरह से ना मनावे जइसन की हरि। आपन उदासी अउरी मन के उलझन के हँसी में दबा के जीजा दीदी संग रहस बाकी करेजा में ई बात चुभत रहे कि ऊ फोन काहे ना कइलें ..आ गौरी भी ना कइली।

आज फिर उदास बारी गौरी। उनकर जीजा बात के भांप गइले त सांउड के बटन दबा दिहले गीत बाजे लागल- "जीने के चार दिन बाकी है बेकार दिन। गौरी के मन कहत रहे कि एहि गीत प सौ गुना भारी बा हरि के ऊ गीत जवना से उहाँ के हमके मनावत रहनी-

"काहें खिसियाईल बाड़ू जान लेबू का हो?
बोलऽ हमर सुगनी परान लेबू का हो" .

.....बाकी आज ना ऊ गीत रहे न ऊ प्रीत से भरल कंठ के आवाज। आज गौरी नहा के बाथरूम से निकलली त उहि शहर के उनके दीदी के सहेली आइल रहलीं ऊ कहली- "अच्छा गौरी एगो बात पूछीं? .....तू पेट से बाड़ू न तहरा 'उहाँ के' नइखन का?"

" मने का कहे चाहऽ तरु?" - गौरी झल्ला के पूछली।

"ना, ऊ तू काफी दिन से एहिजे बाड़ू न, आ तहरा के आज सोझा से पहिला हाली देखनीं। मांग में सेनुर भी

नइखे। तहार मरद बाड़े नु?" तले गौरी के दीदी आ गइली।

जब तक गौरी के दीदी आपन सहेली के बात समझावे कोशिश करती तबले गौरी के आत्मा काँप उठल उनकर हाथ से जूड़ा बनावल छूट गइल। आँखि में हरि खातिर मोह लिहले बिस्तर पे जा गिरलीं। अइसन बुझाइल जइसे केहु उनके सुहाग के गारी दिहल.....मानो पाप लाग गइल होखे गौरी के..... उनकर जेहन में उहे गीत इयाद आइल जवन हरि उनके सुनावस अक्सर..

"अँगना दुआर सगरो महल अटरिया,
तोरा बिन नीक नाही लागे रे सँवरिया।"

आज हरि के पैर में चोट लाग गइल बा। माई बाबू तीरथ गइल रहल लो हरि खाना बनावस कि आपन दरद देखस। आज बहुत कमी खलत रहे गौरी के तबहूँ तेल गरम कर के खुदे लगावत रहलें हरि।

आज कुछ खइले नइखी गौरी। जीजा के काम पर जाते दीदी से कहली-" दीदी हमके घरे जाएके बा। "

"का भइल गौरी, केहू कुछ कहलस ह का?" - दीदी पुछली।

"ना दीदी, हमार मन कइसन दु होता, बुझाता उहाँ के ठीक नइखीं , हमर मन बड़ी घबराता दीदी। उहाँ के ना जाने कइसे होखब? हमके हमरा घरे छोडवा द दीदी, अब हम बस्स उनकरे पास जाएम।"- कहि के गौरी दीदी के अँकवार देके रोए लगली।

जीजा -" तहार दीदी हमके सब बतवलीं गौरी, तू परेशान मत होखऽ, अभी त एक महीना हमके छुट्टिये नइखे।

आज दीदी से जबरन विदा लेके जातरी गौरी अकेले रास्ता में। उनके कुछ ठीक ना लागे बस्स उनके हरि के चिंता ध ध काटे।आपन हंसी आपन ओढल साल में दबा के रास्ता बितावत गइली। आपन चौराहा पे टेम्पू से उतरली तले गाँव के एगो चाची भेंट गइली- "अरे तू हरि बहु हउ न? बाप रे! कतना दिन बाद देखतानी हो दुलहिन, तँहके? अइसे नइहर होला ? आ ऊ हरिया अभागा आपन गोड़ में चोट लगा लिहल ऊ घाव ढेर हो गइल बा बहुत सूजन आ गइल बा.....

गौरी-" कइसे अम्मा का भइल रहे, उहाँ के ठीक बानी नु?"

चाची -" रोआ मत, तहरा मालूम नइखे? फोन फ़ान ना होला का तहरा लोग में ? बोल न रे दुलहिनिया। तहनी के छुट्टी छुट्टा नइखे न भइल?"

गौरी के यात्रा के थाकल हारल शरीर रहे, ऊपर से चाची के बात, गौरी के करेजा पे बज्रपात जइसन बुझाइल। गौरी के कदम अतना तेजी से घर के तरफ बढ़त चल जाता कि और केहू न पूछ लेउ कुछ। घर चहुप के देखली त घर के उहे रंग रहे उहे दुआर के फूल पौधा बाकी आज गुलाब ना फुलाइल रहे जवना के रोज तुर के हरि उनकर जुड़ा में खोसत रहलें। भीतर जाके देखली त हरि आपन पैर में रूई ध के पट्टी बान्हत रहले.....उनकर नजर गौरी प पड़ल त देखते रह गइले.....! जब तक उनकर मुँह से कुछ निकलत उनकर मुँह हाथ से ढांक लेहली गौरी। आज गौरी हरि के सीना पे कपार ध के बस्स रोवल जातरी.... उनकर आंसू से हरि के करेजा के आग बुझ गइल.....हरि के आँखो में आँसू रहे जवना के आपन अँचरा से पोछ दिहली गौरी। गौरी आपन झोला से निकाल के दीदी के दिहल लिट्टी हरि के अपना हाथ से खियावतरी। हरि आपन हाथ आपन गर्भवती पत्नी के पेट प रख के कहले- "गौरी अब हमनी के आपन नेह के आँसू से इनकर जिनगी के सींचल जाई।"

गौरी के मुँह में हरी लिट्टी के तुर के डाल दिहलन। गौरी हरि के बात रखे खतिर रोआई के साथ आज लिट्टी भी खातरी.....

गौरी देवाल से टेक लेके बइठ गइली। हरि के हाथ गौरी के माथा सहलावत बा.....गौरी के आत्मा फिर भर गइल हरि के स्पर्श पाके...ऊ आँख बंद क के बस्स हरि के हाथ आपन कपार पे महसूस करेके चाहतरी....!

हरि एक बार फेर से गुनगुना देले...

" जब जब याद आई पिया के दुलार तोहरा
तब तब काटे धाई अँगना दुआर तहरा"....
जब जब...

✍ **अमन पाण्डेय**
मेंहदावल (सन्त कबीर नगर- उ.प्र)

कँवल कदलिया जस मुखड़ा के ललिया

कँवल कदलिया जस मुखड़ा के ललिया
कँवल कदलिया जस मुखड़ा के ललिया
घुंघटा से झाँके जइसे चंदा रे बदलिया।
झिलमिल तारा से सजल सिलिक सरिया
लिलरा प चमके बिंदी जइसे रे बिजुरिया

ओठवा के लाली जइसे पंखुड़ी गुलाब के
गोरिया लाजालु काहे दाँतावा से दाब के
गलिया के चुमे तोहार कानवा के बलिया
घुंघटा से झाँके जइसे चंदा रे बदलिया।

कँवल कदलिया जस मुखड़ा के ललिया
घुंघटा से झाँके जइसे चंदा रे बदलिया।।
देवलोक के परी तू अइलू आसमान से
दिलवा में ढुकि गइलू कवना विमान से

सावन घटा तोहर लामी काली केश हो
घुंघटा हटा द सुनर देख लिहीं भेस हो
रूनझुन बजा चलि के पाँव के पयलिया
घुंघटा से झाँके जइसे चंदा रे बदलिया।

कँवल कदलिया जस मुखड़ा के ललिया
घुंघटा से झाँके जइसे चंदा रे बदलिया।।
रजनीगंधा जस महकेला देहिया दूर से
चूड़ी कंगन खनके तोहार गोरी गुरूर से

झील जस अँखिया प पलक के पुल बा
घुंघटा उठा द फिर मुअल कबूल बा
मुँहवा प काहे हमरा राखेलू हथेलिया
घुंघटा से झाँके जइसे चंदा रे बदलिया।

✍**विमल कुमार राय**
ग्राम +पोस्ट-जमुआँव
थाना-पीरो ,भोजपुर, बिहार

बुद्ध महोत्सव गीत

प्राण समर्पित कइनीं जहाँ बुद्ध भगवान हो,
नगरिया महान हो गइल।।टेक।।

बुद्ध महोत्सव में मनोरम, धरिके ध्यान हो नगरिया;
महात्मा बुद्ध के महिमा गावे, धरती माटी के मँहकावे;
बुद्ध के कण-कण में संदेश, जहवाँ टिकहीं न पावे क्लेश
जवनी नगर में पहुँचे सगरो जहान हो।
नगरिया महान हो गइल।।टेक।।

माटी गीत खुशी के गावे बड़हन आपन भागि बतावे;
केतना हिय में प्रेम समाइल महात्मा चरण इहाँ चलि आइल
जहाँ पर बुद्धदेव जी कइनी परिनिर्वाण हो;
नगरिया महान हो गइल।।टेक।।

चीनी, तिब्बती वर्मी आवें, अपनी श्रद्धा के देखलावे;
केतना पावन श्रद्धा लउके, मनवाँ अइके खातिर कुहुके
महात्मा बुद्ध जहाँ पर कइनी कल्यान हो;
नगरिया महान हो गइल।।टेक।।

जेकरा जीनिगी साँझि बुझाला, कुशीनगर अगर आ जाला
छुवले चरण महात्मा जी के जिनिगी में बदलाव बुझाला
छुवते चर हो जाला जिनिगी के बिहान हो
नगरिया महान हो गइल।।टेक।।

नगर के अइसन बा निपुनाई, सनेसा बुद्ध के कण-कण गाई
कुशीनगर जे ना आ पाई भारत के मुख्य चीज ना पाई
श्रद्धापूर्वक काया देखे सकल जहान हो
नगरिया महान हो गइल।।टेक।।

आवें देश-देश के यात्री, धरती भइली सती विधात्री
कुशीनगर बुद्ध के गाँव जेकर विश्व में फइलल नाँव
"पंकज" मचलि के झूमे गावें तूरें तान हो
नगरिया महान हो गइल।।टेक।।

✍**रमाशंकर द्विवेदी उर्फ "पंकज बिहारी"**

ठाठा के हँसीं बेमारी भाग जाई

घटना एगो देखनींहँ जब रहनी जात कमाए,
एक छाँटल कंजूस आदमी, काशी गइल नहाए।
गंगाजी के ऊँच दार्ह प जसहीं माथा टेकल,
भारी चिंता मन में उपजल जब पंडन के देखल।
गुना-भाग गनना करि रहलन बइठ बिछवले दरी,
अनघा चाहे नीक थोरिको देवहीं के कुछ परी।
कपड़ा लता लपेट सूम जी एक कोस जा फरके।
धोए लगले मलिन देह के मलिके खूब सँपर के।
एही बीच भगवान बिसुनजी अइले पंडा बनि के।
ज'ले निकसले सूम गंग से ठाढ़ सामने तनि के।
धइलसि बड़हन सोच मगज में ई कहवाँ से टपकल?
तब तक ले पंडा जी कहनीं- "हे लीं फूल अछत जल।"
"हे जजमान, दच्छिना देके खूब बिटोरीं पुन फल।
आजु आज के साज सँवारीं तरसों परसों आ कल।"
तिमिलाइल कंजूस उचरले- "कतिने बेरि नहइनीं,
कइसे दे दीं आजु कि अगते जब देबे ना कइनीं। "
बाबा कहनीं- "कऽ दऽ बहनीं, कुछ भेंटे के चाहीं।
बेगर दान-दच्छिना लिहले इचिको टकसब नाहीं।
तब कहले कंजूस कि बाबा कबले घाट अगोरब?
भलहीं निकसे जान देह से, आपन प्रन ना तोरब।
पंडा बाबा छोभे कहले- "अति अपमान न झेलब।
देह तजब आपन नाहीं त, तहरे जान धकेलब।"
हदसल अस कंजूस उचरले अपन प्रान का डर से-
"महज पाँच पइसाही देहब, ऊहो अपना घर से।
बीच राहि से झपटल भगले, सोचत बिपत पराइल,
घरे चहुँपते बेटा कहलसि-"दुअरे पंडा आइल।"
भारी फिकिर सतावे लागल धइले हाथ कपारे,
"हे भगवान, कइसना पंडा दिहलऽ थोप लिलारे।"
खबर भेजवले घरे नइखन जाईं कहियो आइबि।
बाबा कहनीं सँझियो ले हम भेंटे क के जाइबि।
भइल बहाना झुठहूँ घर में रोहा-रोहँट भइले,
लरिका जा के कहलस बाबा, बाबू तऽ मरि गइले।
बाबा कहनीं - "बड़ा दुखद बा, राम राम गुहराईं,
हमरो फरज बनत बा इनका फुँकिए के घर जाईं।'
घबरइले कंजूस निकलले मूठी बन्हले दरब-
"पँचपइसाही के फेरा में, जिअते जान ना जरब।"
हिरदानन्द बिसाल कहेलें खूब कमा के धरीं,
बँटला से धन ना ओरियाए पर दान-पुन कुछ करीं

✍कवि हृदयानंद बिशाल

केकरा प करीं बिसवास हो

केकरा प करीं बिसवास हो,
सभे बा दुशमनवा।

अँगुरी के पोर धके पहूँचा पकड़ेला
बतिया के बन्हन में हमके जकड़ेला
केकरा से करीं हम आस हो
भरि आवे नयनवा।

पंडित पुजारी मदारी भइल बा,
तन पऽ फुलेल मन लउके मइल बा,
भीतर बा भेड़िया निवास हो
मोर तड़पे परनवा।

चहकत चिरइयाँ पो टाही लगवले
हरियर लाल रंग चोला रंगवले
मेटे ना कबहूँ पियास हो
डर लागे समनवा ।।

✍विबेक पाण्डेय, आरा, बिहार

`******`

जरिकट्टू

जे जरि से कटल बा
का ऊ कहीं सटल बा ?
जवन फसल मर गइल
का ऊ कबो फूटल बा ?
माई खातिर बबुआ सोना बा
माई ला बबुआ के रोना बा
आपन बबुआ बेशकीमती होलन
बाकी माई ला टोटका टोना बा
करम के फल कबहूँ मिलबे करी
नीमन करम होई तऽ फरबे करी
जेकरा जांगर में जंग लागल बा
ऊ आन के देखके जरबे करी

✍विबेक पाण्डेय, आरा, बिहार

लालच

एक समय के बात हँ, जब हम कवनो काम से गाँव के रस्ते होके जात रहनीं त कुछ लरिकन के आपस में खेलत देखनीं, एगो फेंड़ के नीचे। जब बचपन के बात इयाद आवेला त मन में हुल्लास भर जाला काहे कि ओह समय के बाते कुछ अउरि होला। एक दूसरा से लड़ाई-झगड़ा, मार-पीट आ तुरते अइसन मेल-मोहब्बत, शिकवा- शिकायत कि जनि पूछीं।

समाज में कुछ अइसनों लोग होलें जे लइकन के देख के जरबो करेलें। लइकन के हँसी उनुका फुटलो आँखि ना सोहाय, देखलो ना चाहस।

खैर, कवनों बात ना, आपन- आपन सुभाव अउर समझदारी ह, लइका त भोला होखबे करेलसन्, छल प्रपंच से परे, ओहनीं कुल्हि के दुनियाँ के प्रपंच के का मालूम कि दुनियाँ में का का होता, केकरा से दूर आ केकरा करीब रहे के चाहीं?

जेही पेयार से बाबू कहि के माथा प हाथ रखल आ कुछ खाए खातिर दे दिहलस त ओहि से घुल मिल जालऽसन। लेकिन जब केहू के नियत खराब होखे त एगो अबोध लइका का बूझता, ओकरा संघे केहू घात भी क सकेला। अइसने घटना एगो रामपुर गाँव के ह। ओह गाँव मे एगो धनी आ सम्भ्रांत परिवार रहे शम्भु प्रसाद के, जिनकर दूर-दूर ले नाँव सभे जानत रहें। बहुते नेकदिल इंसान रहले केहू के मुसीबत में सबसे आगे खड़ा होखे वाला शम्भू प्रसाद ही रहलें। उनुकर ज्यादा-से-ज्यादा समय दूसरा के भलाई में ही गुजरे। पेशा से किसान, खेती-बारी ढेर रहे। भगवानों सौ में एगो-दुगो अइसनो पीस बनाइए देले, जवन दोसरा के दरद के समझ सके अउर ओकर दवा अउर मलहम बन सके। धन-धान से भरल - परल शम्भू प्रसाद के दुगो लइका सूरज अउर चंद्रमा, बेटी शीतल दुनू लइकन से छोट रहली, पत्नी सुशीला बहुते सरल सुभाव के हरदम हँसत रहे वाली, खुश रहस अपना परिवार में, अउर दोसरा के पीड़ा के समझे वाली घरेलू महिला रहली।

बाकी शम्भू प्रसाद के बढ़ंती आ शोहरत देख के उनहीं के पटीदार लोग बड़ा जरे, इहाँ तक कि कई बेरि कोट-कचहरी भी हो गइल रहें।

बस थोड़ा-सा जगह जमीन के हिस्सा के लेके, जवन खाता बही के तहत शम्भू प्रसाद के ही रहे। सभे जानत रहे कि बँटवारा के समय घर के सोझा जवन जमीन रहे, ऊ शम्भू प्रसाद के हिस्सा में परल रहे। आजु ओइजा दर दुकान हो गइल बा, बाजार लागता।

ओह बेरा त केहू कुछ ना कहल बाकी कुछ समय के बाद उनुके चाचा के लइका लो के तेवर बदल गइल,उनुका चाचा प्रेम प्रसाद के चार लइका रहले- संजय, मंतोष, सन्तोष, हरिलाल। ओह जमीन के टुकड़ा के जबरदस्ती हथियावल चाहत रहे लोग, जवना के कोट में सुनवाई हो चुकल रहे, शम्भू प्रसाद के पक्ष में। तबहूँ ऊ लोग माने प तइयार ना होखे लो'। उनुकर पटीदार, कमजोर आ अकेला जान के हरदम दबावे चाहे लो काहे कि शम्भू प्रसाद अपना माई बाप के अकेले लइका रहलें अउर उनुका चाचा प्रेम प्रसाद के चार लइका और चारो के चारो निकम्मा, ना कवनो काम, ना कवनो धंधा-पताई, बस दादागिरी।

उठा ना राखल लो अपना ओर से शम्भू प्रसाद के बर्बाद करे खातिर। गुंडों के सहारा लिहल लो, डरावल, धमकावल, सभ कुछ कइल लो, बाकी शम्भू प्रसाद अडिग रहले।

बस कहस भाई, काहे परेशान करऽ तारऽ लोग? हक त हमरे बनता, कानूनी तौर से। तबहूँ तोहन लोग नइख मानत। बताव लो, हम का करीं? झगड़ा झंझट हम नइखी चाहत बाकी तहन लो' बूझत नइख लो।

संजय - "तू नइख बुझत, सभ झगड़ा के जर तूही बाडऽ, तहरा समझ में नइख आवत कि हमनीं के का चाहऽतानी जा? जान के अनजान बनऽ ताड़ऽ, एकर अंजाम बहुत बुरा होई, बूझिलऽ।

खीस में कहि के चारो भाई उहाँ से चलि गइल लो, बुरा भला कहत।

शम्भु प्रसाद भी अपना घरे चुप- चाप चलि गइले बाकी संजय के बात शम्भु प्रसाद के भीतरी ले हिला के रख देले रहे। रात भ ओंघी ना लागल, सोचते सोचत कब बिहान हो गइल पता ना चलल।

कुछ समझ में ना आवे कि का करस? ना हँसल बने ना रोवल,

सुबह-सुबह चाय के चुसकी लेत रहले आ मने मन विचार करत रहले की रोज-रोज के झगड़ा झंझट से हम अब तंग आ गइल बानी।

अपना पत्नी से कहत रहले का कहत बाड़ू ओह लोग के नजर जब एगो छोट जमीन के टुकड़ा प बा त ऊ ओही लो के दे दिहल जाउ ताकि खुश रहे लो। भगवान के आशीर्वाद हमनी के संघे बा, कुछो के कमी नइखन कइले ऊ चहिहें त बहुत सारा जगह जमीन हो जाई।

दुनो जने मन बना लिहल लो कि दे दिहल जाउ रोज-रोज के कच- कच से छुटकारा त मिली।

अउर एने प्रेम प्रसाद के जेठ लइका संजय कुछ अउर करे के विचार क लेले रहले, ऊ त बस अब शम्भू प्रसाद के सबक सिखावे के फेरा में रहले उनुका ऊपर त खून सवार रहे, लागे कि शम्भू प्रसाद के मुवाइए के मनिहें।

कुछो करे खातिर तइयार रहले कवनो कीमत प ऊ जमीन के टुकड़ा चाहत रहे।

शम्भु प्रसाद का कुछ काम से शहर जाए के परल, भइल कि हम आवऽतानि लवट के त बइठ के सलट लिहल जाई।

शम्भु प्रसाद शहर से तीन दिन के बाद लवटले अउर देखले कि घर में चारो ओरी अन्हरिया छवले बा, केहू का चेहरा प मुस्कान नइखे केहू कुछो बोलत नइखे सभ खामोश बा।

बहुत देर के बाद झकझोरला प उनुकर पत्नी के मुँह खुलल आ भोकार पार के रोए लगली, पूछला प कहली की चन्द्रमा काल्ह से घरे नइखन आइल, कहीं उनुकर पता नइखे लागत कि कहा बाड़न? एतना सुन के शम्भू प्रसाद कपारे हाथ धऽ लिहले। एगो महज साढ़े तीन साल के लइका कहाँ जा सकता, अइसन त पहिले त कबो भइल ना रहे? फिर चंद्रमा के खोजाई शुरू भइल। थाना में गुमशुदगी के रिपोर्ट भी लिखावल गइल। फिर भी कुछ हासिल ना भइल शक के आधार प पुलिस जहाँ- तहाँ पूछ-ताछ करे बाकी कवनो पुख्ता सबूत हाथे ना लागल,जवना से चंद्रमा तक पहुँचल जा सके। चंद्रमा के महतारी के रो-रो के बुरा हाल हो गइल रहे। शम्भु प्रसाद बहुत चिंतित रहले, गइल त कहा गइल? सोच में डुबल रहस तले इयाद आइल संजय वाला बात, जवन धमकी के तौर प कहले रहले, अउर एने पहिले से ही पुलिस का संजय प शक रहे। शम्भू प्रसाद के कहला प पुलिस संजय के पकड़ के जेल ले गइले। बहुत पूछ-ताछ के बाद संजय आपन जुल्म कबूल कइले कि हम चंद्रमा के चॉकलेट कीने के बहाने गायब कइनीं। हम जमीन के लालच में आन्हर हो गइल रहनीं। हमारा कुछ ना बुझाइल अपराध करत बेरा बस लालच रहे ताकि शम्भू प्रसाद से मोट रकम आ घर के लग के जमीन फिरौती के तौर पे माँग सकीं।

चन्द्रमा आजु ले कहाँ बाड़े, बाड़े की नइखन? एकर खुलासा ना भइल काहे कि संजय के हाथ चॉकलेट देके फुसुलावे तकले सीमित रहे ओकरा बाद का भइल? चन्द्रमा के संघे केहू का मालूम नइखे। आजो सुशीला चंद्रमा के राह देखऽतारी आ एह आस में बाड़ी कि ऊ एह दुनिया में कतो बाड़े जरूर।

✍**दीपक तिवारी**
श्रीकरपुर, सिवान।

विद्या शंकर विद्यार्थी के सतवादी हरिश्चंद नाटक

नाटक पर कुछ लिखे खातिर हम अपना के अधिकारी नइखीं मानत। कारन कि न त हम नाटक ढेर देखले बानी आ न नाटक पढ़ले बानी। नाटक से हमार एतने जुड़ाव बा कि हमार बाबू (प्रसिद्ध नारायण वर्मा) रंगकर्मी रहलन आ जब तक ऊ नाटक लिखतो रहलन । हरेक पुत्र खातिर ओकर पिता एगो हीरो होला आ एही बोध के ललक में एक साल हमहूँ रामलीला में दशरथ के पाठ कइले रहलीं। नाटक से हमार एह से ढेर संबंध नइखे। हँ, एहूघरी हमरा परिवार के एगो कलाकार (अंजन श्रीवास्तव) फिल्म के स्थापित सिने कलाकार हउअ। लेकिन उनसे संबंध हमार लड़कपन भर के बा। बड़ भइला के बाद ऊ अपना शौक आ परिवार में बाझ गइलन आ हम अपना

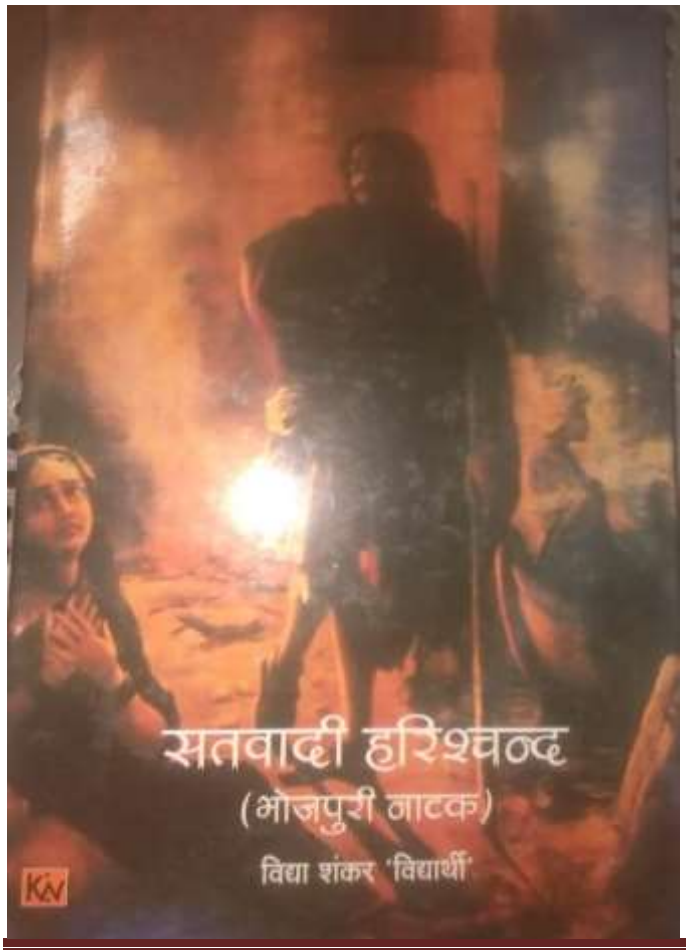

शब्द का जुआ में बाझ गइलीं न त हमरा शौक का बारे में ऊ जानत बाड़न आ न हम उनका शौक आ कला समझ का बारे में जाने के कोशिश कइलीं । साँच कहीं त जीवन अपना आप में एगो मौलिक अभिनय ह हमनी के दिन भर में अनगिनत बेर पिता - माता पति -पत्नी पुत्र - पुत्री साहब - अधिनस्थ पड़ोसी, पुजारी शिक्षक - शिक्षार्थी जइसन पार्ट अदा करे के पड़ेला आ मनस्थिति बदलत रहे के पड़ेला जवना के हमनी के आदी हो गइल बानी जा। अइसने एगो संबंध हमार आ विद्या शंकर विद्यार्थी जी के बा जवन पाठक आ लेखक बा। विद्यार्थी जी सतवादी हरिश्चंद नाटक के लेखक बानी आ हम ओकर पाठक बानी जवना के पाठ प्रतिक्रिया लिखे हम बइठल बानी।

भारतीय सभ्यता आ संस्कृति का इतिहास में सत्य पर चले वाला दानी हरिश्चंद के कथा के उपस्थिति आपन महत्वपूर्ण स्थान राखेले। ई कथा भारत का लगभग हरेक भाषा में लेखक लोग अपना अपना ढंग से उरेहले बा। आ कलाकार लोग आपन जीव जांगर लगा के मंच पर एके जीवंत बनवले बा। महात्मा गांधी अपना आत्म कथा में सतवादी हरिश्चंद नाटक के उल्लेख कइले बानी आ स्वीकार कइले बानी कि उनके एह नाटक से सत्य का राह पर चले के सजोर प्रेरणा मिलल। हिंदी में सत्यवादी हरिश्चंद नाटक के रचना भारतेन्दु हरिश्चंद का द्वारा भइल आ उनहीं का नाटक निर्देशन में ई नाटक पूर्वी उत्तर प्रदेश का कई शहरन आ मेलन में खेललो गइल। मंच पर ई बड़ा सफल उतरल रहे। एह नाटक के विद्यार्थी जी के पुस्तक के भूमिका लेखक डा0 नंद किशोर

तिवारी जी भी उल्लेख कइले बानी आ लिखले बानी कि विद्या शंकर विद्यार्थी का लिखल सतवादी हरिश्चंद नाटक पढ़े का पहिले उनकर धारणा रहे कि हरिश्चंद पर जवन नाटक भारतेन्दु जी लिख दिहलीं ऊ अब केहू ना लिखी। लेकिन विद्यार्थी जी के नाटक के पढ़ के धारणा निर्मूल साबित भइल आ उनुका कलम के दाद देबे के पड़ल। विद्यार्थी जी खाली नाटक लिखबे ना कइलन बलुक ओके खेलबो कइलन आ नाटक के फोटो वगैरह देखला से अइसन लागत बा कि मंच पर एकर उरेह बढ़िया उतरबो कइल। आ आज ई एगो खूबसूरत पुस्तक का रूप में पाठक का सोझा बा।

नाटक के जान संगीत होला । जे भाँड़ मंडलली के नाच नौटंकी देखले होई ऊ हमारा संगे महसूस करी कि अगर मंच पर संगीत न होखे त बढ़िया से बढ़िया नाटक फेल हो जाला। विद्यार्थी जी के नाटक में थोडे - थोडे दूर पर संवाद पद्य में बा एह से पाठक दर्शक के रूचि परिवर्तन होता आ एगो प्रचलित कथा के दुबारा सुने में उत्सुकाहट आ आकर्षण पैदा होता। नाटक के कथा के कथा वस्तु जवन प्रचलन में बा ओतने भर बा। राजा हरिश्चंद सत्य आ दान के संकल्प लेले बाड़न अपना राज्य में प्रजा का दुख तकलीफ में साथ देत बाड़न आ उनुका एह दान - सत्य का प्रभाव से इन्द्र के सिंहासन हिले लागत बा। इन्द्र आपन शासन बचावे खातिर महर्षि विश्वामित्र के सहयोग लेत बाड़न आ विश्वामित्र उनकर पूरा राजपाट दान में ले लेत बाड़न आ दक्षिणा में राजा हरिश्चंद वाराणसी श्मशान घाट पर कलुआ ललुआ डोम का हाथ में बिक जात बाड़न आ उनुकर रानी शैव्या बालक अबोध रोहिताश्व का साथ एगो वाभन का घरे दासी का रूप में बिका जात बाड़ी जहाँ फूल लोढ़त के रोहित के साँप काट लेता आ ऊ मर जात बाड़न। रानी मृतक रोहित के लेके मसान घाट जात बाड़ी जहाँ दानी हरिश्चंद बिना मृत चाल शुल्क लिहले दाह संस्कार के अनुमति नइखन देत। रानी आपन आँचर फार में मृत चाल शुल्क देत बाड़ी आ घाट पर ब्रह्मा, विष्णु, महेश, धर्म, सत्य, विश्वामित्र आ इन्द्र सब प्रकट हो जाता आ रोहित जिन्दा हो जात बाड़न। एह कथा के नाटककार अपना कलम का जोर से सलोर आ सोहावन कइले बाड़न। रोहित के दुधमुंही तोतरात भाषा नाटक में चार चाँद लगा देत बा प्रजा नं0 एक, दू, तीन के संवाद राजा हरिश्चंद का व्यक्तित्व के निखारत बा आ कथा के विस्तार देता। रानी शैव्या के संवाद में जवन विलाप आ हृदय फार देबे वाला संवाद बा ऊ नाटक देखत दर्शकन का आँख में आँसू जरूर भरले होई। हरिश्चंद के संवादो में जवन सिद्धांत के दृढ़ता बा ऊ प्रभावात्मक बा। नैपथ्य के शोर दृश्यांकन के दिशा निदेश भी वैज्ञानिक ढंग से दिहल गइल बा। जवना खातिर लेखक धन्यवाद के पात्र बाड़न।

ई एगो माटी के ऋण उतारे के घटना कहल जाई कि विद्यार्थी जी जिनकर मातृ जिला रोहतास ह आ जहाँ रोहित के जनम भइल रहे ओहिजा का भाषा में सतवादी हरिश्चंद नाटक के अवतरण कइलन आ सफलता पूर्वक कइलन। नाटक पढ़े लायक बा आ एकर प्रचार प्रसार होखे के चाहीं।

कुछ विचार एह नाटक के भाषा पर भी होखे के चाहीं। नाटक के भाषा भोजपुरी बा बाकिर ऊ भोजपुरी नइखे जवन लेखक का प्रचलन में बा आ जेके सँवारे - सुधारे में रामबली पांडेय, स्वामी नाथ सिंह, ईश्वर चंद्र सिन्हा, पांडेय नर्मदेश्वर सहाय, हवलदार त्रिपाठी सहृदय, आचार्य विश्वनाथ सिंह, पाण्डेय कपिल , कुबेर नाथ मिश्र विचित्र, राम जी मुखिया, भोला नाथ गहमरी आ अशोक द्विवेदी जइसन सम्पादक लेखक आपन जीवन खपा देले बाड़न। हम विद्यार्थी जी का भोजपुरी के खारिज नइखीं करत तर्क के कसौटी पर सवा सोरह आना सही बा। लेकिन ई भाषा प्रचलन में आवे वाला नाहीं बा। एह भाषा के निर्माण ओह जुग के ह जब उच्चारण पर उर्दू - कैथी के व्याकरण हाबी रहे आ मात्रा के नाम पर जेर जबर पेश वाद आ

अलिफ से काम चलत रहे। आज अगर मवका (मौका)अवरत (औरत) आ अइसने सैकड़न गो शब्द प्रचलन में ले आवे के कोशिश होता त ई अतीतजीवी सोभाव साबित होता। शब्द चित्र नियर होलन स। एह चित्र के बिगड़ले न भोजपुरी के भला हो सकत बा न हिंदी के जेकर प्रचार - प्रसार बहुत हो चुकल। विद्वान नाटककार विद्या शंकर विद्यार्थी जी के एह पर सोचे के चाहीं। भोजपुरी में समय का साथ विषय आ अनुभूति बढ़ रहलि बा एह से भाषा में भी प्रयोग जरूरी बा।.... एह टोका-टाकी का अलावे पूरा नाटक हमके पसन्द आइल ।

✍आनंद संधिदूत

दू गो भोजपुरी ग़ज़ल

1.
मर मर के लोग जिंदा बा इहाँ भागे नसीब से
खिरकी में बेसी सीसा बा इहाँ भागे नसीब से

हुलस जवन मन में रहे ऊ दरद में सना गइल
मुट्ठी भर आस अच्छा बा इहाँ भागे नसीब से

साँझ पहर में दाना चुग के पंछी जवरालन सँ
बेधल परिंदा भी जिंदा बा इहाँ भागे नसीब से

लगन के चाह आउर ह कुछ लगन के आँगन में
नीयत के उनुकर निंदा बा इहाँ भागे नसीब से

फाँके के मन तऽ विद्या बेर-बेर हउए उनुकर
हवा में लोग अब जिंदा बा इहाँ भागे नसीब से ।
2.
दरक गइल जब दिल केहू के त दिल ना रह गइल
सफर के बात सदा ना रहल मंजिल ना रह गइल

खुशी ना रह गइल त सकदम के जिनगी कवन ह
बिसराम खातिर छाँव ना रहल टिल ना रह गइल

जागल आँखी में चोन्हा आइत हँसी नीमन लागित
डूबे आ मुए के गम में इहँवा भी झील ना रह गइल

नदी से पुछलीं कि दरद के लेई के का करीं ई हम
नदी अफसोसे लागल, कहीं साहिल ना रह गइल

अहसे के वोजह भइल विद्या सियायत के बात से
पत्थलो के सहेके दिल हमार काबिल ना रह गइल।

✍विद्या शंकर विद्यार्थी

तनिक गील बाटे बदरा भरकि जाये दऽ

तनिक गील बाटे बदरा भरकि जाये दऽ
घेरे दुख जवन दिल में सरकि जाये दऽ

पीठ पीछे कइले बाटे भागि के चनरमा
होखेला अन्हार लागे जुगत के थथमा
रुकि सुस्तालऽ
थोरे जोहिलऽ जोहा लऽ
तनी आगे के अमवसा ढरकि जाये दऽ
तनी-----

साँड़ दुरभगिया का आवे बल भसवा
हर दर नाहीं लागे बल परिभसवा
पागल साँड़ आवे
नाहीं हाँके-हँकवावे
ओके अपने से दर से बरकि जायेदऽ
तनी----

थोरहीं में तोष करऽ जिन फेफिअइह
देखि के बाजार सावधान ना ललकिह
रूखा सूखा खालऽ
ठण्डा पानी पी जुड़ालऽ
मानि सन्त के कहनवा निबुसि जाये दऽ
तनी---'

✍आनन्द संधिदूत

आतंकवाद से दु दु हाँथ

देश के सोझा ढ़ेर चुनौती बाड़ी सन जइसे, गरीबी, जनसंख्या वृद्धि, निरक्षरता, असमानता अउरी बहुत कुछ, तबो आज के समय में विश्व क सबसे बड़गर समस्यन में से एगो समस्या के नाँव पूछल जाव त एगो बच्चो इहे कहि कि- 'आतंकवाद' । आतंकवाद मानवता खातिर एगो कोढ़ के बेमारी क रूप अख्तियार क ले ले बा । कोढ़ जवना अंग में लागेला ओके बर्बाद क के छोड़ेला अगर सही वक्त पर ओकर इलाज़ ना भइल त । आतंकवाद हमनीके देश समाज के अइसन जकड़ के रखले बा कि लाख कोशिश के बादो ई जरी से बिलात नइखे, जेतना जतन होता दबावे के ओतने ई विकराल रूप लेके सोझा आ जाता। एकरा से पूरा बिश्व पीड़ित बा, का विकसित आ का विकाससील । सभकरा नाकी में दम कइले बा ई आतंकवाद । आतंकवाद का ह ? कइसे बताई परिभाषित कइल जाव? इहे नइखे बुझात, काहे कि हर केहू के आपन-आपन ढंग बा समझावे के । अपना देश में आजादी के लड़ाई के समय अंग्रेज स्वतंत्रता सेनानी के भी आंतंकवादी समझ सन जबकि ऊ लड़ाई त आपन हक खातिर रहे। कई बेर हक़ो क लड़ाई लड़े वाला उग्र हो जाला, त सामने वाला ओके आतंकवादी समझ लीही? कुल्हिये हिंसा करे वाला आतंकवादी ना होला आ हर अहिंसावादी आतंकवादी ना होई ई जरुरी नइखे । आतंकवाद का मुख्य उद्देश्य होला सामाजिक आ राजनीतिक सिस्टम के चोटिल कइल आ आम जनता में दहशत फ़इलावल। अगर आतंकवाद के असर केहू पर ढेर पड़ेला त ऊ ह आम जनता। आतंकवादी समूह देश के सरकार पर आपन मांग के मनवावे खातिर जेकरा प जुल्म ढाहे लन स ऊ उनकरे भाई-बहिन आम आदमी होखेला जे निर्दोष बा, मासूम बा, जेकर सरकार भा आतंकवाद से दूर-दूर तक कवनो सम्बन्ध ना होला ।

आंतकवाद के समस्या का पाछे बहुते कारण बाड़न स ओहमें से कुछ मुख्य कारण बा जनसंख्या क तीब्र बढ़न्ती, राजनीतिक, सामाजिक, अर्थव्यवस्था, देश क बेवस्था के प्रति असंतोस क भावना, शिक्षा के कमी, गलत सोहबत, बहकावा में आइल, अंधानुकरण। एकरा अलावा आतंकवाद के अउ बहुते कारण हो सकता जेकरा से इंकार नइखे कइल जा सकत। आज काल आपन बात के मनवावे अउरी सही साबित करे खातिर हिंसा आसान तरीका लागता । आतंकवादी के अंदर समाज, देश के प्रति विद्रोह अउरी असंतोष क भावना होला । ढेर पइसा कमाए क भूख अउरी बिना मेहनत के रातों-रात अमीर बने के सपनों लोग के आतंकवाद के हाथ थामें खातिर आ गलत काम करे खातिर प्रेरित करेला । ई एगो छुआछूत क बीमारी नियन दिनोंदिन फइलत जाता। रोजाना नवका आतंकवादी पौध तइयार हो रहल बा । ऊ हमनिये नियन बहुत सामान्य लोग हउवन, जेकरा के ई जघन्य काम खातिर तइयार कइल जाला अउरी अपने समाज, परिवार देश के खिलाफ लड़े खातिर दबाव बनावल जाला । एह तरह से प्रशिक्षित कइल जाला कि अपना जिनिगी से भी मोह ना रहे , ऊ लड़त समय हमेशा कुर्बान होखे खातिर तैयार रहेलसँ। एगो भारतीय नागरिक के रुप में, आतंकवाद के रोके के जिम्मेदारी हम आप सभकरा पर बा ऊ रुकी तबे जब हम आप कुछ बददिमाग अउरी परेशान लोग के लालच भरल बातन में ना आवल जाइ ।

आतंकी समूह के खत्म करे खातिर आ आतंक के खिलाफ लड़े खातिर हमनीके देश ढ़ेर सारा पइसा आ संसाधन खर्च करेला । न जाने केतना निर्दोषन के

आपन जान गवावे के परेला । ओहिसे त आतंकवाद बहुते घाव देले बा हमनीके बाकी हाले में एक बार फेरु से आतंकवाद क दंश झेले के मजबूर भइल आपन देश जब 14 फरवरी 2019 के जम्मू-कश्मीर के पुलवामा में ओहिजे के एगो भटकल नौजवान अपना के मानव बम बनाके आम आदमी ना राजमार्ग से गुजरत अर्धसैनिक बल के काफिला पर देश के चाक चौबंद सुरक्षा ब्यवस्था में सेंध लगाके आतंकवादी हमला कइ देहलस । एह कायरतापूर्ण हमला में देश के आंतरिक सुरक्षा ख़ातिर मुस्तैद जवानन के काफिला में से तत्काल 40 जवानन के जान चलि गइल, आ घवाहिलन क गिनती भी कम ना रहे । केतने रिश्तन के अचके मौत के गाल में समाये के मजबूर होखे के परल । केहु आपन साजन के हेरवा देहलस त केहू भाई , केहू के बुढापा के सहारा छीना गइल , त केहू अनाथ हो गइल, केहू के भविष्य दाव पर लाग गइल, जेकर क्षतिपूर्ति त सम्भवे नइखे । देश एक बार फेरु से लोर भरल अँखियन से आपन बीर शहीदन के बिदाई देहलस आ आपसी मतभेद के भुला के आतंकवाद क मुहँतोर जबाब देवे ख़ातिर ततपर दिखल आ जबाबो दियाइल। एह बेर के कार्यवाही में सीमा के बंधन भी कवनो अड़ंगा ना लगा पवलस देश के सीमा के अंदर त दोषी पर कार्यवाही भइबे कइल आ पड़ोसी देश के सीमा में घुस के आतंकी ठिकानन के नेस्तानाबूद भी क दिहल गइल ।

एह आतंकवादी हमला के बाद सरकार आपन जवानन के सुरक्षा के मद्देनजर ई आदेश जारी कइलस की अर्धसैनिक बल के जवान जम्मू काश्मीर में तैनाती के दौरान चाहे उ छुट्टी प जात होखे भा ड्यूटी प हवाई सेवा के उपयोग के सुविधा दिहल जाइ । लेकिन जवन हालात के चलते जवानन क सफर सड़क मार्ग से असुरक्षित हो गइल ओके बदले क जिम्मेदारी भी ईहे जवानन पर बा । जम्मू कश्मीर में सक्रिय आतंकी शक्ति के बीच हरगिज ई सनेस जिन जाये पावे की सुरक्षा बल के सड़क से दूर करे में ऊ सफल हो गइल । सेना आ अर्धसैनिक बलन के घाटी में कठिन लड़ाई लड़े के पड़ता, ई अइसन लड़ाई नइखे जेमे दुश्मन के पहचान सुनिश्चित बा । सीमा के भीतर चले वाली एह लड़ाई में बेकसूर नागरिक के बीच छुपल दुश्मन के पहचान के ओकरा विरुद्ध कार्यवाही करे के बा जवन बहुते कठिन काम बा । सरकार त आपन काम करि रहल बिया, देश के सामान्य नागरिक होखला के चलते हमनियोके ई कर्तब्य बनता कि कश्मीर के आम नागरिक पर गुस्सा उतार के घाटी में तैनात जवानन के काम के अउरी मुश्किल जिन बनावल जाव । एगो आम कश्मीरी, एह देश के भीतर जेतना पियार अपनापन सौहार्द महसूस करी आ मुख्यधारा से जुड़ीं ओतने आतंकी तत्वन के अलग थलग आ अंकुश लगावे के मुहिम के बल मिली । सुरक्षा बल के मनोबल के बढ़न्ती जेतना जरूरी बा ओतने जरूरी बा कश्मीर के माहौल के सुधारे में आपन पूरहर सहयोग देहल ।

पड़ोसी देश के सर जमी पर अंजाम देहल कार्यवाही सिर्फ आतंकवाद के खिलाफ रहे आम नागरिक के खिलाफ नाही जेकरा से लड़े में पड़ोसी देश अपना के अक्षम पावत रहे । पड़ोसी देश के आम नागरिक से कवनो विद्वेष क भाव नइखे । भारत चाहता कि ओकर पड़ोसी देश चैन से रहो आ हमनियोके चैन से रहे देव ।

देश के अन्दर भी बहुत अइसन आदमी बाड़न जवन अपना निजी स्वार्थ ख़ातिर एह अलगाववादी शक्तियन क साथ दे रहल बाड़न । ऊ सब आदमी के चिन्ह के उनकर पूरहर बिरोध जरूरी बा । आतंकवाद पनपे क पाछा जवन कारण बा ओह पर भी सोंचल जरूरी बा । हमार त सबसे इहे कहनाम बा कि रवुवा नजर के बदलीं नजारा अपने आप बदल जाइ। कश्ती के बदले क जरूरत नइखे बन्धु दिशा बदलीं, किनारा त अपने आप बदल जाई । कहे के मतलब बा हमनीं के मानसिकता के बदले के परी । बड़ा जद्दोजहद के बाद आजादी भेटाइल बा ओके अक्षुण्ण राखे ख़ातिर, देश हित के सबसे ऊपर राखी के सोंचल जरूरी बा ।

✍**तारकेश्वर राय "तारक"**
गाँव : सोनहरिया, जिला : ग़ाज़ीपुर
उत्तरप्रदेश

जागऽ जागऽ हिंदुस्तान

छुपछुप के वार करऽता बार बार पाकिस्तान,
कहिया ले सुतल रहबऽ जागऽ जागऽ हिंदुस्तान।

हद कइ देले बाटे बाज नइखे आवत,
आपना विनाश के ऊ देत बाटे दावत
अब होके रहि जंग जल्दी करऽ ऐलान...
कहिया ले सुतल रहबऽ जागऽ जागऽ हिंदुस्तान।

लहरे के मांगे अब तिरंगा पाकिस्तान में,
होली आ दीवाली तबे मनी हिन्दुतान में
बदला लेबे खातिर बा तइयार सभ जवान...
कहिया ले सुतल रहबऽ जागऽ जागऽ हिंदुस्तान।

धधकता आग दिल में खउलता खून हो,
मारे आ मुआवे के सवार भइल जुनून हो
करऽ कुछ अइसन हिल जाउ दुनियाँ जहान...
कहिया ले सुतल रहबऽ जागऽ जागऽ हिंदुस्तान।

जय हिंद जय भारत
वंदे मातरम

✍ **दीपक तिवारी**
श्रीकरपुर,सिवान।

महिला दिवस

रोयली खखनेली तब जन्मावेली।
पोसेले पासेले अमृत पीयावेली।
ई सिंचेली भींचेली हई मतारी।
लोगवा कहेला कि हई ई नारी।।

राजा के हई ई दिलवा के रानी।
आ इहे बनेली ममानी आ नानी।
इनिके नमवा के बनल बा गारी।
लोगवा कहेला कि हई ई नारी।।

दुख से भरल बा इनिकर कहानी।
तीज चुइतिया में पीये ना पानी।
नईहर से आवेली ई ससुरारी।
लोगवा कहेला कि हई ई नारी।।

दहेज के अगिया में इहे जरेली।
माया मयारि में मरत रहेली।
कतनो करेली जियेली लाचारी।
लोगवा कहेला कि हई ई नारी।।

✍**अमरेन्द्र कुमार सिंह**
आरा(भोजपुर)आरा

आपन भोजपुरी

जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया

आजकाल अपना भोजपुरी समाज में गजबे के उल्टा हावा बहल बा।जेकरा माछी के मुड़ियो भर ई बोध हो जाता कि 'हम सभ्य हो गइलीं' ओके भोजपुरी भाषा आ सर-यस सर' करत होइ लोग लेकिन अपना जनमभूमि पर आवते लार्ड कार्नवालिस के पनाती बन जात बा लोग।ढेर जाना त अइसनो भेंटाइल लोग जे कि खाली अपना मेहरारू के डर के मारे भोजपुरी बोलल छोड़

भोजपुरी समाज दुन्नो अनुसूचित जनजाति के कंडिडेट बुझाए लागत बा।ओकरा नजर में भोजपुरी के मतलबे अश्लील आ गंवार हो जात बा।कुल मिला के ई बूझ जाईं सभें कि "अपना के अँकवार भरल छोड़ के दुसरा के 'हग' करे लागत बा लोग आ उ बहुते नीक लागत बा।बबुआ लोग दू गो रुपिया कमा के जब महानगर से अपना जिला जवार के स्टेशन पर एसी थर्ड से उतरत बा लोग त दिमाग तब्बे से फिफ्थ गेयर लगा देत बा।ओइजा भले गोड़ कपार पर ध के दिन भर 'यस देहल लोग।बहरा बहरा खूब बोलेला लोग बाकिर घर के भित्तर मजाल नइखे कि कबो प्यार से 'ए हो' भी कह लेइ।

आ बेटी लोग के त पुछबे मत करीं,कक्षा 5 ले ही अंग्रेजी घोंटला के बाद उ लोग अपना के 'साशा ओबामा' से एक्को जौ कम नइखे लोग बुझत।भोजपुरी ओ लोग के सबसे 'चीप लैंग्वेज' बुझाए लागत बिया भले खड़ी बोली में 'हइ देखो हइ मेरा घोड़ा' बोलल जात होखे।

एगो आउर बात के तर्क देहल जात बा कि अति अपावनी भोजपुरी भाषा के सुनला मात्र से ही लइका बिगड़ जैहन सन आ फिर आगे चल के उन्हनी के मान्टेसरी घोंटे में कठिनाई होखे लागी।उहे लइका पंजाबी गाना गा गा के ठुमका लगाई त बन जाइ बाकिर भोजपुरी सुनते नाश होखे के खतरा बा।अरे परभू ! कान्ही पर बइठा के तोहके दुनिया भर के ज्ञान भोजपुरी में देबे वाला तोहार बाप दादा बिगड़ल आ असभ्य रहे लोग? भोजपुरी में लोरी सुना के तोहके दुलारे वाली नानी-आजी लोग नाश हो गइल रहे लोग?चार बात अंग्रेजी में बतियावे ना आ गइल कि तू अपना पुरखा पुरनिया लोग के असभ्य बनावे लगला?हमके त बुझात बा कि तू आपन कुल ज्ञान आ कुल रुपया फूँक के भी दुनिया भर में खोज घलबा तब्बो तोहके तोहरा से बोड़ निर्लज्ज ना भेटाई।आपन समाज के बीच में अपना भाषा के का अहमियत होले एकर उदाहरण बतावत बानी।सुनीं सभें-

"एक जाना रोजी रोटी के कारण सऊदी कमाए चल गइलन।ओइजा रहि के उ पइसा के सङ्गे सङ्गे दुग्गो अउरी चीज कमैलन, एग्गो त रोग आ दोसरका अरबी भाषा।रोग जब ढेर बढ़ गइल त उनकर कुल सम्पत्ति रहते हुए भी उनकर अरबी भाषा वाला लोग उनके ना पुछलन।बेचारू के लवट के अपना गाँवे ही आवे के परल।घरे बूढ़ महतारी रहली,उनकर सेवा करे लगली।खटिया ध लेले रहलन लेकिन तब्बो उनकर अरबी भाषा के मोह ना गइल रहे।एक रात खूब जोर से पियास लागल,देह में उठे भर के ताकत ना रहे, चिल्लाए लगलन-"अम्मी ! आब,अम्मी !आब।" वृद्ध महतारी बेचारी बड़ी परेशान भइल।"अम्मी" त बूझ गइल बाकिर "आब" ओकरा ना बुझाव।दउड़ के कभी रोटी ले आवे त कभी भात बाकिर समझ में ना अइला के कारण पानी ना पिया पवलसि।मारे पियास के बेचारू के जीभ ऐंठ गइल,परान फेंक देहलन।माई चिल्ला चिल्ला के रोवे लागल।गाँव के आदमी दौड़ल आइल।सब पूछे लागल की "का भइल,कइसे चल गइलन"? माई बेचारी बतवलसि कि "आब आब चिचियात रले हँ"।भीड़ में एगो मौलवी साहब भी रहलें।उ बतवलें कि "ए चाची ! उ पानी मांगत रहलें,ना देहलू का?

बुढ़िया के करेजा धक्क से रह गइल।छाती पीट पीट के रोवे लागल-

"कहाँ से एतना ज्ञान उ सिखलें, हम ना जानत बानी।
आब आब कहि बचवा मरि गए,खटिये तर रहे पानी।।"

कहानी के निहितार्थ समझ में आ गइल होइ।ना आइल होइ त बबुआ तोहके अंग्रेजिये मुबारक।हम त बस इहे कहब कि-

"रह$ चाहें सुख सम्पति में,चाहें कुछ मजबूरी में।
लिख$ पढ़$ कूल्ही भाषा पर,जीय$ बस भोजपुरी में।।

तनी गर्व से बोल देईं सभें-"जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया"

✍**संजीव कुमार त्यागी (तियगिया गँवार)**

सुख के जोह मे

एक सुख के जोह मे,
केतना दुःख बिटोर लिहनी।
भइल न सुख के सुबह,
केतना रतिया अगोर लिहनी।।
भइल न अजोर कबो,
रवि डुबले गम के बदरी में ।
जब छुटल सुख के आस,
तब गम से नाता जोर लिहनी।।

मिलल त बस झूठा दिलासा,
चाहे केतनो हथवाँ जोर लिहनी।।
जब बोललो साच त सतावल गइल,
झूठ बोलला प ताज पहिरावल गइल।
कइनी दू दिन मे जमीं से शिखर के सफर,
जब गिरल चरित्र के पत्ता बिटोर लिहनी।।

पद के प्रतिरक्षा मे पद छिनाइल,
वफादारी भी जब काम ना आइल।
उड़ावे उपहास सब हँसी के "राजू",
चाहे केतनो सबुत अखिया भर लोर दिहनी।।
एगो खुशी के जोह मे ,
केतना दुःख बिटोर लिहनी ।।

✍राजू साहनी
ग्रा०/पो०:-मदनपुर
जिला:-देवरिया(उ०प्र०)

अब खाली बात बा

अब खाली बात बा इहाँ,जज्बात कहाँ बा?
बफर सिस्टम के जमाना में पात कहाँ बा?

लइका अझुराइल बाड़े मोबाइल गेम्स पबजी में
पाव भर अनाज पर जादू, करतब ,करामात कहाँ बा?

गैस आ मिक्सिंग मशीन सौतिन भइल चूल्हा-चाकी के
आज के जमाना में ओखल मूसर अउर जात कहाँ बा?

अति देख अब चोन्हाइल बाड़े इन्द्रो देवता
सावन-भादो में पहिले लेखा बरसात कहाँ बा?

पिज्जा -बरगर आ चाइनिज फूड के बढल प्रकोप
तऽ मरूआ बजरा के लिट्टी ,मकई के भात कहाँ बा?

केतना गिनाई नवका फैशन के टोना -टोटका
रउए थाह लगाई हमनी के औकात कहाँ बा?

✍शुभम सिंह
सिवान

पात्र परिचय

1.	किसुन	नायक
2.	संजय	किसुन के बेटा
3.	संगीता	संजय के माई
4.	राजेस	खलनायक
5.	सरपंच	गाँव के सरपंच
6.	रमेसर	किसुन के संघतिया
7.	गनेस	गाँव के सभ्य अदिमी
8.	परमेसर	गाँव के सभ्य अदिमी
9.	टेसलाल	अँजली के बाबूजी
10.	अंजली	टेसलाल के बेटी
11.	परपंच	गावँ के कुटिल
12.	कमीना	,, ,,
13.	म0 प्रबंधक	बैंक के महा प्रबंधक
14.	दरोगा	दरोगा
15.	जमुना	राजेस के बाबूजी
16.	बिमला	राजेस के मेहरारू
17.	पारबती	राजेस के माई
18.	अन्य	अन्य।

पहिला अंक

दृश्य पहिला

स्थान - किसुन के घर, समय - दिन

निरदेस - (किसुन दही आ अरवा चाउर के तिलक माथे लगइले आवत बाड़न। सिरे पगरी सोभत हईंन। एक हाथ के लोटा में जल आ आम के पल्लव बाटे, कांख के बगल में लाठी आ कान्हे कुदारी। घर से जइसे निकसे के करऽताड़न कि संजय आगे आके टोक देत बाडऩ)

संजय - कहाँ जाताड़ऽ ए बाबूजी?

किसुन - (खिसिया के) ओहो, जतरे पर टोकलस नू।

संजय - पुछे के मतलब टोकल भइल? ना पुछीं तबो बेजइहाँ आ पुछीं तबो दोसी। हम त कतहीं के रहिए ना गइलीं। जाताड़ऽ त जा ना पुछब, आज से। आ आज से फेर इहो मत कहिहऽ कि हमार होके हमरा से कुछ पुछते नइखे। एकदम बेबुझत आ बेकाबू हो गइल बा।

किसुन - पान पुड़िया खाके आवारा नियन घुमे से फुरसत हउ कि तें जनबे कहाँ जातानी हम।

संजय - आरे हई देखऽ ना अपत बतिआवल, एगो पान पुड़िया का धराइल बा अब त अवऽरो बनइलन हमरा के। गाँव में कवनो बाप के त हम देखबे ना कइलीं, जवन अपना जमला के हइसन डेरवावत होखे।

किसुन - सुन, हमार बात तोरा अपत लागता त हमरा अपत में तें आपन कमजोरी जन ढाँक। हम सब तोर चाल्हांकी बुझऽतानी, तूँ चाहताड़े बाबूजी से जान लिहीं कि कहाँ जाताड़न, केतना देरी में अइहें आ सेही बीच में पाकिट से पइसा काढ़ लिहीं।

संजय - अउरी त अउरी बनल, बात फरिरआई कहाँ से अब पकिटमरवो कहइलीं, हम। का मुहुर्त बउए आज के। कौना के मुँह देखे के आ कौना के देखलीं कि बहरिओ हुज्जत आ घरओ में फजिहत होखता हमार। बस ई पानी उतारताड़न हमार, अउरी कुछो ना। मन त करऽता कि एह कुफुत से हम बाधी में गोड़ अझुरा के तूर लिहीं, आपन। ना गोड़ सही सलामत रही ना पान पुड़िया खाये कहीं जाइब। (अफसोसे कपार धर के बइठ जाताड़न)

किसुन - सुन, हम जतना कहऽतानी ततने सुन आ चुप रह, नाहीं त हउ पएनवा उठाइब नू त मार के देहिया के चमवा फार देब, कमीज रंग दिहब तोर। बिगड़ के माटी भइल बाड़े त निमन तरे सुधर जइबे, हाथ उठइले के देरी बा, सुधारे में देरी ना होई हमरा। हमरे जनमावल आ हमरा के बुधि सिखावताड़े, गिरगिट नियन रंग बदलताड़े रंग, धमकी देताड़े कि बाधी में अझुरा के गोड़ तूर लिहब। तुरबे गोड़, बोल बोल त तोरा तूरे से पहीले हमहीं तूर दिहीं। उठाईं ठेहा आ पटक दिहीं गोड़ पर। देखा दिहीं, कइसे गोड़ तुरल जाला। पान पुड़िया के बात कहला पर तकलीफ लागता हउ, इरिखा देताड़े, गोड़ तूर लेबे, हमरा बोले के डाहे।

संजय - (झिझुआ के उठताड़न आ पैना उठा के देबे के करऽताड़न) धरऽ ल ...फारऽ ..फारऽ ना हमार दे हके चाम, ठाड़ बानी। (किसुन चुप बाड़न) साँस लिहल मोसकिल कइले बाड़न हमार। इन्हिका डरे खांेखिओ आवेला त हम दबा लिहींला कि बाबूजी बाड़न का ऊँच होके खोंखे के बउए। तुहीं बोलऽ ना, का करीं, कइसे जीहीं आ कइसे रहीं हम?

किसुन - रीत बेवहार आ संस्कार के सहुर तोरा के हमरा चाहे जइसे सिखावे के परी सिखा दिहब, हम। एह बात के तें गिरह देले। सपूत के कपुत ना बने दिहब आ केहू के ई कहे मोका ना दिहब कि ए किसुुन तोहार बेटा संस्कारहीन हो गइल बा, तनी सम्हारऽ।

संगीता - (प्रवेस) समहुत के समय में ई सब का बकतुत होखे लागल दूनों बाप बेटा में?

संजय - (चिहा के) समहुत ?

संगीता - हँ हँ समहुत, हमनी के गिरहस्त अदिमी हईं स,ँ गिरहस्त के गिरहस्ती समहुत से सुरू होला, जवना में टोक - टाक बरजित होला। पढ़ लिख के ना जनलऽ त जान ल।

संजय - (कान पकड़ के) हमरा मालुम ना रहे रे माई कि आज समहुत हउए आ पुछल टोकल में लिआला। आ इहो त हमरा से ना बतइले रहन।

किसुन - (चिढ़ के) हिंह ना मालुम रहे रे माई आ इहो ना बतइले रहन, ना मालुम रहे त मालुम कर, कहिया मालुम करबे, कहिया सिखबे सहुर, कहिया जनबे कि कइसे होला खेती बधारी। खाली पाकिट में हाथ घुसार के चले से काम चली कि घर बिलायी। बुझात नइखे त बुझ, नइखस जानत त जान। इहे समहुतवा से हम धरती माई से माई के संबंध बर्नाइंला, धरती जोतींला, धरती से अन्न उपजाईंला, तब जाके तोर, आ हमार छिपा तीरिथ होला बचवा।

संजय - हम त कसिये आ हरिदोआर के तीरिथ के नाम तीरिथ सुनले रहीं, एगो नया तीरिथ के नाम सुन लिहलीं, ई नया तीरिथ कवन हउए ए बाबूजी, बतइब?

किसुन - हर हाँकत खुनी पसेना चुवेला, ढेला पर पएर परेला त बेवाए हरक जाला, दरद देबे लागेला अइसे ना छिपा में दूगो गो रोटी लउकेला। इहे हउए छिपा तीरिथ।

संजय - ए माई, बाबूजी ई कुल्ही बतिया खिस में कहऽताड़न आकि समुझावताड़न हमरा के?े

संगीता - कबो हरवहियाँ पनिओ त ना लेके गइल होखब तूँ कि बाबूजी पिआसल होईहें चलऽ एक लोटा उनुका के पनिओ पिआ आईं, साधे। अउरी पुछताड़ऽ कि बाबूजी ई कुल्हि बतिया खिस में कहऽताड़न कि समुझावताड़न। अतहत हो गइलऽ, कहिया जनबऽ जबाबदेही? तोहरे अइसन नूू अउरी लइका अपना बाबूजी आ माई के सहारा देताड़न सँ। जहाँ हाथ लगावे के जरूरत परऽता तहाँ कान्ह लगा देताड़न सँ। उहनी के सोच से घर में मुरई बने के त परवर आ आलु बनऽता आ रहर के दाल छेंवकाता। ससिओ के देख के तोहरा राह बदले के चाहीं। सोचे के चाहीं कि रजेसवा के संघत से लाभ बा कि हानि।

संजय - हमार गलती छमा करऽ बाबूजी। तँू लठिओ मरबऽ त हम सह लिहब, खून बही, दरद होई, तबो चुप रह लिहब। माई, तुहूँ फिकिर जन कर हमरो घर में परवर आलू बनी आ रहर के दाल छेंवकाई।

संगीता - तब जाके अपना बाबूजी संगे तुहूँ धरती पूज आवऽ। (माई संजय के माथे टीका लगावताड़ी)

संजय - धन बा हमार भाग रे माई। हम एह अवसर के फएदा उठाइब।

धीरे धीरे परदा गिरता।

दृश्य दोसर

स्थान - किसुन के घर समय - दिन

निरदेस - (किसुन कुछ काम करऽताड़न एतने में संजय के संघतिया राजेस अपना अउरी संघतिया संगे आवताड़न)

राजेस - आरे का हो संजय भाई बाड़ऽ हो? (संजय चुप रहऽताड़न)

किसुन - हँ बाड़न।

राजेस - कहाँ बाड़न चाचा, आ बाड़न त बोलत काहे नइखन?

किसुन - नइखन बोलत त हम का करीं। भीतरे बाड़न।

राजेस - तनि बोलावऽ ना चाचा।

किसुन - तू लोग के ऊ आवाज सुन लिहले बाड़न। बइठऽ लोग। हमरा बोलावे के जरूरत ना परी। अइए जइहन।

परबेस - (राजेस के कान में) किसुन चाचा उनुका के बड़ा कस में रखले बाड़न रे मरदे।

राजेस - हँ रे मरदे, हम त जनते ना रहीं कि किसुन चाचा उनुका के हेतना कस में रखले होइहें।

किसुन - कस में हम नइखीं रखले ए राजेस, उनुका के हमार भूत रखले बा। जवना के नाम अनुसासन ह। आ ऊ अनुसासन केहू के बेकस आ बेलगाम ना होखे देला। (संजय आवताड़न। उनुकर हाथ भूसा खरी से लेटाइल हईन। रजेस उनुका के देख के अपना संघतिया संघे हँसे लागऽताड़न)

राजेस - का ए संजय भाई, गवत का गोतत रहऽ आकि गवत उठावत रहऽ हो?

परबेस - गवत उठावत ना रहन रे मरदे, गवत गोतत रहन। पढ़ लिख के अब गवत गोतिहें तब नू इन्हिका आपन गवत भेंटाई। (संघतिया लोग फिर हँसऽताड़न)

राजेस - ठीके कहऽताड़े रे मरदे, तबे नू सभे जानी कि गदहवा के संगे घोड़ओ हर घिचऽता।

किसुन - संजय, ई लोग के फुटानी सुन लिहलऽ आ देख लिहलऽ जीन्स के सकेत सटाक?

संजय - सुनिओ लिहलीं आ देखिओ लिहलीं बाबूजी।

किसुन - त इहो पुछ ल कि काम ओरिआ के आइल बाड़न लोग आकि माइए आ बाबूजी के ओरिआवे के छोड़के।

रजेस - चल रे मरदे, किसुन चाचा बड़ी भनभनाताड़न।

किसुन - ए राजेस, तोहरा अइसन बी0 ए0 बैकल के भनभनइले नू बुझाई। जब अपना पएर पर ठाड़ होखबऽ तब तोहरा पता चली कइसे गवत भेंटाला। आ घर के गरजियन केतना पेराला।

संजय - (ठठा के हँसऽताड़न) हा हा ... हा ... ठीके कहऽताड़ऽ ए बाबूजी ठीक कहताड़ऽ। आन के मुण्ड पर पिआज कटेला त बड़ा निमन लागेला आ जब अपना मुण्ड पर कटेला तब बुझाला कि कइसे परेला थरिया में सलाद।

रजेस - ए संजय भाई, किसुन चाचा अइसन तुहूँ हमनी के थप्पड़े का मारऽताड़ऽ?

संजय - ना राजेस भाई, हँस के हम तू लोग के रहता देखावतानी आ ई बतावतानी कि करूआ खरी जब हाथ में लागेला आ आँख परपराला तब बुझाला कइसे भेंटाला दूगो रोटी।

किसुन - इहो सुन ल लोग कि सावन भादो के कदई में गोड़ के गासा सर के बजबजाये लागेला। सरला के दरद से रतरत भर अउँघाई ना आवे। छाती पर तकलीफ के लहकल तवा बान्हे के परेला। तब होला खेती, खेती से आवेला

अन्न। आ पेट में अन्न जाला तब झराला तू लोग के बबरी।

संजय - गवत के बात लेके एह लोग के बड़ी मार मरलऽ ए बाबूजी। अबो त लोग खेआल करस।

राजेस - संजय भाई, किसुन चाचा से कह द कि गवत के बात लेके ऊ एगो नवजुअक के चोट दिहले बाड़न। आपन आगे दिन के रहता में काँट बोअले बाड़न। जौना के परिनाम बाद में का होई, से ऊ देखिहें। संजय भाई, उन्हुकर ई चोट खाके रजेसवा चुप ना रही। तोहार बिआह करिहें नू करस पता चला देत हईं कि बेटिये के बिआह खातिर पनही टूटेला कि बेटो के बिआह खातिर टूटेला। कह देतानी हँ। (संघतियन के साथे प्रस्थान)

संजय - जा जा, जाँता में दर दिहऽ हमरा बाबूजी के, हमहूँ देखब कइसे दरताड़ऽ। आ बिआह के चेतावनी देताड़ऽ न त तोहार इहो चुनौती देख लिहें हमार बाबूजी, कइसे काटऽ ताड़ऽ तू हमार बिआह।

किसुन - निमनो बात खार लागत हइन हो, संजय। अपना जिनिगी के चपाती में तेल घँसाई कि अखरे रही ई नइखन सोचत। चलल बाड़न हमरा के धमकी देबे। आ तहार बिआह काटे।

संजय - निमनो बात अखवाह लागत हइन त लागे द बाबूजी। हम बानी नू।

(धीरे धीरे परदा गिरता।)

(शेष अगिला अंक में)

✍**विद्या शंकर बिद्यार्थी**

नाफ़ा खातिर

नाफा खातिर नटई, नरेटल गइल
माठा लेखा पुरहर, फेटल गइल

जब साँच पर आँच, ना आइल तनिको
ना कढ़ी भइल ना बरी भइल, फेकल गइल

लोग के लोग से, ठेहुना भर यारी रहल
ई चलल जबले, कुछ ना सेटल भइल

इनके ढाठा , हरेठा , मुरेठा नियन नित
चुहानी में अइठ के, जोरल गइल

तबो अइठन साँच के, उनके बाँचल रहे
आधी राते के, चोकरल चहेटल गइल

इनका हियरा के बुता, बुतइले ना बुताइल
बुतावत बेहाया , अस्पताल मेन्टल गइल

कहेले गणेश लोग अपने में लागल बा
अपने से अपना लोगन के ,छोड़ल गइल

✍**गणेश नाथ तिवारी"विनायक"**
श्रीकरपुर ,सिवान

माई के बोली

माई के बोली
कोइलर से मीठ ।
नाम में का रखल बा ?
भाषा पहचान ह
आपन जहान ह
भोजपुरिया माटी के शान ह
आपन गुमान ह।
जय भोजपुरी, जय भोजपुरिया
आपन कहनाम ह ।

माई के दूध
माई भाषा के करज
भुलइह जन ।
उतार दिहऽ
एही जन्म
एतने बा अरज ।

भोजपुरिया पानी
गाँव के दलानी
भलूनी भवानी
के आपन पहचान ह।
हार में भी जीत के
नजर में तीर के
साठा में पाठा
जिनगी के रीत ह।

माटी के मरद
भोजपुरिया बरध
बधारी के शान ह ।
देश में विदेश में
भोजपुरिया तान बा,
गीत गूंजे भोजपुरिया
ई भाषा महान बा ।
जय भोजपुरी, जय भोजपुरिया
हमार कहनाम बा।

✍**कनक किशोर**
संप्रति - वन प्रमंडल पदाधिकारी
सामाजिक वाणिकी प्रमंडल,
कोडरमा (झारखंड)

होरहा

होरहा, ई शब्द से हमनी क शहरी मित्र जरूर अनजान होइहन जा। असल में हमनी क गाँव में हर एक मौसम में भोजन खातिर अलग-अलग मौसमी चीज के व्यवस्था कइल गइल बा अउर ई मौसमी चीज गाँव के अलावा कहीं ना मिल सकेला। देखल जाव त आपन गाँव आज भी आ पहिले से भी खाये-पिये के मामला में शहर से बहुत आगे बाड़न स। जइसे में कई गो चीज के नाम बतावल जा सकेला। माघ क महीना में ऊखी के रस से जब गुर बनेला त गरम-गरम गुर के पतई पर ले के खाए में जवन मजा मिलेला ओकरा आगे शहर क बड़-बड़ मिठाई लोग फेल हो जइहे जा। बरसात क मौसम में जब बजड़ा में बाल आ जाला आ फिर ओ बाल में दाना आवेला त ओकरा के भूज के खइला में जवन सोन्ह स्वाद मिली ऊ स्वाद दुनिया क कवनो शहर क कवनो चीज में ना मिल पाई। एही तरे गाँव में अइसन-अइसन बहुत ढेर चीज बा जवन कि दुर्लभ बाटे ऊ चीज गाँव क अलावा और कहीं ना मिल पाई।

अब बात कइल जाव होरहा क त बता देहल जाव कि होरहा चना से बनेला। चना क फसल जब खेत में लागल रहेले आ फागुन में पौधा जब पियराए शुरू हो जाला त समझ लेहल जाला कि अब चना होरहा खातिर तइयार हो गइल बा। एइजा इहो बता देईं कि होरहा से पहिले एही चना के कचरी क रूप में खाइल जाला। कचरी तब खाइल जाला जब चना के दाना हरियर रहेला आ अबही एकदम आल्हर रहेला अऊर कचरी से भी पहिले एही चना क साग खोट के खाइल जाला। खैर कचरी आ साग त अब शहर में उपलब्ध हो जाता लेकिन होरहा शहर में आँख से देखे के भी ना मिली।

होरहा कइसे बनेला शहरी मित्रन के हम इहो बतावल जरूरी समझतानी। सबसे पहिले जब देखल जाला कि चना अब होरहा लाएक तइयार हो गइल बा त ओके उखाड़ लिहल जाला ओकरा बाद अहरा सुनगा के ओही पर चना क पौधा के लगातार उलाट पलाट के भूजल जाला। ई काम तब तक चलत रहेला जब तक आगी पर चना खूब ठीक से भूजा के पाक ना जाला। ओकरा बाद आपकऽ होरहा तइयार बा। एके निकीया के नून आ मरिचा क संगे मस्ती से खाईं आ अपना के भगमान समझीं कि आपके ई चीज भी खाए के मिलता।

असल में गाँव, गाँव क रहन-सहन, खान-पान आ ओइजा क निवासी सब बहुत महान बा। भोलापन, मासूमियत, चंचलता, संस्कार, मानवता आ भाईचारा जइसन कुल चीजन के हमनी क गाँवे बचाके रखले बाड़न स नाहीं त शहर ई चीजन के रौंद के कबकर आगे निकल गइल बा।

✍समीर कुमार राय
सेमरा(शेरपुर)
गाजीपुर

गाँव से

1.
आज देखनीं हऽ भर नज़र गाँव के,
सुसुकत लउकल हऽ घर गाँव के,

असकते सुत गइनीं खटिया पे जाके,
खूब देखनीं लडिकाईं रातभर गाँव के,

बरोह में अझुरा के घंटन धऽ देलस,
दखिन गाछी के लंगरा बर गाँव के,

बहुत समझावला प हाथ छोड़लस हऽ,
अब बसी ना लड़िका शहर गाँव के ,

जतना ले हो सके, उमेद पर खड़ा रहीं ,
बुलेट रहन चाहीं अतने भर गाँव के ।

✍**अमरेन्द्र सिंह बुलेट**

2.
नईखी कहत कि खानदानी देखके,
बाकिर इआरी करीं तऽ पानी देखके,

हुमच के पाला चलल मोरा घर ओरी,
पसेनाये लागल फूसही पलानी देखके,

जे साथ देवे के हरदम भरोसा दिहल,
भकुअइनीं दोसरा के निशानी देखके,

जवन बाढ़ डूबवलस मोर गाँव जवार,
फेनु इआद परल उनकर जवानी देखके,

बुलेट अब कवनो बात कहबे ना करस,
पहिलके हाली के आनाकानी देखके,

✍**अमरेन्द्र सिंह बुलेट**

आज के अदमी

खुशी कम अउर अरमान बहुत बा,
जेकरे के देखीं, परेशान बहुत बा !

निचका से देखीं त बा रेत के घर,
दूर से जवना के, शान बहुत बा !!

कहल जाला साँच के कवनो जोड़ ना होखे,
बाकी आज झूठवो के पहचान बहुत बा !

मुश्किल से मिलेला अब शहर में आदमी,
कहे खातिर त इहवाँ, इन्सान बहुत बा !!

दुःख दरद पूछे के सवांग नाहीं बाटे,
गांव भर में फइलल, खानदान बहुत बा !

दोसरा के गुण - दोष तऽ जानेला सभे,
अपने आपसे लोगवा, अंजान बहुत बा !!

मनवा के हेरा गइल सब सुख चैन,
भीतरी से आवत, फरमान बहुत बा !

एजा के सबकुछ एहिजा रहि जाई,
'संजय' इहाँ लोगवा नादान बहुत बा !!

✍**संजय कुमार ओझा**
गांव + पो० - धनगड़हां,
जिला - छपरा (बिहार)

टेलिग्राम

जइसहीं मोहन सीट पर बइठ गइलन रेलगाडी़ सीटी बजावत धीरे धीरे आगे बढे लागल ...

" बाबूजी रउवा जल्दी से नीचे उतर जाईं " कुछ उदास मन से मोहन अपना बाबूजी (फुलेसर) से कहलन .. फुलेसर भी जल्दी से डिब्बा से उतर के ट्रेन के साथे साथे आगे चले लगलन आ खिड़की से अपना बेटा मोहन के कई तरह के सीख भी देवे लगलन .. ट्रेन धीरे धीरे तेज होत चलि गइल .. फुलेसर भी ओकरा साथे भाग भाग के कोशिश कइलन कि सब कुछ आजे बता दीं लेकिन थोरहीं देर मे खडा़ होके हाँफे लगलन .. ट्रेन पूरा गति के साथ धीरे धीरे फुलेसर के आँख के सामने से दूर होत चल गइल .. फुलेसर भी चुपचाप खडा़ टकटकी निगाह से देखत रह गइलन .. पीछे के सारा दृश्य फुलेसर के आँख के सोझा एगो सिनेमा अइसन घुमे लागल ...

खुद फुलेसर के एको अक्षर से भेंट ना हऽ बाकी मोहन के पढावे लिखावे मे कवनो कसर ना छोड़लें .. पढ़ लिख के आज मोहन नौकरी करे सेना मे जब जाए लगले तब फुलेसर उनका के स्टेशन छोडे आइल रहलन ..

एगो बाप के बेटा के प्रति प्रेम के एह से बढ़के उदाहरण ना लउकल।खैर उदास मन से धीरे धीरे घरे पहुँच के फुलेसर चुपचाप बिस्तर पर लोट गइलन आ कब आँख लागि गइल उनका पता ना लागल ....

दोसरका दिन फुलेसर सबेरहीं उठ के दुआर पर छोट मोट काम करे मे बाझल रहलन तले राम औतार दूर से ही जोर से आवाज देके कहलन " अरे ये फुलेसर .. तहरा बेटा किहाँ से टेलिग्राम आइल बा " ... टेलिग्राम के नाम सुनते ही फुलेसर के धक्क से लागल ... ऊ छाती पकड़ के बइठ गइलन आ जोर जोर से चिल्लाये लगलन .." आरे बाप रे बाप ! हमरा बेटा किहाँ से टेलिग्राम आइल बा .. पता ना हमरा बबुआ के का हो गइल हो दादा ... अभी परसवें तऽ बाबू के ट्रेन मे बइठा के अइनी हँ हो दादा ... "

फुलेसर के चिल्लाइल सुन के फुलेसर बो बाहर अइली आ उहो जोर जोर से चिल्लाये लगली ...

" आरे माई रे माई .. हमार बबुआ कइसन बाड़न हो माई .." दुआर पर एकदम कोहराम मच गइल ...

फुलेसर आ फुलेसर बो दुनू बेकत एकदम लिख लोढा पढ पत्थल रहे लोग ... टेलिग्राम के नाम सुनते ही कवनो घटना के आशंका के डर के मारे दुनू बेकत चिल्लाये लागल लोग ..

चिल्लाहट सुन के फुलेसर के बहू चंदा भी बाहर आ गइली आ कारण पूछे लगली ...जब उनका टेलिग्राम के बारे मे पता लागल तऽ ऊ टेलिग्राम हाथ मे लेके पढे लगली ... पढ़ते ही चंदा जोर जोर से हँसे लगली .. हँसत देख के फुलेसर उनकर मुँह ताके लगलन .. " काहे दुल्हिन, हमार जान जाता आ तूँ हँसत बारू " फुलेसर चंदा से खिसियाइले पूछलन ...

चंदा हँसते हँसते कहली .. "मोहन ठीक से पहुँच गइल बारन ... उनकर सब समाचार ठीक बा .. हमहीं मोहन से कहले रहीं कि पहुँचला के समाचार टेलिग्राम से भेज दिह "

अतना सुनते हींश एकदम से कोहराम बंद हो गइल...फुलेसर आपन हाथ पतोह के सिर पर रख के कहलन .." खुश रह बेटी ..आज हमरा आपन पतोह पे बहुत गर्व बा ..आज हमरा शिक्षा के महत्व समझ मे आ गइल ... अशिक्षित भइल साँचहूँ बहुत बढ़ श्राप होला ..खासकर आजकल हर मर्द मेहरारू के शिक्षित भइल बहुत जरुरी बा .."

चंदा के आज अपना उपर बहुत ही गर्व महसूस होत रहे ...मन ही मन ऊ अपना माई-बाप के भी धन्यवाद कइली कि उनका के शिक्षित बनावे खातिर उनकर माई-बाप कवनो कसर ना छोड़ल लोग ....

✍रमा शंकर तिवारी " भटकेशरी"

बहारन

"तहार लइकवा नइखे पढ़त का हो बहारन? आजकल स्कूलिया में गुम सुम बैठल रहेला, का ओकर तवियत ठीक बाटे नु?"मास्टर साहब स्कूल से लौटत रहलन, रास्ते में बहारन के देखलन त कह दिहलन ।

बहारन, जब खेत में काम पूरा कइके घरे गइलन, त मनसुख के माई से पूछलन," ए मंसुखवा के माई, ई मनसुख पढ़त ओढ़त नइखे, चुप चाप स्कूलिया में बैठल रहेला, एकर अब नाम कटवा देत बानी, एकरो के खेत में अब रोज ले जाइब".

"ई रउआ केंगान बुझा गइल कि ऊ पढ़त ओढ़त नइखे, राउर चलित त हमहू जान क ख ग ... सीखले बानी, उहो न जनती"

अब बहारन के दिमाग ठनक गइल, मेहरारू के बात सुनके, "सही कहत बिया, मंसुखवा के माई" पढ़ावल-लिखावल त बहुत जरूरी बावे, तनीमनी पढले बिया तबे नू चिठी पत्री पढ़ लेत बिया, बैंक से पैसा जमा निकाल लेत बिया, सही कहतिया। मंसुखवा के पढ़ावल जरूरी बा। काल सबेरे संजीव मास्टर साहब के पास जाइब आ पूछब सर जी से कि आगे का करीं?"

कल सोमबार रहे, बहारन सुबहे से संजीव सर जी के इंतजार करे लगनन । नौ बजे सर जी अइनीं।

"प्रणाम गुरु जी, गोड़ लागतबानीं"

खुश रह, का बात बा, बहारन, सबेरे सबेरे स्कूल में?

"जी गुरु जी, रउआ शनिवार के कहले रहीं कि , मनसुखवा पढ़त नइखे, चुप चाप बैठल रहेला, ओहिसे पूछे आइल बानी।" त ठीक कइल ह,मनसुख पढ़त लिखत नाही बाड़न, चुपचाप बइठल रहेलन, लागत बा कि उनकर मन पढ़ाई में नइखे लागत, हमरा इहो बुझात बा कि मनसुख के नू अंदर से तवियत खराब बुझात बाटे, तनी कौनो डॉक्टर से देखा द, दवाई खाई त ठीक हो जाई, बुझ गइल बहारन"?

जी गुरु जी। अगिला दिन बहारन, मनसुख के लेके डॉक्टर साहब के पास ले गइलन, डॉक्टर साहब सब चेक कइलन, तब बतवलन कि एकरा पेट में किड़ी बाड़ी सन, ई बुझात बा कि मिट्टी कभी कभी खाए ला का"? एकरा पर ध्यान द, ई दवाई बच्चा के खिला दिह, आ एगो और बात, बच्चा के प्रोटीन वाला खाना ज्यादा खिलाए के बा। तू एकरा के सन्तुलित भोजन के साथ साथ प्रोटीन तनी ज्यादा दिह। देख ई उमर, बच्चा के बढ़े वाला उमर बा।"

मनसुख दवाई खाए लगलन, धीरे धीरे मनसुख के स्वास्थ्य सुधर गइल, ऊ ठीक से पढ़े लगलन।

"बच्चन के स्वास्थ्य पर ध्यान देवल जरूरी बा, बच्चन के समय पर सब टिका लगवावे के चाही।स्कूल पर भी अब सब टिका दिलवावल जाता, अभी अभी हाल ही में खसरा-रूबेला के टिका दियाता। बच्चन के हर हरकत पर गारजियन के देखे के पड़ी। ऊ अगर नइखे पढ़त त का कारण बा, नइखे सिख पावत, त का कारण बा। ई सब पर ध्यान देवे के पड़ी। बहारन पढ़ाई के महत्व नइखन समझत, लेकिन उनकर लुगाई, कुछ पढले बाड़ी त बहुत आधार बा, ई चीज बहारन समझत बाड़न।

मनसुख के माई, मनसुख के बाबूजी से कहलिन कि , सुनी आज से बच्चन के पढावे के बारे में सोचेम, चाहे कुछऊ होई हमार लइका पढ़ी त पढ़ी, ओकरा के पढ़ाई छोड़ा के कबहु खेत में काम करावे के मत सोचब।"

अब बहारन के समझ में आ गइल कि,

"पढ़ लिख कर बन होशियार
समझ बढ़े तो बढ़े विचार।"

✍संजीव कुमार रंजन
राजेंद्र नगर, गोपालगंज।

दबाव में भोजपुरी

केवनो भाखा केतना जियतार अउरी चलता-पूरजा (गतिशील) बा एसे ओह भाखा के बदलाव के सङगे जीए कऽ कूबत कऽ पता चलेला। जिनगी छिन-छिन बदलेले अउरी ई बदलाव जिनगी के सगरी कोरा-इकोरा ले असर देखावेला अउरी जिनगी में आइल सगरी बदलाव से भाखो के अपना बच-बचा के बदलत रहे के परेला। अउरी एह सवाल अउरी चुनउती से दुनिया के सगरी भाखन के जुझे के परेला अउरी भोजपुरी एह झमेला से अलगा नइखे। भोजपुरी पर प्राकृत, पाली अउरी संस्कृत से असर सभसे बेसी बा। कुछ लोगन के मत बा कि भोजपुरी संस्कृत से जनमल तऽ ओही जा बहुत लोगन के ई मत बा भोजपुरी प्राकृत से जनमल अउरी पाली एकरी बिकास में सहजोग कइलस। सैकड़न साल कऽ जतरा के बाद भोजपुरी के भेंट भइल फारसी अउरी उर्दू से। एह दूनू भाखन के बहुत बरिआर असर भोजपुरी पर परल अउरी अनगिनत फारसी आ उर्दू के सबद भोजपुरी में आ के भोजपुरी के हो गइलन सऽ। एही तरे भोजपुरी के भेंट अंग्रेजी से भइल अउरी जाने केतने सबद भोजपुरी अपना लिहलस। आज ई कहल मुसकिल बा केवन सबद संस्कृत, प्राकृत, पाली, फारसी, उर्दू आ अंग्रेजी से निकल बा। कुछ सबदन के उच्चारन अउरी माने जस के तस भोजपुरी अपना लिहलस तऽ कुछ सबदन के आ तऽ उच्चारन बदल गइल भा माने बदल गइल अउरी कहीं-कहीं तऽ दुनू बदल गइल बा। एतने ना भोजपुरी देस, काल अउरी परिस्थिति के देखि के आपन लिपि ले बदल लिहलस।

अपनी एह जतरा में भोजपुरी सरुप धीरे-धीरे बदलतस गइल बा पर ई बदलाव भीतर से भइल बा। भोजपुरी जेवना केवनो सबद भा बिधा के अपनवलस ओकरा के भोजपुरी सोख लिहलस। ऊ सबद भोजपुरी के माटी में सना गइल बाकिर समय बड़ी तेजी से बदल रहल बा अउरी ई तेज बदलाव भोजपुरी भाखा के लोक संस्कार अउरी सरूप दुनू पर आपन असर देखा रहल बा। जेवना भाखा सैकड़न सालन से चुपचाप बिकास करत गइल आज ओह भाखा पर कई तरह बाहरी दबाव पर रहल बा। जदी एह दबाव देखल जाव तऽ ई दबाव तीन तरफा बा। पहिला तरफ से दबाव पड़त बा लिपि कऽ दूसरा बा दोसर भाखन कऽ आ तीसरा बा तकनीक कऽ।

जब से भोजपुरी आपन लिपि कैथी छोड़ि के देवनागरी अपनवलस तब से भोजपुरी में संस्कृत अउरी हिन्दी के सीधे-सीधे दखल होखे लागल। हिन्दी के बिकास अउरी भोजपुरिया लोगन के खुलल दिल से अपनावे दिसाइन कइल परियास से हिन्दी चुपचाप बाकिर बहुत बरिआर दखल सुरू कइलस अउरी एतने ना बहुते सबदन के बेदखल करऽ रहल बे। इहे काम अंग्रेजीयो कर रहल बे काँहे आज ई आजिविका कमाए के भाखा बे अउरी आधुनिक तकनीक कऽ बढत उपयोग सहजोग कर रहल बा। भोजपुरी अउरी हिन्दी के लिपि एगो हो गइला से, भोजपुरी पर हिन्दी के महता, अंग्रेजी के आजिविका के भाखा बनला अउरी तकनीक के जिनगी के हिस्सा हो गइला से भोजपुरी कऽ सगरी इकोसिस्टम बदल गइल बा।

आज जरूरत ई बा भोजपुरी के खाली मीन-मेख निकालल बन कऽ के ओह इकोसिस्टम के ठीक कइला के काम बा ना तऽ आज जेवन भोजपुरी लउकत बे काल्ह ऊ एगो अइसन रुप ले ली कि चिन्हाई ना कि ई भोजपुरिए हऽ। अइसन नइखे के सबदन के ना मरे के चाहीं। जरुर मरे के चाही। उपयोग खतम हो गइला पर सबद मरबे करेला। बाकिर दोसर भाखा अपनावे के दिसाईं परियास में भोजपुरी के सबदन के मारल ठीक नइखे। जरूरी बा कि आज भोजपुरी के आपन संस्कार के बँचावल जाओ ना तऽ एकर लोक-भाखा कब मरि जाई पते ना चलि। अइसन नइखे ई खतरा खाली भोजपुरिए पर बलुक सगरी भाखा एहि चुनउती से जुझ रहल बाड़ी सऽ।

✍राजीव उपाध्याय
सम्पादक "मैना"

हमहूं के येगो जीजा चाहीं

काश केहू के साली होतीं
काश हमरियो जीजा होत।

जब अइतं ऊ हमरे घर मे
होरी अउर देवारी होत।

भले ही जीजा करिया होतं
सांवर रहतं या फिर गोर।

जीजा-जीजा शोर मचवतीं
कहतीं जीजा अइलं मोर।

खुशी से नाचे गावे लगतीं
खुशी के रहत ओर न छोर।

कब्बो उनसे झगड़ा करतीं
कब्बो करतीं तोर आ मोर।

कब्बो उनके जीजू कहतीं
कब्बो उनके कहतीं जीज्जा।

होटल ले जइतीं हम उनके
उहां खियवती उनके पिज्जा।

ओ नारी के कइसन जीवन
जेकरे ना जीजी ना जीज्जा।

मरद झूठ-फुर फइलवलं
साली हवे आधी घरवाली।

हम त अपने पतिदेव के
कहलाईं सगरो घरवाली।

ले जइतीं उनके बजार मे
पाकिट करवा देतीं खाली।

करतीं बंद ओके कमरा मे
हाथ मे हमरे ताली होत।

काश केहू के साली होतीं
काश हमरियो जीजा होत।

पापा जो हमरे बहिनी के
गर्भपात न करइले होतं।

त हमरो येगो जीजी रहती
त हमरो येगो जीजा होतं।

जब अइतं ऊ हमरे घर मे
कुल्लू अउर मनाली होत।

काश केहू के साली होतीं
काश हमरियो जीजा होत।

हे प्रभुजी कुछ अइसन करिह।
अगले जनम ना अइसन करिह।

अगले जनम मे जीजी दिह।
अगले जनम मे जीजा दिह।

भले न दिह बर्गर पीज्जा।
पर दिह मनभावन जीज्जा।

✍जगदीश खेतान
कप्तानगंज, कुशीनगर

निष्ठुर नियति

बबुआ दिन कपार पर चढ़ गइल, अभी तक सुतले बाऽऽ? (बाबूजी के तेज़ आवाज राहुल के काने में चहूँपल)

उठऽ माई तोहार तीन बेर चाह { चाय } लिअइली आ तिनु बेर सेरा गइल लेकिन उठलऽ ना !!

राहुल कुनमुना के चादर मुँह पर से हटा, तकिया के नीचे से मोबाइल निकाल, टाइम देखलें त भोरे के साढ़े सात बजत रहे । असोरा में ले घाम आ गइल रहे आ उनके बाबूजी रणधीर सिंह दुआरे पर अख़बार पढ़त रहलें । चऊकी के लगे, टेबुल पर चाह राखल रहे, आँख बंद कइले एकसुरिये पी के, फेरु राहुल चादर तान लेहले ।

दू भाई में छोट राहुल, तीन साल बिदेस कमइला के बाद गाँवे गइल रहलें, बहुत कुछ बदल गइल रहे, लेकिन सबसे ज्यादा बदलल रहे त ऊ अपनत्व के एहसास जवन पहिले रहे ।

ई सच्चाई राहुल के आँखी के सोझा लउकत रहे कि बदलाव ही प्रकृति के शाश्वत नियम होला । बासे दोस्त लो त रहे लेकिन उनका लो के लगे अपना मोबाइल से ही फुर्सत ना रहे कि क्रिकेट भा कुछो, साथे फेरु खेले लो । भलही ऊ हमेशा सोच सोच के, रोमांचित होखल करस कि जाइब त ऊ दोस्तन के संघे, पुरनका वक्त कसहू जिअब ।

चादर ओढ़ ई सभ सोचते रहलें कि उनके बाबूजी फेर कहलें - का हो सुनात नइखे का? उठबऽ?

रउवा त तनिको ना सोहाला लइकन के ख़ुशी, तीन साल पर त आइल बाड़े बबुआ, तनी सुतहू दी आराम से, देखी कवनो लइका जाले सन दोकानी त हरिअर मरीचा मंगवा देब, खतम हो गइल बा - राहुल के माई के आवाज अंदर निकसार से आइल ।

रुक माई हम ले आवतानी - राहुल आँख मींचत उठले ।

आ दोकानी के ओरिया चल गइले ।

रणधीर सिंह दुआरे अख़बार पढ़त पढ़त अभी ले तीन कप चाय पी चुकल रहलें, उनकर रोजे के नियम रहे, ब्रहम मुहूर्त में जाग के, नित्यकर्म से निवृत भइला के बाद, पूरा दुआरे खरहरा करस, तबले अंजोर हो जाव ।

अख़बार वाला दैनिक जागरण चहूँपा जास, आ दुआरे चउकी कुर्सी लगा 9-10 बजे लें पढ़स, ओह

दरम्यान चार पाँच हाली चाह बनाव के आर्डर घरे दिआ जाव ।

चाह पकडावत राहूल के माई कहली :- ए जी सुनी ना, छोडी तनी अख़बार, रउवा त देश दुनिया से ही फ़ुरसत ना मिले, बइठल बइठल दिन भर में दस बेर चाह पिअब आ दु चार लोग के बइठा के बतकूचन करत रहे के बा ।

रणधीर सिंह चस्मा निकालत कहले - जी गृहमंत्री जी फ़रमाई का कहे चाहतानी रउवा ।

रउवा त मजाके लागल रहेला, बबुआ काल्ह जाये आला बा त सोचनी ह, उहाँ भूजा मिलत होई कि ना, एहीसे दू किलो चाना आ मकई के भूजा भुजवा देती ।

ठीक बा, एक किलो घरवा वाला घीउवा भी ओकरा बैग में चुपके से ध दिहअ, जान जाई त ना ले जाई, आजकल के लइका हीरो हो गइल बाड़े सन, हमनी के टाइम में माई भर बैग सतुआ आ मरीचा ध देव, कहीं जाये के रहे त आ केतना सुवाद मिले - रणधीर सिंह अख़बार बंद करत कहले आ चाना किने चल गइले ।

दिन भागम भाग में ही बीत गइल, आधा रात तक राहूल आ उनके माई बतिअवलस लो फेर सभे सुते चल गइल ।

अगिला दिने ब्रहम मुहूर्त में खरहरा के आवाज से रणधीर सिंह के आँख खुलल त देखले कि आज राहूल एतना भोरे जाग के दुआर बहार रहल बाड़े । पूरा घर में चहल कदमी रहे, राहूल के माई अलगे परेशान रहली कि का बनाई, का खिआई । रौशनी { राहूल के छोट बहिन } सूजी के हलुआ बना के लिअइली कि भइया के पसंद ह आ आज रणधीर सिंह के भी चाह एको बेर पिये के मन ना भइल ।

पूरा परिवार एक जगे बइठ के बतिआवत रहे, राहूल कहले कि माई भइया से बात भइल ह, अगिला छुटी में आएब त रौशनी के बिआह करे के सोचत बानी ।

ना ना हम लइकी देखले बानी, अगिला साल तहार करब आ ओकरा बाद कन्यादान करब - रणधीर सिंह हँसत कहले ।

अच्छा माई एक घंटा में निकलब, बैग तइयार कर द तनी हम बाजारे से आवतानी एगो सामान ले के - राहूल कहले ।

आरे बबुआ खीर बनवले बानी, खा के जा कहीं - उनके माई उठत कहली ।

निकाल के राख़ माई, पाँच मिनट में आ गईनी - कह के मोटर सायकिल चालू कर राहुल चल देहले ।

गाडी चलावत रहले आ मन में तरह तरह के बात, इयाद आवत रहे, माई के दुलार, पापा के प्यार, बहिन के शरारत ई सभ एक साल बाद भेंटाई अब ।

रौशनिया के बिआह, कऊनो सरकारी नौकरी आला लइका से करब ।

तलही पीछे से तेज धक्का राहूल के गाडी में लागल आ कुछ दूर रोड पर घसीटात चल गइले । अभी कुछ सोंच पवते की सामने से आवत, उहे ट्रक फेरु इनके किचारत तेजी से भाग गइल, पूरा रोड पर खून बहे लागल आ राहूल के आँख, घर के तरफ जात रोड के ओर देखत आ माई के हँसत चेहरा इयाद करत, हमेशा हमेशा खातिर बंद हो गइल.....।

✍बब्लु सिंह,
ग्राम+पोस्ट = गभीरार
थाना = रघुनाथपुर ,
जिला = सिवान (बिहार)

तोर गजबे बनल दसतूर जिनगी

दर्द ना कहला से कहाई, गंगा-जमुना बढ़ियाई।
मनवाँ डूबी आ उतिराई, सगरो देखि सहल ना जाई।।
करबि कइसे हम एतना सबूर जिनगी।

नान्हे में टुवर हो गइनी, दर-दर के ठोकर हम खइनी।
जब सपना जिएके भइनी, दुनियाँदारी में बन्हइनीं।।
बानीं हमहूँ तोरे संगे मजबूर जिनगी।

आपन सगरो तोहके मानीं, तोहसे करबि का आनाकानी।
सब सुखवा संतोष के जानी, माया में ना भइल नादानी।
आखिरमें आइल बा जियलेके सहूर जिनगी।

आँसू अँचरा की कोरे से पोंछल गइल,
आँख में कुछ परल ई बहाना रहे।

ओठ पर एगो मुस्की लियावल गइल,
ना त$ हँसले के एगो जमाना रहे।

नैन से नैन के भाव पढिलें ऊ कबो,
भाव पढले में उनके तराना रहे।

दिन के कवनो पहर हमरी नाँवे रहल,
सगरो मौसम ग़ज़बे सुहाना रहे।

अब न मौसम-तराना-जमाना ऊ बा,
जेकरा पीछे भागत मन दिवाना रहे।

✍माया शर्मा
रा.उ.म.वि.नेहरुआ कला
पंचदेवरी, गोपालगंज,
बिहार-84144

रजऊ लड़िकाईं

इहे हऽ रजऊ लड़िकाई ,
सँगहा बा बस एगो-
केहाँ केहाँ रोआई
सातो मंजिल सातो सूर ,
सातो नदिया सातो तूर ,
एही से गुँजाई -एही से बजाई ,
एही से खेवाई -एही से बोआई,
बाबा महादेव -महादेवी माई,
इहे हऽ रजऊ ००
हलरावे- दुलरावे -
थकि-थकि जावें ,
कारन कवन कुछो ना बुझाये,
लरिका एतना काहे छरिआई ?
तात दशरथ हों चाहे नन्दबाबा !
अकिल सभके हेराइल-
लरिका कइसे मनाई ?
इहे हऽ रजऊ ००
जब जनली लड़िकन के नानी -
दिन सुते - रात जगावे ,
रो - रो के , माथे पर
आकाश उठावे ,
दुनियाँ के सब काम रुकवाये
(तब)फोन से –भोजपुरिया अकिल -धूम्र-थिरेपी सुझाईं
इहे हऽ रजऊ ००

✍मंजू श्री
भोजपुरी के पहिलकी महिला स्क्रिप्ट राइटर
निवासी -गोपालगंज , बिहार

सभ हमहीं हम

"देखऽ खदेरन ई तू ठीक नइखऽ करत। तहरा तनिको लाज हाया बाँचल होखो त अबहीं के अबहीं एजा से चल जा। का ना जइब तू? रहऽ, अब बुझाता कि तहार बेवस्था करे के पड़ी।" ई कह के रामचनर हुमच के एक लात मरले। बाकी ई का रामचनर अपनहीं खटिया पर

से भुँइया गिर के कोंहड़ा नियर छितरा गइले। एने रामचनर नीचे गिरले आ ओने उनकरा मय परिवार के हँसला के ठेकान ना रहे। ई देख के रामचनर के खीस उनकरा कपार पर चढ़ि गइल। घुरनात आ गर्जत ऊ अपना मेहरारू फुलमती से कहले कि "अब खड़ा होखे दाँत का चियारत बाड़ू? आके उठावऽ हमरा के लउकत नइखे का कि हम गिर गइल बानी? आ ऊ खदेरना उफरपरुआ कहाँ गइल? ससुरा के आज ना छोड़ेब" कहत रामचनर आपन दहिना हाथ से खटिया के पाटी ध के उठे के कोशिश करे लगले। ओने रामचनर के खिसियाइल देख के उनकरा परिवार के सभ लोग के मुँह पर चुप्पी पसर गइल, आ उनकर मेहरारू लुग्गा से आपन मुँह तोप के हँसी के छिपावत रामचनर के उठावे खातिर उनका लगे पहुँच गइली। उनकर(रामचनर के) बाँह ध के उठावत ऊ(फुलमती) कहली कि "रउआ सपनाइल रहनी ह का? आ हमार भाई अइसन कवन काम कइले बा जे ओकरा के रउवा सपना में मारत रहनी हँ?"कहि के फेर से आँख नचा के हँसे लगली। "ऐं का कहलु सपना,हम सपना देखत रहनी ह का? अरे ना हो, हम साँचहूँ कहतानी तहार भाई खदेरन साँचहूँ हमरा लगे बइठल रहल ह आ जब उनकरा के एक लात दिहनी हँ त भगलन ह।" रामचनर के ई बात सुन के, उनकर बड़का बेटा कहलस कि-"बाकि बाबूजी मामाजी त, छव महीना से आइले नइखीं। रउआ ई भोरे भोरे जरुर सपना देखत रहनी हँ।" रामचनर के ई बात

सुन के आ आपन बिछावन आ कोठरिया घर देख के मन में विश्वास भइल कि ऊ साँचहूँ सपनाइल रहले हन। अबहीं ऊ ई बात के अपना मन में पक्का करत रहले तले उनकर मेहरारू फौजी सन लेखा सवाल के एगो गोला फेर दाग दिहली-"आखिर हमार भाई अइसन कवन काम कर देले बा कि रउआ ओकरा के सपना में मारे परल रहनी हँ? तनीं हमहूँ त जानीं कि राउर कवन मार गाय भइस ऊ खोल के बेला दिहले बा जे रउआ राम फजीर के बेरा ओकरा पर गरमाइल बानी?" अब ई सभ सुन के त रामचनर के कटले खून ना बाऋचल रहे देह में। ऊ मेहरारु के ई सवाल सुन के खटिया पर से गिरला के बाद डाँड़ में लागल चोट के दरद भुला के ई सोंचे लगले कि अब का कहीं जे हमार मेहरारु के खींस बुताव, ना त आज दिन भर खाए पिए के ना भेटीं। रामचनर ई सोंचते रहले कि उनकरा दिमाग के ढिबरी में अँजोर भइल आ जेठ-बइसाख के सुरुज लेखान दमके लागल। रामचनर अपना मेहरारु के पोल्हावे आला बोली में कहले कि "अरे, रे तुहूँ नू का सपना के बात के फेरा में पड़ गइलू? ऐं अब छोट सार हउवन त का हम तनी हँसी करे से भी गइनी? अरे हमरा बाबूजी के पतोह ई सभ छोड़s आ सुनs आज बबुआ खातिर एगो देखनिहार के लेके तहार श्री श्री खदेरन जी महाराज भाई लेके आ रहल बाड़न। आ अब जा एजा से आ उनहन लोग के पनपियाव आ भोजन के सभ इंतजाम जुगतावs ऊ लोग नव बजे ले आ जइहें।" ई सुनके फुलमती के खुशी के ठेकाने ना रहे, बाकिर अपना खुशी के मन में छिपावत ऊ आपन सवाल पर अडिग रहत आँख में करोध के भाव ले आवत रामचनर के मुँह देखे लगली जइसे कहे के चाहत रहली कि त ए में हमरा भाई के मारे के कवन बात बा? उनका मन के बात बुझि के रामचनर कहले कि सुनs "अब तू जे बा से कि ढेर मत खिसिया। हम सपना में देखनी हँ कि तहार भाई हमरा के बाजार में भेंटा गइल हन। उनकरा संगे दू चार जना आउर रहलन हँ लोग। हमरा के देखते ऊ दूरे से चिचियाये के सुरु क दिहलनहन- ऐ पाहुन, ए पाहुन हेने आईं महाराज, हम हईं राउर दुलरूवा सार। चलs इहाँ ले त ठीक रहल बाकिर आगे जे ऊ कहले त हमार का तू सुनबू त तहरो माथ धनक जाई आ तुहूँ अपना भाई के बढनी से आरती उतारे लगबू।" ई कहके रामचनर अपना के बचावे के पर्यास कइले। ऊ आगा कहले कि सुनs"तहार ऊ भाई हमरा के अपना संघतिया लोग के सोझा कहतारे कि ऐ पाहुन जइसे हमार बाबूजी रउआ से हमरा बहिन के बियाह करा के रउरा घर के रोकल बियहुता खोलले ओसहीं हई हमार सार के सार अपना बेटी से रउआ बेटा के बियाह करके फेर से रउरा घर के लगन उठवावे के तइयार बाड़े। अब तूही बतावs का तहार भाई निमन कहले हन। एह बात पर केकर ना दिमाग सनक जाई? एही बात के सुन के हम उनकरा के कहनी हँ कि अब तू एजा से जइबs कि हम तहार बेवस्था करीं। आ जब ऊ ना गइले हन तs हम उनकरा के मारे खातिर हुमतनी हँ तले खटिया पर से नीचा गिर गइनी हँ। " रामचनर के ई बात सुन के फुलमती के मुँह पर हँसी आ करोध के मिलल जुलल भाव आ गइल आ ऊ रामचनर से कहली "त का भइल हमार भाई रउआ से तनी हँसी क देहलस तs, आखिर सभ हमहीं हम त बानीं"?

✍**राम प्रकाश तिवारी "ठेठ बिहारी"**

शिवरतन

अब तक ले रउआ पढ़नी कि शिवरतन गाँवे अइलें । गाँव बहुत बदल गइल रहे । उनकर लइका अपना बाप के कबो ना देखले रहे त चिहाइल रहे । तब देवकुमार बाबा अपना बेटा के परिचय अपना पोता से करवनी ।

अब पछिला अंक से आगे .....

शिवरतन सभका से मेल-जोल कइला के बाद घर में गइलें । छव बरिस पहिले जवना मेहरारू के छोड़ के ऊ गइल रहलें , ऊ उनका के देख के खुशी के मारे रोअत रहली । उनका मुँह से रोआई छोड़ के कुछ ना निकले । शिवरतन गइलें आ मेहरारू के चुप करवलें । उनका के समझवलें-बुझवलें । उनका से रमून के सब खिसा बतावस । मनमोहन के यारी बतावस । ऊँख से होखे नाला कमाई , कार-बार , अउरी सब कुछ मेहरारू के सुनवलें । ऊ सब सुन के कहली कि अब कहीं गइला के गरज नइखे । दुआर पर दू गो बैल बाड़े सन । खेत बड़ले बा । एहीजा जोतीं-बोयीं आ कमाई-खाईं । घरे रहब त सभका सोझा रहब । जब ओजा कमात रहनी ह त एजा काहे ना कमाएब? जवन मेहनत दोसरा खातिर होत रहे ऊ अपने खातिर करीं । शिवरतन के मेहरारू के ई सलाह पसंद आ गइल आ ऊ उनका के वचन दिहलें कि अब हाड़तुर के मेहनत होई अपने खेत में । हम जब दोसरा खातिर सोना उपजा सकतानी त अपनो खातिर उपजा लेब ।

शिवरतन मन लगा के मेहनत करे लगलें, अपना खेतन में । रोज भोरे उठ के ढेंकी चला के खेतन में पानी देस । समय पर खादर-पानी देस । खेत लहलहा उठले सन । फसल बरियार लागल । ऊ आपन खेती देख के खूब खुश भइलें । उनकर बाबूजी के मन अपना बेटा के मेहनत पर जुड़ा गइल रहे । फसल पकली सन । कटनी-पिटनी शुरू भइल । अनाज घरे आवे लागल । देवकुमार बाबा के बेरा एतना अनाज कबो ना आइल रहे । सभे शिवरतन के मेहनत पर वाह-वाह करत रहे ।

दिन सभकर मजा से बीतत रहे । पूरा परिवार एके मकान में रहत रहे । सब लोग शांति से । केहु के केहु से कवनो मलाल ना रहे । देवकुमार बाबा अपना नाती के संगे खुश रहनी । ओह घरी सभकर माटी के घर होत रहे आ सुतला रात में लोग के घर में चोर सेन्ह फोड़ देत रहले सन । शिवरतन के घर में सेन्ह लागल । सभे सुतल रहे । आवाज सुन के सब लोग जाग गइल । सभे एकदम चुप । देवकुमार बाबा ई देखे खातिर धीरे से बाहर निकलनी की चोर गिनती में कतना बाड़े सन । छव गो चोर आइल रहलें । सब के

हाथ में भाला-बरछी रहे । देवकुमार बाबा के ई देख के ताव आ गइल आ ऊहां के लपट के एगो चोर के ध लिहनी । अपना साथी के धराइल देख के बाकी चोर घबड़ा गइले सन आ बिना कुछु सोचले-बुझले चऊबे जी पर बरछी चला दिहले सन । ऊहाँ के ओहिजे गिर पड़नी । आवाज सुन के शिवरतन बहरी निकलले । तब तक चोर भाग गइल रहलें सन । चऊबे जी ओहिजे छटपटात रहनी । शिवरतन जसहीं उठावे गइले ऊहाँ के ओहिजे ठंडा पड़ गइनी । शिवरतन चिल्ला उठलें । आस-पड़ोस के लोग जुट गइल । सभे सोच आ डर में पड़ गइल कि चोर जान ले लिहले सन । शिवरतन के ठकुआ लाग गइल रहे । ऊ एकदम चुप हो गइल रहलें । उनका आँखी के सोझा उनकर बाप छटपटा के मर गइलें आ ऊ कुछ ना क पइलें । रात भर सभे जागल रह गइल । बिहान भइला सब तइयारी भइल अंतिम संस्कार करे खातिर । चऊबे जी के नाती बेर-बेर अपना बाप से पूछे कि बाबा काहे अबही ले सुतल बानी ? बाकी एह सवाल के जवाब केहु के लगे ना रहे । सभे एकदम चुप होके ओ लइका के खाली सवाल सुने । ओह छोट बच्चा के केहू कइसे बतावे कि जेकरा संगे ऊ रात के सुतल रहे ओकरा के राते केहू मार दिहलस ? ओ लइका के केहू कइसे बताई कि तहार बाबा अब कबो ना उठेब ?

शिवरतन के मेहरारू अपना लइका के अपना लगे बोलवली आ चुप करावत कहलीं , " बाबू हो , तहार बाबा अब हमनी के लगे ना रहेब । ऊहाँ के भगवान जी अपना घरे बोलवले बानी । अब ओहिजे रहब आ हमनी खातिर कबो ना उठब " । ऊ लइका अतना सुन के चुपचाप बहरी चली आइल आ अपना बाबा के मुँह निहारत कहलस कि भगवान जी के लगे से जल्दी चल आएब , ना त हमहूँ बोलावे खातिर आ जाएब । ई सुनके सभे रो दिहल आ ओने शिवरतन अर्थी अपना कान्ह पर उठावत अपना मुँह से कढ़वलें , राम नाम सत्य है

** समाप्त**

✍**प्रीतम पाण्डेय सांकृत छपरा , बिहार**

हॉलीवुड में एगो निर्देशक बाड़े- क्रिश्चियन मार्कले। २०१० में उनकर एगो बहुते कल्ट क्लासिक सिनेमा आइल रहे- "द क्लॉक"। सिनेमा कई मायने में अलग रहे। एऽशह में २४ घन्टा के टाइम फ्रेम में हजार से भी अधिका अलग-अलग सीन के संकलित कइ के देखावल गइल रहे। खास बात ई रहे कि हर सीन में "समय" के जिक्र रहे आ ऊ समय रीयल लाइफ के समय से एकदम मेल खात रहे। सिनेमा १२ बजे दिन में शुरू हो के ठीक ओही समय पर अगला दिने खतम होखे। हर सीन में अइसन माहौल बनावल गइल रहे कि पर्दा पर कलाकार के डायलॉग से ले के नेपथ्य में देखावल हर फ्रेम तक में कवनो ना कवनो समय के चर्चा रहे। विशालतम कैनवास पे बनल ई सिनेमा देखे वाला दर्शकन के मस्तिष्क पे अलग छाप छोड़त रहे। देखे वाला लोग अचंभित रहे कि आखिर अतना बड़ स्केल पर हतना अलग विषय वाला सिनेमा बनावल कइसे गइल?

मार्कले के निर्देशन शैली स्टीवन स्पीलबर्ग भा जेम्स कैमरून के तकनीकी कौशल के पंजरो ना सटत रहे तबो उनकर प्रभाव अइसन रहे कि केहू ओकरा के नकार ना सकत रहे। कारण एह फिलिम के बनावे में जवन अलग तरह के विचार इस्तेमाल भइल रहे ऊ आज तक केहू ना सोच पावल रहे। मनई के दिमाग प्रभावशाली कौशल के अपेक्षा कवनो शक्तिशाली विचार के अधिका समय तक याद रखेला। वास्तविकता भी

इहे बा कि भीड़ के संगे त सगरे दुनिया चलेलें, भीड़ से अलगा चले के हिम्मत जेकरा में बा दुनिया ओकरे के इयाद रखेले।

रचनात्मक सोच के जब बात होला त दूरदृष्टता, जागरूकता आ अपना विचार के अभिव्यक्ति के बात होला। एकरा विपरीत आदमी के कौशल उपयोगी त जरुर होला लेकिन आवश्यक ना होला। समुचित प्रशिक्षण आ पुनरावृत्ति से आदमी कवनो काम में कुशल बनेला लेकिन कुछ नया आ अलग करे के क्षमता जन्मजात संवेदनशीलता आ समझ से विकसित होखेला।

आम धारणा इहे बा कि एगो बड़ अउर सफल व्यवसाय के चलावे खातिर भांति-भांति के उच्चस्तरीय निपुणता के आवश्यकता होखेला। बैलेंस शीट, बिजनेस मैनेजमेंट, फाइनेंस आ एकाउंट्स के समझ आ ज्ञान के आज लोग जरुरी समझेला लेकिन जक्ष प्रश्न ई बा कि आज के जुग में सफल होखे खातिर का वास्तव में हतना कुल ज्ञान जरुरी बा?

सर रिचर्ड ब्रैनसन के ब्रिटेन के बहुते प्रतिष्ठित पूंजीपति के रूप में जानल जाला। इहा के मल्टी मिलियन पाउंड वर्जिन ग्रुप के संथापक हईं, जेकरा अंतर्गत ४०० छोट-बड़ कंपनी बाड़ी सऽ। एक बार एगो बोर्ड मीटिंग में उनकर गणित में कमजोरी सभके सामने उजागर हो गइल रहे। भइल ई कि एगो चर्चा में सर ब्रैनसन शुद्ध लाभ (Net Profit) आ सकल लाभ (Gross Profit) में कन्फ्यूज हो गइल रहले। अर्थशास्त्र के प्रारंभिक ज्ञान के अन्तर्गत आवेवाला एह कान्सेप्ट के एगो हतना बड़ बिजनेस टायकून के ना बुझाइल बहुत बड़ बात रहे। लेकिन ओहू से बड़ बात ई रहे कि सर ब्रैनसन ई सब ना जान के भी ६०००० कर्मचारियन के साम्राज्य खड़ा कइ देले रहलन। सर ब्रैनसन के ई कान्सेप्ट समझावे खातिर कंपनी के निदेशक साहब के व्हाइट-बोर्ड पर चित्रकारी करे के परल। पहिले ऊ एगो समुन्दर बनवले, फेर ओमे एगो जाल बनवले, फेर कई गो मछरी बनवले, कुछ जाल के भीतर आ कुछ जाल के बहरी। जाल के भीतर वाली मछरी शुद्ध लाभ रहलीं सऽ। एगो सामान्य चित्रकारी से सर ब्रैनसन के सब समझ में आ गइल रहें।

पूरा वृतांत के सारांश इहे बा कि कवनो जरुरी नइखे कि हर टेक्निकल विषय के जानकारी सभ केहू के होखे, जरुरी ई बा कि कइसे आदमी आपन मौजूदा ज्ञान के आपन बेहतरी खातिर इस्तेमाल कर सकेला। सर ब्रैनसन विस्तृत वित्तीय जटिलता के दांव-पेंच से बाहर निकल के आपन पूरा समय कंपनी के समग्र विकास पे केंद्रीत करत रहलन। उनुका किहाँ अर्थशास्त्र भा वित्तीय तामझाम के समाधान करे खातिर हार्वर्ड से लेके प्रिसंटन यूनिवर्सिटी तक के लोगन के जमावड़ा रहे। इहो हो सकेला कि सर ब्रैनसन के अर्थशास्त्र के नाम मात्र जानकारी हो लेकिन व्यवसाय कइसे कइल जाला ऐ में ऊ पूर्णतः सक्षम रहले। उनकर सबसे बड़ ताकत रहे कि उनका एह बात के जानकारी रहे कि उनुकर ग्राहक का चाहत बा आ ओह चीज के कइसे ओकरा तक पहुंचावे के बा। सही मायने में एगो बिजनेसमैन के ऐह ले बड़ आ महत्वपूर्ण अउरी कवनो ज्ञान नइखे।

आपन एगो बहुत पुरान संघतिया बाडे, उनकर जीवन के एके सपना रहल हा कि आपन एगो रेस्टोरेंट खोलल जाउ। उनकर सबसे बड़ समस्या रहल ह- तकनीकी कौशल आ विशेषज्ञता के कमी। बहुत सोचस लेकिन फेर डेरा के सहम जासु कि मैनेज कइसे कइल जाई। अब खाली खइला से प्रेम होखला से तऽ रेस्टोरेंट खुलि ना सकेला? एक बार हैदराबाद के एगो नामी गिरामी रेस्टोरेंट में बैठकी लागल रहे, पता चलल उहाँ "टेक अवे" के बड़ा चलन बा। माने ना कवनो किचन ना कवनो रसोइया, मेनू देख के जवन मन तवन आर्डर करऽ आ पैक खाना तहरा लगे पहुंच गइल। आइडिया बड़ा जँच गइल, सपना पूरा करे के मौका रहल। भाई बिना विशेषज्ञता के आपन रेस्टोरेंट खोललन आ सफलतापूर्वक चला भी रहल बाड़न। सब-कुछ में सक्षम रहल जरुरी नइखे, जहां जरुरत पड़े उहाँ काम "आउटसोर्स" कइ के भी बहुत कुछ कइल जा सकेला, साथे-साथे उलूल-जूलूल बढ़े वाला खर्चा के भी बचावल जा सकेला। जब केहू हद से अधिका तकनीकी कौशल पे ध्यान केंद्रित करेंश लागल त बुझ जाये के चाहीं कि

ओकरा लगे नया विचार भा परिकल्पना के कमी हो गइल बा। जे वास्तव में रचनात्मक रहेला ऊ कौशल परीक्षण में ना बल्कि अपना विषय के समझे आ ओकरा से संबंधित नया विचार के क्रियान्वित करे में ज्यादा ध्यान देबे ला।

सही सवाल पूछला के भी बहुत महत्व होला। कवनो सवाल "कैसे" भा "क्यों" दूनो तरीका से पूछल जा सकेला। अंतर इहे रहेला कि जे यांत्रिक दिमाग वाला रहेला ऊ सही तकनीक के जाने खातिर "कैसे ?" के प्रयोग करेला आ जे सही मायने में जिज्ञासु होखेला ऊ "क्यों?" शब्द के प्रयोग से समूचा परिकल्पना के जाने के प्रयास करेला।

Airbnb कंपनी जब २००८ में शुरू भइल रहे ओह समय होटल इंडस्ट्री के नामी कंपनी हयात ग्रुप और हिल्टन ग्रुप के मार्केट कैपिटलाइजेशन क्रमशः ६ बिलियन डॉलर और २६ बिलियन डॉलर रहे। आज २०१९ में Airbnb के मूल्यांकन ३५ बिलियन डॉलर बा जबकि हयात ग्रुप और हिल्टन ग्रुप के मूल्यांकन मात्र ७.५ बिलियन डॉलर और २४ बिलियन डॉलर बा। कम समय में हतना सफलता के मूल कारण कुछ नया आ सबसे अलग सोच बा। जहाँ पूरा होटल इंडस्ट्री प्रापर्टी और रियल एस्टेट बनावत खड़ा भइल, Airbnb बिना कवनो आपन प्रापर्टी के विश्व के सबसे बड़ एकोमोडेशन प्रोवाइडर बन चुकल बिया। उदाहरण असंख्य बाड़े जहाँ खाली अलग सोच से लोग सफलता के नया-नया कीर्तिमान स्थापित कइले बा। फेसबुक आज बिना कवनो आपन विषय वस्तु के विश्व के सबसे बड़ मीडिया हाउस बन चुकल बा। दुनिया के सबसे बड़हन टैक्सी कंपनी उबर के लगे आपन कवनो गाड़ी नइखे। विश्व के सबसे बड़ अॉनलाइन रिटेलर अली बाबा के लगे आपन कवनो समान नइखे। भविष्य केवल ओही लोग के बा जे समय से आगे आ कुछ अलग सोच सकेला। आदमी के अंदर के लड़िकाई ही रचनात्मक होला, जवानी ना। लड़िकाई उन्मुक्त होला, आजाद होला। ओकरा ई ना मालूम होखेला कि का ना करें के चाही, आ का ना हो सकेला। जवान आदमी खाली उहे काम कइल चाहेला जवन ओकरा खातिर अतीत में आसान रहल बा। जवन काम में आदमी असफल भइल रहेला ओकरा से फरके रहल चाहेला। वास्तविकता ई बा कि हर आदमी के अपना अंदर दबल लड़िकाईं के जिया के रखे के चाहीं। कवनो काम के अइसे करे के चाहीं जइसे पहिला हाली कर रहल होखें। लइकन खातिर हर काम पहिलके हाली होखेला। स्कूल हमनीं के पहिले पढ़ावेला आ फेर टेस्ट लेबेला जबकि जिनिगी पहिले टेस्ट लेबेले, पढ़ेवाला आदमी फेर अपने पढ़ आ सीख लेबेला। सारांश इहे बा कि सीखे खातिर जिनिगी ले नीमन अउरी कवनो दोसर तरीका नइखे।

✍त्रिपुरारी पांडेय,
फ्लैट नं: ४०३, बी-विंग,
गुलमोहर रिनाइसेंश, वाघोली, पुणे।

योग अऊर योगी -3

नमस्कार ,परनाम योग अउर योगी भाग 2 में रउरा सभे नियम का बारे में जननी लोगिन । अब हम रउरा सभें के योग के वास्तविक सफर का ओरिया ले के चल रहल बानी। एह भाग में रउरा सभें प्राणायाम का बारे में पढ़े के मिली।

प्राणायाम का ह, अउर ई कइला से कवन फायदा मिलेला ?

योग साहित्य में प्राणायाम के ध्यान के एकाग्र करे में सहायक मानल गईल बा आ इहे एकर सबसे मुख्य आ अहम कार्य ह। मन आ प्राण के बहुत गहिरा सम्बन्ध ह। प्राणायाम से चित्त के शुद्धि होखेला, जवना से मन के एकाग्र करे में सहायता मिलेला। हमनी के आपन मन स्थिर करे आ योग के सफर प्रारम्भ करे से पहिले दु गो चीज़ पर विजय प्राप्त करे के चाहीं तबे योग के वास्तविक लक्ष्य प्राप्त हो सकेला ।

(1)वासना

(2) प्राण

एहमे से यदि पहिला पर विजय प्राप्त कई लिहनी त दोसरका पर स्वतः विजय हासिल हो जाई।अधिकांश लोग त के सोचेला की प्राणायाम साँस लेबे आ छोड़े के ही प्रक्रिया के कहाला, लेकिन प्राणायाम के अर्थ होखेला एह साँस के प्रक्रिया पर नियंत्रण बनावल,संयम राखल।अर्थात,प्राण=मुख्य ऊर्जा, जीवन तत्व । आयाम= नियन्त्रण ।

(प्राण +आयाम=प्राणायाम) मतलब की अपना प्राण पर, अपना साँस पर नियंत्रण राखल ही प्राणायाम भईल।यदि प्राणायाम के नियमित अभ्यास करत करत रउरा यदि अपना प्राण वायु आ अपान वायु पर टिका लेहम त रउरा अपना इन्द्री पर भी विजय हासिल हो जाई।

प्राणायाम सभका खातिर जरूरी होखेला आ सभके करे के चाहीं काहेसेकि जइसे यदि कवनो गाँव मे हरमेसा एके गो हवा चलत रही त ऊहां कभी भी गन्दगी आ बेमारी से मुक्ति ना मिल पाई, काहेसेकि उ गली-खुंच्चा में के कूड़ा करकट ना उधिया के ले जाई। वइसहीं यदि हमनी के शरीर मे भी सामान्य वायु से हट के शुद्ध वायु ना समाई त हमनियो का देह में आलस आ अनेक प्रकार करोगे बलाए समाइल रही।

प्रणायामातः पुष्टिगार्त्रस्य बुद्धिरतेजो यशोबालम।
प्रवर्धन्ते मनुषयस्य तस्मात प्रणायाममाचरेत।।

अर्थात की प्राणायाम कइला से शरीर के अङ्ग मजबूत , बुद्धि तीव्र होखेला आ यश-बल भी बढ़ेला , एहीसे प्राणायाम जरूर करे के चाहीं। प्राण ही शरीर का सब तरह के किरिया के संचालन करेला। शरीर का भीतर अलग अलग जगहा आ कार्य के हिसाब से एकरा के अलग अलग नाम से जानल जायेला जेहके पंच-प्राण कहल जाला

1) प्राण
2) अपान
3) उदान
4) समान
5) व्यान

प्राण

साँस लेबे का किरिया में जीवन साँस का संघे सघे वायु भीतर समाएला उहे प्राण कहाला। ई हमनी के कार्यशीलता आ शक्ति बढावेला, प्राण के जगहा हमनी के हृदय में होखेला।

अपान

सांस का साथे साथे जवन हवा नाक, मुह चाहे गुदाद्वार से बाहरा निकलेला उ अपान कहाला, एहसे आँत का बल मिलेला आ मूत्रएंद्रीय के क्रिया के बनवले रहेला आ ई नाभि प्रदेश का नीचा होला।

उदान

जवन वायु कंठ का ऊपर का अंग पर नियंत्रण राखेला उदान कहाला , ई आँख, नाक, कान आ दिमाग आदि के कार्यक्षमता आ शक्ति के बढावेला

समान

जवन वायु सभ प्रकार के वायु के शरीर का भीतर चलावेला आ सम्भरले रहेला समान वायु कहाला। ई यकृत, आँत, क्लोम जठराग्नि आ पेट मे रसस्राव के नियंत्रित राखे में मददगार होखेला, ई छाती आ नाभि का बीच मे होखेला।

व्यान

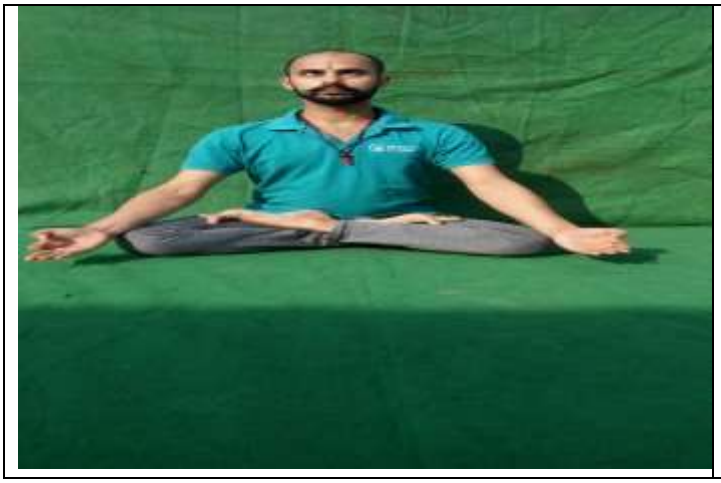

ई समूचा शरीर मे विराजमान रहेला, एकर मुख्य रूप से काम ह जतजराग्नि आ चयापचय क्रिया सुचारू रूप से संचालन कईल। जइसे-

1) देवदत्त- छींकल,

2) नाग- पलक झपकावल

3) कृकल - जम्हाई लिहल

4) कूर्म- खजुआवल

5) धनंजय- हिचकी लिहल ,आदि

शुरुआत में निरोग आ निमन लोग का भी प्राणायाम करत समय भीतरी रोग जइसे- हगुअइनी, ठंडा-गरम लागल,खांसी , छींक आइल जइसन होखे लागेला जवन निरन्तर अभ्यास कइला से हरमेसा खातिर बिला जाला। कुछ सरल प्राणायाम बा जइसे -पादमासन,सिद्धासन चाहे वज्रासन में सीधा बईठ के दुनु हाथ ज्ञानमुद्रा में ठेहुना पर धके धीरे धीरे लमहर सांस भर के एक ताल में ॐ के उच्चारण कईल । एकरा से रक्त प्रवाह आ हृदय के धड़कन साधारन रूप से क्रियाशील रहेला।

नाडीशोधन प्राणायाम

पद्मासन में बईठ के चिनमुद्रा चाहे ज्ञानमुद्रा में हाथ धर के आंख मूंद के दहिना तर्जनी आ मध्यमा अँगुरी के भूमध्य में राखीं। अनामिका आ कनिष्ठा अँगुरी के किंचित मोड़ के बांवा नासिका द्वार(इड़ा) का लगे राखीं, आ दहिना अंगूठा से दहिना नासिका द्वार(पिंगला)के बंद कर के पूरा सांस लिही आ छोड़ी । ओकरा बाद इड़ा के अनामिका से बंद कइके , पिंगला से पूरा सं भरीं आ छोड़ी, एह तरह से 6-6 बार करीं।

अनुलोम -विलोम प्राणायाम

नाड़ीशोधन प्राणायाम लगातार दु सप्ताह ले कइला का बाद ही अनुलोम विलोम प्राणायाम शुरू करे के चाही।

एहमे नाड़ीशोधन जइसन ही दहिना अंगूठा से पिंगला के बंद कई के इड़ा से सांस लिहिं आ 1-2-3-4-5 तक गिनला पर से अनामिका अँगुरी से इड़ा के बंद कइके पिंगला से सांस बाहरा निकाल दिहीं। फेरु पिंगला से सांस भर के इड़ा से निकालीं, फेर इड़ा से सांस भर के पिंगला से छोड़ी ,असहिं शुरुआत में कम से कम 8-10 बार आ निरन्तर अभ्यास का बाद एकरा के 15-20 चक्र पूरा करे के चाहीं। अनुलोम विलोम प्राणायाम से शरीर के सभ सूक्ष्म कीटाणु नष्ट होखेला आ रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जायेला आ शरीर के समूचा अंग में प्राण वायु के प्रवाह सुचारू रूप से होखेला।

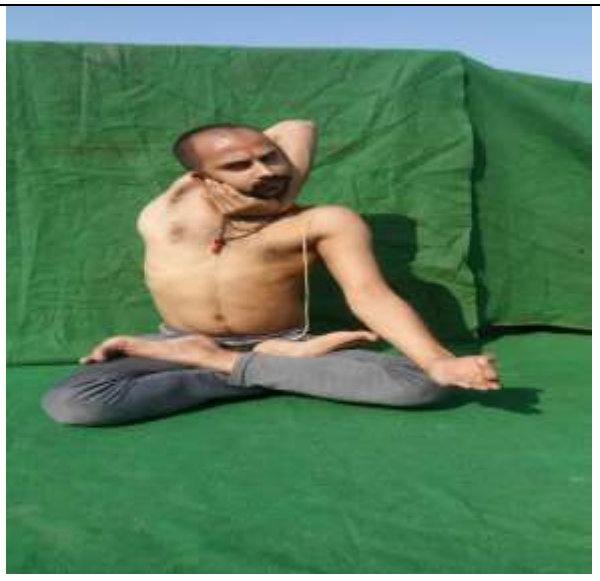

कपाल भाती प्राणायाम

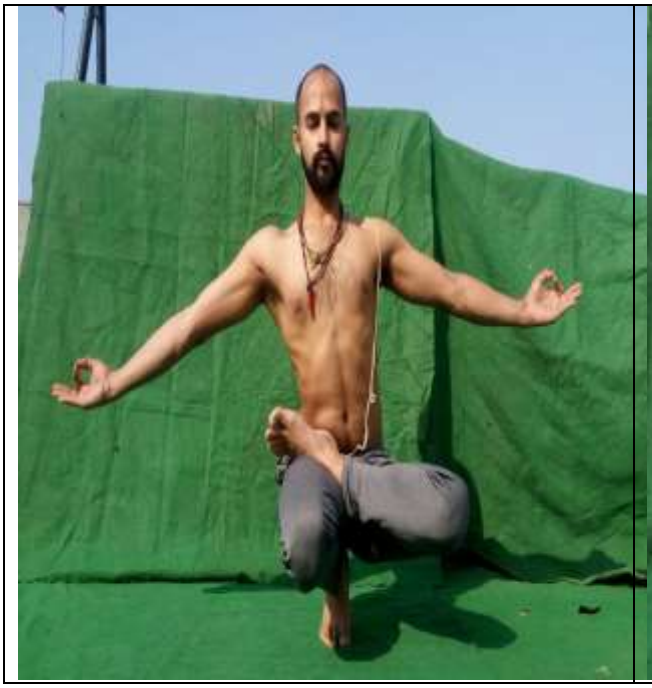

अनुलोम विलोम का बाद पद्मासन में बइठ के दुनु हाथ ध्यान मुद्रा में धइके ध्यान अपना मस्तिष्क पर बीचों बीच (आज्ञा चक्र) पर टिका के , दुनु नाक से लमहर सांस भर के ओह सांस के (बिना मुह खोलले)रुकावट का साथे बाहरा पड़े निकाले के बा। एहमे सांस जब जब बाहरा आई, पेट तब तब भीतर पिचूक जाइ । आकर प्रयास भी शुरुआत में 8-10 चक्र आ फेरु धीरे धीरे 15-20 चक्र तक करे के चाहीं। कपाल भाती से मधुमेह , पेट के चर्बी आ पेट से संबंधित अन्य बहुत प्रकार के बेमारी से राहत मिलेला।

शुरुआत में इहे प्राणायाम सभकरा करे के चाहीं बाकी धीरे धीरे अउर भी प्राणायाम होला उ आवश्यकता अनुसार शुरू करे के चाहीं। जवना सब का बारे में अगिला भाग में जानकारी रउरा सब तक हम चहूँपायेब , तबतक ले योगगुरु शशि प्रकाश तिवारी के आपन शुभाशीष आ प्रेम असहिं देत रहीं लोगिन आ रउरा लोग से एहि आस का साथे फेरु से प्रणाम (योग से जुड़ल कवनो प्रकार के जानकारी प्राप्त करे खातिर हमरा फ़ोन पर 9599114308 पर चाहे हमके shashi.pfs@gmail.com पर ईमेल कई के जानकारी हासिल चाहे आपन राय दिहल जा सकेला।

प्रणाम

जय श्री राम।

✍योग गुरु शशि

ग़ाज़ियाबाद, उत्तरप्रदेश

अपनापन

पिछला भाग से आगे.....

कुछ अनिवारित कारन से श्री शशिरंजन शुक्ल 'सेतु' जी के लिखल धारावाहिक कहानी 'अपनापन' के अगिला किस्त एह अंक में ना आ पाइल ह, जेकरा खातिर सभ पाठक लोग से छमा याचना।

(सिरिजन जमात)

(अंतिम भाग अगले अंक में)

✍शशिरंजन शुक्ल 'सेतु'

राउर बात

✍भोजपुरी में जवन मिठास बा, ओकर लोहा दुनिया मानेले, , , हमनी के निराश होखे के जरूरत नइखे बल्कि हमनिके खाली अपना भाषा मे बात करे में गर्व महसूस करीजा और इहे पढ़ी इस्तेमाल भी करी त बहुते प्रचार के साथ एकर मिठास के भी सबलोगन के एहसास होई। सिरिजन के यह अंक के पढ़के आज ई बात पर ध्यान गइल ह की ई भाषा संरक्षण खातिर सरकार के तरफ से कोनो कदम भले ना उठल....पर देर कबो न होला, जब जागो तबही सबेरा...छोटा छोटा प्रयास करत रहे के चाही । बाकी भाई आप लोग जैसन बड़ी सख्शियत के आगे हम साधारण बस आपन नज़रिया रखनी, कुछ गलती लिखा गइल हो तो क्षमा - ऋषि देवी, लखनऊ, उत्तरप्रदेश

✍हमनीके भाषा, हमनीके संस्कृति क उद्धार हमनीके ही हाथों में बा रे बाबा । दोसर ना आई ई काम करे, सिरिजन के बधाई बा एह मीठ भासा के बचावे खातिर प्रयासरत रहला खातिर । लागल रहीं सभे । हम एह भासा के बोलवईया त ना हई लेकिन एकर मिठास हमके प्रेरित कइलस सीखे बोले खातिर - मणि मित्तल, नोएडा, उत्तरप्रदेश

✍करेजा काढ़ लिहलस शशि रंजन शुक्ल सेतु जी के रचना 'अपनापन' , अइसन सिरिजन अनवरत जारी रहे त हो सकेला लोग फेर से जाग जाव, ना त नाव डूबले बूझी, आजु के परिप्रेक्ष्य में सर्वोत्तम रचना - अरबिंद मिश्रा, अम्बाला, पंजाब

✍सिरिजन (जनवरी-मार्च 2019) का अंक में कहानी 'अपनापन' के अगिला भाग छपल बा। सिरिजन परिवार आ सम्पादक मण्डल के हिरदय से आभार । पतिरका के तिसरको अंक में सब रचना एक से बढ़ि के एक बा। पतिरका के एह रूप में हमनी का सोझा ले आवे वाला सब भोजपुरिया सेवाभावी सवांग आ 'सिरिजन' के हिरदय से बधाई...आभार- केशव मोहन गुप्ता, हापुड़, उत्तरप्रदेश

✍सिरिजन के तिसरका अंक के कवनो रचना काटे जोग नइखे - सविता उपाध्याय, जयपुर, राजस्थान

✍फेशबुक के माध्यम से हमके 'सिरजन' पतिरका पढ़े के मिलल, निमन लागल, आई सभे सिरिजन टीम के हौसला बढ़ावल जाय - केशव मोहन गुप्ता, हापुड़, उत्तरप्रदेश

✍ग्राम्य जीवन से लुप्त होत गैरो से अपनापन वाला स्वभाव पर सुन्दर ताना बाना बिनाइल बा शशीरंजन शुक्ल सेतुए जी के कहनी 'अपनापन' में । इ गुण समाज से तेजी से लुप्त हो रहल बा । शानदार कहानी बा । बधाई । - मनोज गुप्ता, डुमरांव

✍बहुते आनंद आइल 'सिरिजन' के (जनवरी-मार्च १९) के अंक के पढ़ी के ! आपन माटी में अइसहीं रसभरल छींटा मारत रहिजा, हमनी जइसन पाठक के मिट्टी के सोंधी सुगन्ध का आनंद मिलत रहे, रोजी रोजगार के चलते देश छुटी गइल, सुदूर देश के माटी पर आपन बोली भासा लउक जाय त का कहे के - अखिलेश प्रताप सिंह, बोस्टन, यूनाइटेड इस्टेट

✍अपना गावं जवार के भासा के डिजिटल मीडिया प देखि के मन मयूर खुशी के मारे नाच उठल । धन्यवाद बा सिरिजन टीम के एह माध्यम के चुनला खातिर । निरंतर भविष्य में भी ई हमनीके पढ़े के मिली इहे आशा बा । धन्यवाद फेसबुक आ धन्यवाद जुकर बर्ग जेकरा चलते हमरा के सिरिजन भेटाइल । हम अपना बाबूजी खातिर एकरा के प्रिंट क के देहनी । उनकरा चेहरा पर खुशी देखि के अपना के ईमेल करे के ना रोक पवनी । एक बेर फिर पूरा टीम के धन्यवाद - कौशल किशोर उपाध्याय, सिरोही, राजस्थान

✍वाह!!! 'अपनापन' के पहिला अंक से पढतबानी तबो आँख भरे भरे हो आइल रहे! आज त आंख डबडबा उठल ह!बड़ी मार्मिक कहानी बा भईया!आज़कल अइसन त्याग भाव के बड़ी कमी हो गइल बा। गंवई सामाजिक समरसता के चरम रूप उकेर देता ई कहानी। अगिला अंक के व्यग्रता से इंतजार रही – सर्वेश तिवारी, गोरखपुर

कलमकार से गोहार

निहोरा

जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया

माईभाषा के सम्बन्ध जनम देवे वाली माई आ मातृभूमि से बा, माईभाषा त अथाह समुद्र बा, ओके समझल बहुत आसान काम नइखे । भोजपुरिया क्षेत्र के लोग बर्तमान में रोजी रोटी कमाए खातिर आ अपना भविष्य के सइहारे खाति अपनी माँटी आ अपनी भाषा से दूर होत चल जाता, ओहि दूरी के कम करे के प्रयास ह "सिरिजन" । जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया, आपन माँटी -आपन थाती के बचावे में प्रयासरत बिया इहे प्रयास के एगो कड़ी बा "सिरिजन" । भोजपुरी भाषा के लिखे आ पढ़े के प्रेरित करे खातिर एह ई-पत्रिका के नेंव रखाइल । "सिरिजन" पत्रिका रउवा सभे के बा, हर भोजपुरी बोले वाला के बा आ ओकरे खातिर बा जेकरा हियरा में माईभासा बसल बिया । ई रउरे पत्रिका ह, उठाईं लेखनी, जवन रउरा मन में बा लिख डाली, ऊ कवनो बिध होखे कविता, कहानी, लेख, संस्मरण, भा गीत गजल, हाइकू, ब्यंग्य आ भेज दिहीं "सिरिजन" के ।

रचना भेजे के पहिले कुछ जरूरी तत्वन प धियान देवे के निहोरा बा :

1. **आपन मौलिक रचना यूनिकोड/कृतिदेव/मंगल फॉण्ट में ही टाइप क के भेजीं । फोटो भा पाण्डुलिपि स्वीकार ना कइल जाई ।**
2. **रचना भेजे से पहिले कम से कम एक बार जरूर पढ़ीं, रचना के शीर्षक, राउर रचना कवन बिधा के ह जइसे बतकही, आलेख, संस्मरण, कहानी आदि क उल्लेख जरूर करीं । कौमा, हलन्त, पूर्णविराम प बिशेष धियान दीं। लाइन के समाप्ति प डॉट के जगहा पूर्णविराम राखीं ।**
3. **एकर बिशेष धियान राखीं कि रउरी रचना से केहू के धार्मिक, समाजिक आ ब्यक्तिगत भावना के ठेस ना पहुंचो । असंसदीय, फूहड़ भाषा के प्रयोग परतोख में भी ना दियाव, एकर बिशेष धियान देवे के निहोरा बा ।**
4. **राउर भेजल रचना सम्पादक मंडल के द्वारा स्वीकृत हो जा तिया त ओकर सूचना मेल भा मैसेज से दियाई ।**
5. **आपन एगो छोट फोटो, परिचय जइसे नाम, मूल निवास, बर्तमान निवास, पेशा, आपन प्रकाशित रचना भा किताबन के बारे यदि कवनो होखे त बिवरण जरूर भेजीं।**
6. **रचना भा कवनो सुझाव अगर होखे त रउवा ईमेल - sirijanbhojpuri@gmail.com प जरूर भेजी ।**
7. **रउरा हाथ के खिंचल प्राकृतिक, ग्रामीण जीवन, रीति- रिवाज के फोटो भेज सकतानी। धियान राखीं ऊ ब्यक्तिगत ना होखे ।**

जय भोजपुरी जय भोजपुरिया

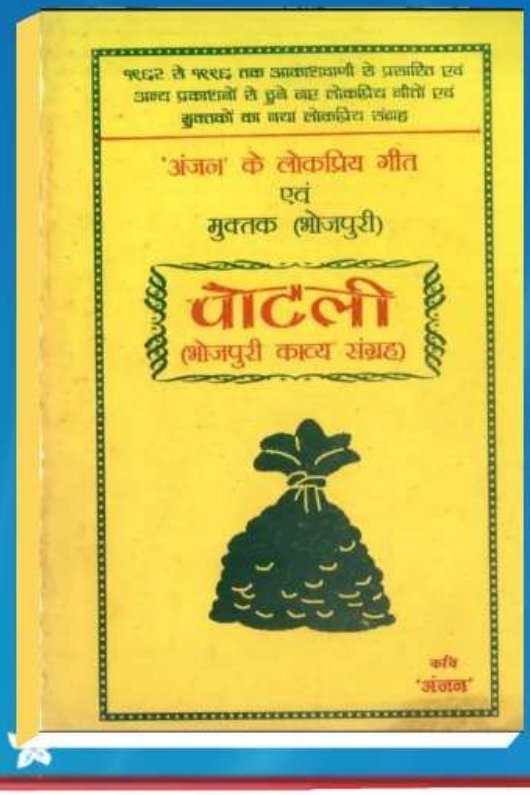

भोजपुरी साहित्य-संस्कृति के प्रचार-प्रसार, संरक्षण आ संवर्धन में भोजपुरी मानस मंडल के अमिट हस्ताक्षर राधा मोहन चौबे 'अंजन जी' के अतुलनीय योगदान बा।

रउरा द्वारा भोजपुरी किताब किन के पढ़ल चाहे केहू के उपहार में देहल, भोजपुरी खातिर बड़हन योगदान रही।

• • •

किताब खातिर सम्पर्क करीं :
श्री भावेश कुमार
मोबाइल नं.- 9939516626
ईमेल - bhaweshanjan@gmail.com